सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 77, नई दिल्ली, मंगलवार 27 मई 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

सहनशील होना अच्छी बात है... पर अन्याय का विरोध करना उससे भी उत्तम है...!!!

04 वीर सावरकर: विचारों का महायोद्धा, स्वतंत्रता की लौ, हिंदुत्व का स्वर

06 12 के बाद क्या करें? यहां आपका 2025 कैरियर मार्गदर्शन है

08 राज्य को मिलने वाले आवास अनुदान में 3485 करोड़ रुपये की कटौती

राजधानी में अब अवैध ई-रिक्शा चार्जिंग स्टेशनों पर दिल्ली पुलिस करेगी कार्रवाई, मासूमों की मौत पर लिया निर्णय

संजय बाटला

दिल्ली में अवैध ई-रिक्शा चार्जिंग स्टेशनों पर कार्रवाई होगी। सुरक्षा जोखिम के साथ सालाना 120 करोड़ का नुकसान हो रहा है। शाहदरा में चार्जिंग स्टेशन में आग लगने से दो किशोरों की मौत पर यह निर्णय लिया गया। सभी जिलों से अवैध स्टेशनों का डेटा इकट्ठा करने को कहा है।

नईदिल्ली: राष्ट्रीय राजधानी में अवैध ई-रिक्शा चार्जिंग स्टेशनों के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी, जो सुरक्षा जोखिम पैदा करने के अलावा सालाना लगभग 120 करोड़ रुपये का नुकसान पहुंचाते हैं।

यह कार्रवाई दिल्ली के शाहदरा के राम नगर इलाके में एक ई-रिक्शा चार्जिंग और पार्किंग स्टेशन में लगी आग में दो किशोरों की जलकर मौत और चार लोगों के घायल होने के एक दिन बाद हुई है।

दिल्ली पुलिस के वरिष्ठ पुलिस अधिकारी के मुताबिक, पिछले महीने शहर में ऐसी कई घटनाएं देखने को मिली हैं। ऐसे अवैध ई-रिक्शा चार्जिंग स्टेशन लोगों की जान के लिए खतरा बन रहे हैं।

18 मई को भी अवैध चार्जिंग स्टेशन में आग लगने से हुई थी मौत

सभी अधिकारियों से अपने जिलों में अवैध चार्जिंग स्टेशनों का डेटा एकत्र करने और उनके खिलाफ कार्रवाई योजना बनाने को कहा है।

इसी तरह की एक घटना 18 मई को भी सामने आई थी, जब शाहदरा में एक अवैध चार्जिंग स्टेशन पर चार्ज हो रहे ई-रिक्शा में आग लगने से दो बच्चों समेत एक परिवार के छह लोग झुलस गए थे।

सूत्रों के मुताबिक, शहर की बिजली वितरण कंपनियां अवैध ई-रिक्शा चार्जिंग सुविधाओं के खतरे से जूझ रही हैं। आधिकारिक अनुमानों के अनुसार, राष्ट्रीय राजधानी में लगभग 1.2 लाख पंजीकृत ई-रिक्शा सक्रिय हैं।

बिजली निगम ने दिए हैं चार हजार चार्जिंग स्टेशन कनेक्शन

हालांकि, कई ई-रिक्शा वैध पंजीकरण के बिना भी सड़कों पर चलते हैं, जिससे भीड़भाड़ होती है और सुरक्षा जोखिम पैदा होता है।

सूत्र के मुताबिक, डिस्कॉम और बिजली विभाग ने ई-रिक्शा की चार्जिंग में बिजली चोरी को रोकने और सुरक्षा मुद्दों को हल करने की कोशिश की है।

व्यक्तियों और ऑपरेटरों को लगभग चार हजार कानूनी ई-रिक्शा चार्जिंग कनेक्शन दिए गए हैं। प्रत्येक कनेक्शन कई ई-रिक्शा चार्ज करने में सक्षम है।

60 प्रतिशत से अधिक ई-रिक्शा चोरी की बिजली से हो रहे चार्ज

सूत्र के मुताबिक, अवैध चार्जिंग और घटिया बैटरी सुरक्षा के लिए गंभीर खतरा पैदा करती हैं, जिससे आग लगने की घटनाएं हो रही हैं। उन्होंने कहा कि यह एक नई तरह की बिजली चोरी है।

अनुमान के मुताबिक, 60 प्रतिशत से अधिक ई-रिक्शा बिजली चोरी में शामिल हैं, जिसके परिणामस्वरूप शहर भर में 15-20 मेगावाट का नुकसान होता है, जो सालाना लगभग 120 करोड़ रुपये का नुकसान होता है।

दिल्ली में बिजली चोरी वाले इलाकों पर पैनी नजर

पुलिस और डिस्कॉम के अनुसार, उन्होंने शहर में कई ऐसे इलाकों की पहचान की है, जहां ई-रिक्शा द्वारा बिजली चोरी अधिक होती है।

जिनमें संगम विहार, जामिया, बटला हाउस, तुगलकाबाद, सराय काले खां, मादीपुर, नांगलोई, मटियाला, मंडावली, मिंटो रोड, सीलमपुर, यमुना विहार, शास्त्री पार्क, करावल नगर, मुस्तफाबाद, नंद नगरी, करोल बाग, सिविल लाइंस, मुखर्जी नगर, रोहिणी, बवाना और नरेला शामिल हैं।

गोरखपुर से दिल्ली जा रही स्लीपर बस अनियंत्रित होकर पलटी, 21 लोग बुरी तरह घायल; अस्पताल में कराया गया भर्ती

गोरखपुर से दिल्ली जा रही स्लीपर बस संतकबीरनगर जिले के बूधा के पास अनियंत्रित होकर पलट गई। इस दौरान बस में सवार 21 लोग बुरी तरह से घायल हो गए। इन घायलों को एंबुलेंस के जरिए जिला अस्पताल भेजा गया है।

गोरखपुर। गोरखपुर से दिल्ली जा रही स्लीपर बस अनियंत्रित होकर कोतवाली खलीलाबाद क्षेत्र के बूधा के पास पलट गई। इस दौरान बस में सवार 21 लोग बुरी तरह से घायल हो गए। इन घायलों को एंबुलेंस के जरिए जिला अस्पताल भेजा गया है। वहां उनका उपचार चल रहा है। समाचार लिखे जाने तक किसी जनहानि की सूचना नहीं है। गोरखपुर से बिहार नंबर की एक स्लीपर बस दिल्ली के लिए जा रही थी। साढ़े नौ बजे के करीब यह बस जब कोतवाली खलीलाबाद क्षेत्र के बूधा के पास पहुंची। इसी दौरान उसका आगे का टायर फट गया। स्पीड तेज होने के चलते बस नियंत्रित नहीं हो पाई और कई पलटा खाते हुए लखनऊ की तरफ से आ रही लेन में पलटते हुए गड्ढे में चली गई। इससे बस में सवार कुल 21 लोग बुरी तरह से घायल हो गए। इस घटना की जानकारी मिलने के बाद मुकामी पुलिस मौके पर पहुंची।

क्षेत्राधिकारी अजित चौहान तथा अपर पुलिस अधीक्षक सुशील कुमार सिंह मौके पर पहुंचे। अधिकारियों ने तुरन्त मौके पर पांच एंबुलेंस की व्यवस्था करके घायलों को जिला अस्पताल पहुंचवाया। यही नहीं मौके पर राजमार्ग को बहाल कराया। घायलों की हालत खतरे से बाहर बताई जाती है। अपर पुलिस अधीक्षक ने बताया कि घायलों को उचित इलाज की व्यवस्था करने के लिए निर्देश दे दिए गए हैं। घायल गोरखपुर, देवरिया व कुशीनगर जनपद के निवासी हैं।

घायल लोग

विनोद कुमार, निवासी बेलीपार, जनपद गोरखपुर

सर्वेन्द्र कुमार, आंचल कुमारी, अभिमन्यू, कनइल, बेलीपार, जनपद गोरखपुर, लक्ष्मण साहनी, जगई देहात, तरयासुजान, कुशीनगर

संजय, उनवल, खजनी, गोरखपुर, सागर तिवारी, निवासी दिल्ली

दीपक कुमार, धर्मपुर, हाटा, कुशीनगर, दीपा जायसवाल, रजनीश, राहुल, दिव्या, रीता, भिसवा बाजार, हाटा, कुशीनगर

उषा, यशवंत, रेनू देवी, कुशीनगर, प्रेम प्रसाद, बनकटा, कप्तानगंज, कुशीनगर, नेहा, अंकित, ठाकुरदेवा, देवरिपा, प्रियांशु, गोरखपुर

संजय, उनवल, गोरखपुर

वायु प्रदूषण कम करने के लिए इलेक्ट्रिक वाहनों का इस्तेमाल बढ़ा, एम्स में मिलेगी ईवी चार्जिंग सुविधा

एम्स प्रशासन ने वायु प्रदूषण को कम करने के लिए इलेक्ट्रिक वाहनों के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए 30 हाई-पावर ईवी चार्जिंग स्टेशन स्थापित करने का निर्णय लिया है। यह सुविधा मरीजों कर्मचारियों और तीमारदारों के लिए उपलब्ध होगी। एम्स निदेशक ने ढाई महीने में यह सुविधा शुरू करने के निर्देश दिए हैं जिससे इलेक्ट्रिक वाहनों को चार्ज करने में कम समय लगेगा।

नई दिल्ली। वायु प्रदूषण को कम करने के लिए इलेक्ट्रिक वाहनों (ईवी) का प्रयोग बढ़ रहा है। इसे देखते हुए एम्स प्रशासन ने भी ईवी चार्जिंग की सुविधाएं बढ़ानी शुरू कर दी हैं। इसी क्रम में एम्स में 30 हाई पावर ईवी चार्जिंग स्टेशन शुरू किए जाएंगे।

एम्स निदेशक डॉ. एम श्रीनिवास ने ढाई माह में यह सुविधा शुरू करने के निर्देश दिए हैं। यह सुविधा शुरू होने पर इलेक्ट्रिक वाहन कम समय में चार्ज हो सकेंगे। इससे एम्स में उपलब्ध इलेक्ट्रिक वाहन तो चार्ज होंगे ही, बताया जा रहा है कि संस्थान के कर्मचारी, मरीज व तीमारदार भी जरूरत पड़ने पर अपने इलेक्ट्रिक वाहन चार्ज कर सकेंगे।

एम्स के एक अधिकारी ने बताया कि मरीजों व उनके तीमारदारों के इलेक्ट्रिक वाहनों को चार्ज करने के लिए कुछ शुल्क तय किए जा सकते हैं। एम्स ओपीडी में रोजाना करीब 15 हजार मरीज आते हैं और एक हजार से अधिक मरीज रोजाना भर्ती होते हैं। करीब 200 एकड़ में फैले एम्स के मुख्य परिसर और मस्जिद मोठ स्थित नए ओपीडी ब्लॉक के बीच की दूरी करीब सवा किलोमीटर है। ओपीडी ब्लॉक के पास ही सर्जरी ब्लॉक, मदर एंड चाइल्ड ब्लॉक और राष्ट्रीय वृद्धावस्था केंद्र भी स्थित हैं।

मरीजों के आवागमन के लिए एम्स गेट नंबर एक से ओपीडी ब्लॉक के बीच ई-शटल सेवा संचालित करता है। एक साल पहले तक शटल सेवा में 30 ई-वाहन थे। अभी भी कई मरीजों को एम्स मेट्रो स्टेशन पर उतरने के बाद ओपीडी ब्लॉक जाने के लिए ऑटो का इस्तेमाल करना पड़ता है। इसे देखते हुए एम्स ई-वाहनों की संख्या बढ़ाने में लगा है।

अब शटल सेवा में 62 ई-वाहन उपलब्ध हैं। इसके अलावा 16 इलेक्ट्रिक कारें भी हैं। हाल ही में सीएसआर के तहत एम्स को एक ई-बस मिली है। जल्द ही तीन और ई-बसें आने वाली हैं। इस तरह आने वाले समय में एम्स में ई-बसों की संख्या भी बढ़ जाएगी, ताकि मेट्रो स्टेशन से उतरने के बाद मरीजों को एम्स के विभिन्न ब्लॉकों में जाने के लिए ऑटो का सहारा न लेना पड़े।

एम्स के अधिकारियों का कहना है कि शटल सेवा के ई-वाहनों को चार्ज करने के लिए अस्पताल डिपो में कम पावर वाले चार्जिंग प्वाइंट हैं। इस प्वाइंट पर ई-कार और ई-बस जैसे वाहन चार्ज नहीं किए जा सकते।

इसलिए मस्जिद मोठ के पास शिव रोड पर 31 जुलाई तक हाई पावर इलेक्ट्रिक वाहन चार्जिंग स्टेशन शुरू करने का आदेश जारी किया गया है। लेकिन यह सुविधा मिलने में अभी कुछ समय लग सकता है। एम्स में कई मरीज और तीमारदार भी इलेक्ट्रिक कारों से आते हैं। कोशिश की जा रही है कि जरूरत पड़ने पर उन्हें भी चार्जिंग सुविधा मिल सके।

आनंद विहार की ट्रैफिक व्यवस्था चौपट : दिल्ली के पहले ट्रांसपोर्ट मल्टी मॉडल इंटीग्रेशन पर हर वक्त जाम

परिवहन विशेष न्यूज

आनंद विहार बस अड्डे पर सड़क पार करने वालों ने भी दुर्घटना का जोखिम बढ़ा दिया है। लोग अचानक से बीच सड़क की रेलिंग से निकलकर रोड पर कूद पड़ते हैं। यह पूरी तरह से अराजक है।

नई दिल्ली। आनंद विहार राष्ट्रीय राजधानी का पहला ट्रांसपोर्ट का मल्टी मॉडल इंटीग्रेशन है। यहां पर परिवहन के चार अलग-अगल विकल्प मौजूद हैं। इस पर यहां की ट्रैफिक व्यवस्था पानी फेरती नजर आ रही है।

गाजीपुर से अप्सरा बॉर्डर मार्ग पर वाहनों की आवाजाही प्रभावित है। खासकर व्यस्त समय में इस मार्ग पर जाम की स्थिति बनती है। इसी मार्ग के एक तरफ आनंद विहार बस अड्डा, रेलवे स्टेशन, मेट्रो और आरआरटीएस का स्टेशन है। दूसरी तरफ कौशांबी बस अड्डा है।

ऐसे में इस मार्ग पर अंतरराज्यीय और दिल्ली के अंदर चलने वाली डीटीसी की बसों की आवाजाही अधिक होती है। यह बसें बेतरतीव तरीके से मार्ग पर रुकती हैं। इस वजह से मार्ग पर ट्रैफिक काफी प्रभावित होता है।

आनंद विहार बस अड्डे पर रोजाना करीब 1000 के करीब अंतरराज्यीय बसों का आवागमन होता है। इसमें उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड राज्य परिवहन निगम की बसों के साथ-साथ नेपाल जाने वाली बसें भी शामिल हैं।

पहले बसें 590 रुपये पार्किंग शुल्क देकर 70 मिनट तक अंदर खड़ी हो सकती थीं, लेकिन दिल्ली परिवहन अवसंरचना विकास निगम (डीटीआइडीसी) ने पिछले वर्ष नियमों में बदलाव कर समय सीमा घटाकर 25 मिनट कर दी और अतिरिक्त समय के लिए प्रति मिनट 140 रुपये जुर्माना लागू कर दिया।

इसका मकसद बसों को जल्दी रवाना करना था, लेकिन चालक अब इससे बचने के लिए बसों को मार्ग पर खड़ा कर रहे हैं। जुर्माने के डर से चालक बसों को बस अड्डे के बजाय सड़क पर काफी देर तक रोकते हैं। इससे सुबह और शाम के समय जाम लगता है।

समाधान के लिए बनाई जाएगी योजना...

बताया जा रहा है कि जाम की समस्या से निपटने के लिए ट्रैफिक पुलिस और बस अड्डा प्रबंधन के साथ बैठक कर योजना बनाई जाएगी। जानकारों का कहना है कि बस अड्डा प्रबंधन को पार्किंग समय को 25 मिनट से बढ़ाकर कम से कम 45 मिनट करना चाहिए ताकि चालकों को सवारी भरने के लिए पर्याप्त समय मिले।

बस अड्डे के पास अतिरिक्त अस्थायी पार्किंग स्थल भी बनाए जाएं, जहां चालक बिना सड़क जाम किए बस खड़ी कर सकें। वहीं गाजीपुर से अप्सरा बॉर्डर मार्ग पर अतिरिक्त ट्रैफिक पुलिस तैनात की जाए ताकि बसों की अवैध पार्किंग पर अंकुश लगे। बस अड्डा प्रबंधन और यातायात पुलिस के बीच बेहतर समन्वय के लिए संयुक्त समिति बनाई जाए, जो नियमित निगरानी और समाधान सुनिश्चित करे।

सड़क पार करने वालो से दुर्घटना का जोखिम

आनंद विहार बस अड्डे पर सड़क पार करने वालों ने भी दुर्घटना का जोखिम बढ़ा दिया है। लोग अचानक से बीच सड़क की रेलिंग से निकलकर रोड पर कूद पड़ते हैं। यह पूरी तरह से अराजक है।

6 घंटे के भीतर 3 रेल दुर्घटनाएं: 7 डिब्बे पटरी से उतरे

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर: रविवार को बांधमुंडा रेलखंड पर मात्र छह घंटे के भीतर तीन मालगाड़ी दुर्घटनाएं हुईं। पहली घटना में मालगाड़ी पीछे की ओर लुढ़क गई, जबकि अन्य दो घटनाओं में मालगाड़ी की वैगन लाइन पटरी से उतर गई। रविवार सुबह बांधमुंडा रेलवे यार्ड में एक मालगाड़ी अचानक पीछे की ओर लुढ़क गई।इस दौरान बांधमुंडा से चक्रधरपुर जा रही मालगाड़ी के चार डिब्बे पटरी से उतर गए। यह घटना बांधमुंडा रेलवे एक्सचेंज यार्ड के सेक्शन संख्या 14 की लाइन संख्या 14 पर घटी।

जानकारी के अनुसार सुबह करीब साढ़े नौ बजे राउरकेला जा रही एक मालगाड़ी रेलवे यार्ड स्थित एम केबिन के पास रुकी हुई थी। अचानक रेलगाड़ी पीछे की ओर लुढ़कने लगी। इसी दौरान एम केबिन से चक्रधरपुर की ओर जा रही एक अन्य मालगाड़ी के चार डिब्बे पटरी से उतर गए। पटरी से उतरे चार वैगनों में से एक माल से भरा हुआ पाया गया, जबकि अन्य तीन खाली थे। खबर मिलते ही वरिष्ठ रेलवे अधिकारी, तकनीकी कर्मचारी और सुरक्षा बल घटनास्थल पर पहुंच गए। राहत एवं मरम्मत कार्य तुरंत शुरू कर दिया गया। रेलवे कर्मचारी पटरी से उतरे डिब्बों को हटाने में व्यस्त थे। लेकिन मालगाड़ी के पटरी से उतरने की घटना के बाद रेलवे विभाग पर इसकी सूचना न देने का मामला चर्चा का विषय बन गया।इसी तरह दोपहर करीब तीन बजे बांधमुंडा डीजल शेड के समीप डीएमटी के पोल संख्या 57 के पास मालगाड़ी के तीन डिब्बे पटरी से उतर गए। माल को इस मालगाड़ी के वैगनों में लोड किया गया। सूचना मिलने पर विभागीय अधिकारी व कर्मचारी मौके पर पहुंचे और पटरी से उतरे वैगन को वापस पटरी पर लाने के लिए बचाव कार्य शुरू किया। बचाव कार्य देर शाम तक जारी रहा।

भोलेनाथ की पूजा करते हुए महिलाएँ अपने पति की दीर्घायु की करती हैं कामना

सोमवती अमावस्या के दिन गंगा स्नान का विशेष महत्व माना गया है लेकिन यदि यह संभव नहीं हो तो नहाते समय पानी में गंगा जल मिलाया जा सकता है। इस दिन पीपल के वृक्ष की पूजा करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है।

सोमवार को पड़ने वाली अमावस्या को सोमवती अमावस्या कहा जाता है। इस बार मई महीने की 26 तारीख को ऐसा संयोग बन रहा है कि सोमवार के दिन अमावस्या पड़ रही है। हिंदू धर्म में इस अमावस्या का विशेष महत्व है। पुराणों में कहा गया है कि इस दिन सुहागिन महिलाओं को अपने पति की दीर्घायु की कामना के लिए व्रत रखना चाहिए। मान्यता है कि इस दिन मौन व्रत रहने से सहस्त्र गोदान का फल प्राप्त होता है। सोमवार चूँकि भगवान शिव को समर्पित है इसलिए इस दिन भोलेनाथ की पूजा करते हुए महिलाएँ अपने पति की दीर्घायु की कामना करती हैं और पीपल के वृक्ष में शिवजी का वास मानकर उसकी पूजा और परिक्रमा की जाती है। यह भी माना जाता है कि पूर्वजों की आत्मा की तृप्ति के लिए अमावस्या के सभी दिन श्राद्ध की रस्मों को करने के लिए उपयुक्त हैं। कालसर्प दोष निवारण की पूजा करने के लिए भी अमावस्या का दिन उपयुक्त होता है।

वैसे तो इस दिन गंगा स्नान का विशेष महत्व माना गया है लेकिन यदि यह संभव नहीं हो तो नहाते समय पानी में गंगा जल मिलाया जा सकता है। इस दिन पीपल के वृक्ष की पूजा करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। पीपल की पूजा के बाद गरीबों को कुछ दान अवश्य देना चाहिए। यदि कोई नदी या सरोवर निकट हो तो वहाँ अवश्य जाएँ और भगवान शंकर, पार्वती और तुलसी जी की भक्तिभाव से पूजा करें। सोमवती अमावस्या के दिन 108 बार तुलसी की परिक्रमा करना, ओंकार का जप करना, सूर्य नारायण को अर्घ्य देना अत्यंत फलदायी है। मान्यता है कि सिर्फ तुलसी जी की 108 बार प्रदक्षिणा करने से घर की दरिद्रता भाग जाती है।

प्रत्येक मास एक अमावस्या आती है, परंतु ऐसा बहुत ही कम होता है, जब अमावस्या सोमवार के दिन हो। यह स्नान, दान के लिए शुभ और सर्वश्रेष्ठ मानी जाती है। पुराणों में कहा गया है कि सोमवार को अमावस्या बड़े भाग्य से ही पड़ती है। इस दिन को नदियों, तीर्थों में स्नान, गोदान, अन्नदान, ब्राह्मण भोजन, वस्त्र आदि दान के लिए विशेष माना जाता है। सोमवार चंद्रमा का दिन है। इस दिन अमावस्या को सूर्य तथा चंद्र एक सीध में स्थित रहते हैं, इसलिए यह पर्व विशेष पुण्य देने वाला होता है। अमावस्या जब सोमवार के दिन पड़ती है तो उसे सोमवती अमावस्या कहते हैं और अमावस्या जब शनिवार के दिन पड़ती है तो उसे शनि अमावस्या कहते हैं।

सोमवती अमावस्या से सम्बंधित अनेक कथाएँ प्रचलित हैं। परंपरा है कि सोमवती अमावस्या के दिन इन कथाओं को विधिपूर्वक सुना जाता है। एक गरीब ब्राह्मण परिवार था, जिसमें पति, पत्नी के अलावा एक पुत्री भी थी। पुत्री धीरे धीरे बड़ी होने लगी, उस लड़की में समय के साथ सभी स्त्रियोचित गुणों का विकास हो रहा था। लड़की सुन्दर, संस्कारवान एवं गुणवान भी थी, लेकिन गरीब होने के कारण उसका विवाह नहीं हो पा रहा था। एक दिन ब्राह्मण के घर एक साधू पधारे, जो कि कन्या के सेवाभाव से काफी प्रसन्न हुए। कन्या को लम्बी आयु का आशीर्वाद देते हुए साधू ने कहा की कन्या के हथेली में विवाह योग्य रेखा नहीं है। ब्राह्मण दम्पति ने साधू से उपाय पूछा कि कन्या ऐसा क्या करे की उसके हाथ में विवाह योग बन जाए। साधू ने कुछ देर विचार करने के बाद अपनी अंतर्दृष्टि से ध्यान करके बताया कि कुछ दूरी पर एक गाँव में सोना नाम की धूबी जाती की एक महिला अपने बेटे और बहू के साथ रहती है, जो की बहुत ही आचार-विचार और संस्कार संपन्न तथा पति परायण है। यदि यह कन्या उसकी सेवा करे और वह महिला इसकी शादी में अपने मांग का सिन्दूर लगा दे, उसके बाद इस कन्या का विवाह हो तो इस कन्या का वैधव्य योग मिट सकता है। साधू ने यह भी बताया कि वह महिला कहीं आती जाती नहीं है। यह बात सुनकर ब्राह्मणि ने अपनी बेटी से धोबिन कि सेवा करने की बात कही।

कन्या तड़के ही उठ कर सोना धोबिन के घर जाकर, सफाई और अन्य सारे करके अपने घर वापस आ जाती। सोना धोबिन अपनी बहू से पूछती कि तुम तो तड़के ही उठकर सारे काम कर लेती हो और पता भी नहीं चलता। बहू ने कहा कि माँजी मैंने तो सोचा कि आप ही सुबह उठकर सारे काम ख़ुद ही ख़त्म कर लेती हैं। मैं तो देर से उठती हूँ। इस पर दोनों सास बहू निगरानी करने करने लगीं कि कौन है जो तड़के ही घर का सारा काम करके चला जाता हा। कई दिनों के बाद धोबिन ने देखा कि एक एक कन्या मुँह अंधेरे घर में आती है और सारे काम करने के बाद चली जाती है। जब वह जाने लगी तो सोना धोबिन उसके पैरों पर गिर पड़ी, पूछने लगी कि आप कौन हैं और इस तरह छुपकर मेरे घर की चाकरी क्यों करती हैं। तब कन्या ने साधू द्वारा कही गई साड़ी बात बताई। सोना धोबिन पति परायण थी, उसमें तेज था। वह तैयार हो गई। सोना धोबिन के पति थोड़ा अस्वस्थ थे। उसने अपनी बहू से अपने लौट आने तक घर पर ही रहने को कहा। सोना धोबिन ने जैसे ही अपने मांग का सिन्दूर कन्या की मांग में लगाया, उसके पति मर गया। उसे इस बात का पता चल गया। वह घर से निराजल ही चली थी, यह सोचकर की रास्ते में कहीं पीपल का पेड़ मिलेगा तो उसे भँवरी देकर और उसकी परिक्रमा करके ही जल ग्रहण करेगी, उस दिन सोमवती अमावस्या थी। ब्राह्मण के घर मिले पूए-पकवान की जगह उसने ईंट के टुकड़ों से 108 बार भँवरी देकर 108 बार पीपल के पेड़ की परिक्रमा की और उसके बाद जल ग्रहण किया। ऐसा करते ही उसके पति के मुर्दा शरीर में कम्पन होने लगा।

चलना क्यों जरूरी है?

ये जानना भी आवश्यक है.?

क्या आपने कभी सोचा है कि जब आप चलना शुरू करते हैं तो आपके शरीर का क्या होता है?

चलने और व्यायाम से आपके शरीर पर पड़ने वाली अद्भुत चेन रिएक्शन की एक मिनट-दर-मिनट की सूची यहाँ दी गई है, यह वास्तव में आश्चर्यजनक है!

मिनट 1 से 5 तक

आपके पहले कुछ कदम आपके चलने को बढ़ावा देने के लिए आपकी कोशिकाओं में ऊर्जा पैदा करने वाले रसायनों की रिहाई को ट्रिगर करते हैं।

आपकी हृदय गति लगभग 70 से 100 बीट प्रति मिनट (बीपीएम) से बढ़ जाती है, रक्त-प्रवाह को बढ़ावा देती है और मांसपेशियों को गर्म करती है।

कोई भी जकड़न कम हो जाती है क्योंकि जोड़ आपको अधिक आसानी से चलने में मदद करने के लिए चिकनाई वाला तरल पदार्थ छोड़ते हैं।

जैसे-जैसे आप हिलते-डुलते हैं, आपका शरीर प्रति मिनट 5 कैलोरी बर्न करता है, जबकि आराम करने पर आपका शरीर केवल 1 कैलोरी ही बर्न करता है।

आपके शरीर को अधिक ईंधन की आवश्यकता होती है और वह इसे अपने कार्बोहाइड्रेट और वसा भंडार से खींचना शुरू कर देता है।

मिनट 6 से 10 तक

दिल की धड़कन बढ़ जाती है और जैसे-जैसे आप गति पकड़ते हैं आप एक मिनट में 6 कैलोरी तक बर्न कर रहे होते हैं।

रक्तचाप में मामूली वृद्धि का मुकाबला रक्त वाहिकाओं का विस्तार करने वाले रसायनों की रिहाई से होता है, जो काम करने वाली मांसपेशियों में अधिक रक्त और ऑक्सीजन लाते हैं।

मिनट 11 से 20 तक

आपके शरीर का तापमान बढ़ता रहता है, और आपको पसीना आने लगता है क्योंकि त्वचा के पास रक्त वाहिकाएं गर्मी छोड़ने के लिए फैलती हैं।

जैसे जैसे आपका चलना तेज होता जाता है, आप एक मिनट में 7 कैलोरी तक जलाते रहेंगे और सांस लेना मुश्किल होगा।

एपिनेफ्रीन और ग्लूकागन जैसे हार्मोन मांसपेशियों को ईंधन छोड़ने के लिए बढ़ते हैं।

मिनट 21 से 45 तक

स्फूर्ति का अनुभव करते हुए, आप आराम करना शुरू कर देते हैं क्योंकि आपका शरीर तनाव मुक्त करता है, इसके लिए आपके मस्तिष्क में एंडोर्फिन जैसे फील-गुड रसायनों की एक खुराक के लिए धन्यवाद।

जैसे ही अधिक वसा जलती है, इंसुलिन (जो वसा को स्टोर करने में मदद करता है) अतिरिक्त वजन या मधुमेह से जूझ रहे किसी भी व्यक्ति के लिए अच्छी खबर देता है।

मिनट 46 से 60 तक

आपकी मांसपेशियों में थकान महसूस हो सकती है क्योंकि कार्बोहाइड्रेट के भंडार कम हो जाते हैं।

जैसे ही आप शांत होते हैं, आपकी हृदय गति कम हो जाती है और आपकी श्वास धीमी हो जाती है।

आप कम कैलोरी बर्न कर रहे होंगे लेकिन आपके शुरू होने से पहले की तुलना में अधिक। आपका कैलोरी बर्न 1 घंटे तक ऊंचा रहेगा।

यह सब हमारे द्वारा एक भी सचेत विचार के बिना होता है - मानव शरीर अद्भुत है।

धन्य रहें - स्वस्थ रहें

टहलें और एक्सरसाइज करते रहें।

मनाली घूमने का बना रहे प्लान तो इन बातों का रखें ध्यान, ट्रिप में नहीं होगी कोई परेशानी

मई-जून के महीने में अक्सर लोग पूरे परिवार के साथ मनाली ट्रिप का प्लान कर रहे हैं, क्योंकि गर्मियों में बच्चों की छुट्टियां पड़ती हैं। ऐसे में अगर आप इस महीने मनाली घूमने जाने का प्लान कर रहे हैं, तो यह आर्टिकल आपके लिए है।

गर्मियों का मौसम हो या फिर सर्दियों का, मनाली में हर सीजन में पर्यटकों की भीड़ देखने को मिलती है। गर्मी में ठंडक के एहसास के लिए लोग मनाली जाते हैं। वहीं सर्दियों में स्नो का नजारा देखने के लिए मनाली जाते हैं। यही वजह है कि यहां पर किसी भी मौसम में पर्यटकों की भीड़ कम नहीं होता है। मई-जून के महीने में अक्सर लोग पूरे परिवार के साथ मनाली ट्रिप का प्लान कर रहे हैं, क्योंकि गर्मियों में बच्चों की छुट्टियां पड़ती हैं। ऐसे में अगर आप इस महीने मनाली घूमने जाने का प्लान कर रहे हैं, तो यह आर्टिकल आपके लिए है। आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको बताने जा रहे हैं कि मनाली घूमने जाने के दौरान किन बातों का खास ख्याल रखना चाहिए।

इन बातों का रखें ध्यान

गर्मियों के मौसम में जा रहे हैं, यह सोचकर ट्रिप देर से न करें। प्रयास करें कि आस यात्रा की शुरूआत सुबह जल्दी करें। इससे आप आधा रास्ता जल्दी और सुकून से कवर कर लेंगे। वरना आप दिन में मनाली की सड़कों पर लगे जाम में घंटों तक फंसे रह सकते हैं।

यदि आप सोच रहे हैं कि गर्मियों में आपको मनाली में होटल सस्ते मिल जाएंगे, तो ऐसा नहीं है। क्योंकि इस दौरान पर्यटकों की भीड़ ज्यादा बढ़ जाती है, इसलिए आप भी पहले से होटल आदि बुक कर लें। वहीं आप मनाली घूमने के लिए ट्रैवल एजेंट या फिर ऑनलाइन बुकिंग भी कर सकते हैं।

बता दें कि शहर में आपको पर्यटन स्थलों पर जाने के लिए घंटों ट्रैफिक में फंसे रहना पड़ सकता है। इसलिए प्रयास करें कि आप ट्रैफिक से बचने के लिए सुबह जल्दी होटल से निकल जाएं। वहीं अगर आप अटल टनल, सोलांग वैली या रोहतांग के आसपास की जगहों को एक्सप्लोर करने का प्लान बना रहे हैं, तो सुबह जल्दी होटल से निकल जाएं। ये जगहें सनसेट व्यू प्वॉइंट के लिए जाने जाते हैं।

वहीं मनाली में आप दिन में सर्दी लगने के कारण वहीं बल्कि तेज धूप की वजह से परेशान हो सकते हैं। इसलिए छाता और टोपी साथ लेकर चलें। वहीं गर्मी और सर्दी वाले कपड़े भी लेकर जाएं। क्योंकि रात के समय तापमान यहां पर कम हो जाता है। अगर आपको ऑनलाइन पेमेंट करने में समस्या हो सकती है, इसलिए कैश साथ लेकर चलें।

रोजाना गौ माता की आरती करने से पुण्यफल की होती है प्राप्ति, बढ़ती है धार्मिकता

अगर रोजाना गाय की सेवा करना संभव नहीं है, तो ऐसे में रोजाना गाय की आरती जरूर करनी चाहिए। आप जिस भी भगवान को मानते हैं, उनकी पूजा-अर्चना के बाद गाय की आरती जरूर करनी चाहिए। इससे जातक को कई लाभ प्राप्त होंगे।

सनातन धर्म में गाय को मां का दर्जा दिया गया है। वहीं शास्त्रों में भी बताया गया है कि गाय एक मात्र ऐसा पशु है, जिसमें सभी देवी-देवताओं का वास होता है। ऐसे में गाय की पूजा-अर्चना करने से न सिर्फ गौ माता बल्कि सभी देवी-देवताओं का भी आशीर्वाद मिलता है। साथ ही हर तरह के दोष भी दूर हो जाते हैं। वहीं अगर रोजाना गाय की सेवा करना संभव नहीं है, तो ऐसे में रोजाना गाय की आरती जरूर करनी चाहिए।

आप जिस भी भगवान को मानते हैं, उनकी पूजा-अर्चना के बाद गाय की आरती जरूर करनी चाहिए। इससे जातक को कई लाभ प्राप्त होंगे। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको गौ माता की आरती के बारे में बताने जा रहे हैं, साथ ही इसके लाभ के बारे में भी जानेंगे।

गाय की आरती

ॐ जय गौ माता, मैया जय धेनु माता। मुकुन्द विधाता उमापति, सीतापति ध्याता।। ॐ जय धेनु माता

सागर मंथन उपजी, कामधेनु माता। नमन किए सब देवता, अति पावन नाता।। ॐ जय धेनु माता

तनुजा जो तुझसे जन्मी, नंदिनी नाम रचे। ऋषि वशिष्ठ की शक्ति, राजा दिलीप भजे।। ॐ जय धेनु माता

पाप विनाशिनी मैया, सुखद भंडार भरे। तैंतीस कोटि दैवत, अंग निवास करे।। ॐ जय धेनु माता

पंचगव्य है पावन, औषध गुणकारी। रोग दोष मिटाए, माँ तुम उपकारी।। ॐ जय धेनु माता

जिस घर अंगना धेनु, माँ की हो सेवा। वैतरणी तरते वो नर, पाते शुभ मेवा।। ॐ जय धेनु माता

शुभ मति शुभ फल दायक, है संकट त्राता। जो जन करते सेवा, मोक्ष सुफल पाता।। ॐ जय धेनु माता

आरती वंदना धेनु की, जो नर हैं गाते। कहते हैं श्रीकृष्णा, वे मनु तर जाते।। ॐ जय धेनु माता

गाय की आरती के लाभ

बता दें कि रोजाना गौ माता की आरती करने से जातक में धार्मिकता बढ़ती है और उसको आध्यात्म की प्राप्ति होती है।

रोजाना गौ माता की आरती करने से जातक के पुण्य में वृद्धि होती है और जीवन में सकारात्मकता बढ़ती है।

गौ माता की रोजाना आरती करने से व्यक्ति को मानसिक शांति प्राप्त होती है और तनाव से भी मुक्ति मिलती है।

इससे ग्रह दोष और वास्तु दोष भी नष्ट होता है। साथ ही पितृ दोष भी दूर होता है।

रोजाना गौ माता की आरती करने से घर में सुख-शांति और समृद्धि का वास होता है। साथ ही सकारात्मकता और संपदा का भी आगमन होता है।

वहीं रोजाना गाय की आरती करने से धन-धान्य में वृद्धि होती है और जातक की आर्थिक स्थिति मजबूत होती है।

स्क्रीन की थकान को कम करने के लिए अपनाएं ये आसान तरीके, आंखों की रोशनी पर नहीं पड़ेगा असर

स्क्रीन थकान एक ऐसी आधुनिक असुविधा है, जिसकी वजह से सिरदर्द, तनाव, मानसिक थकान और ब्लर्रेड विजन होती है। लेकिन आप कुछ आसान तरीकों को अपनाकर स्क्रीन थकान को कम कर सकते हैं।

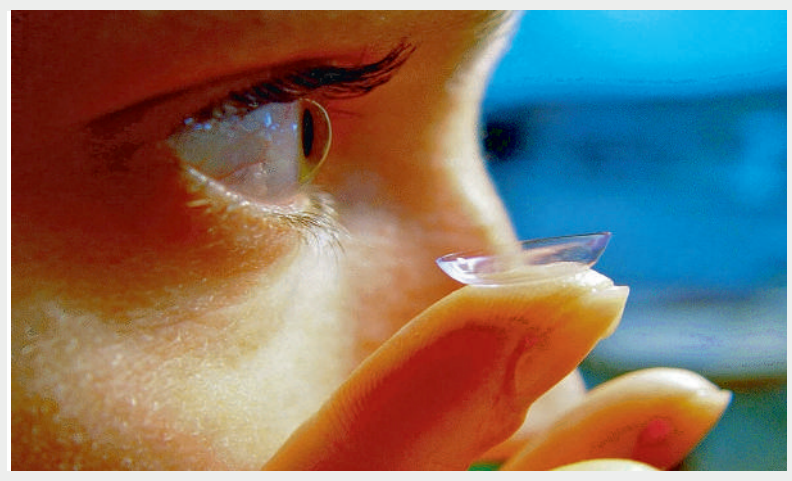

आज के समय में लगभग हर कोई स्क्रीन पर घंटों समय बिताता है। यह तो वह लैपटॉप आदि पर काम किया करते हैं, या फिर अपने फोन पर स्कॉल करते हैं या अपनी पसंदीदा सीरीज देखते हैं। आजकल स्क्रीन पर अधिक समय बिताना रोजमर्रा का हिस्सा बन गया है। जोकि स्क्रीन थकान की समस्या बन सकता है। यह एक ऐसी आधुनिक असुविधा है, जिसकी वजह से सिरदर्द, तनाव, मानसिक थकान और ब्लर्रेड विजन होती है। लेकिन आप कुछ आसान तरीकों को अपनाकर स्क्रीन थकान को कम कर सकते हैं। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको बता सकते हैं कि स्क्रीन थकान कम करने के लिए आप किन-किन तरीकों को अपना सकते हैं।

जानिए क्या है स्क्रीन थकान

स्क्रीन थकान को कंप्यूटर विजन सिंड्रोम के नाम से भी जाना जाता है। यह टेक इंडस्ट्री में एक आम समस्या है। यह सिंड्रोम तब होता है, जब लंबे समय तक स्क्रीन के इस्तेमाल से आंख के अंदर और इसके आसपास की मांसपेशियां तनावग्रस्त व कमजोर हो जाती है। वहीं यह समस्या उन लोगों को प्रभावित कर सकती हैं, तो चश्मा और कॉन्टैक्ट लेंस पहनते हैं। हालांकि स्क्रीन थकान खराब रोशनी, स्क्रीन की चमक, खराब मुद्रा और खराब एर्गोनोमिक सेटअप आदि से हो सकती है।

20-20-20 नियम

इस नियम का मतलब है कि हर 20 मिनट में स्क्रीन पर नजरें गड़ाएं, तो 20 सेकेंड ब्रेक लें और फिर 20 फीट दूर किसी चीज को देखें। यह एक्सरसाइज मांसपेशियों को आराम देने में सहायता करता है, जिससे कि लोग ठीक हो सकें और अपने काम पर फोकस कर सकें।

अच्छी नींद लेना जरूरी

बता दें कि आंखों और दिमाग को आराम देना बहुतजरूरी होता है। इसलिए रोजाना सोने से 1-2 घंटे पहले स्क्रीन बंद कर दें। वहीं शाम को डिवाइस को डार्क मोड पर सेट कर दें, जिससे कि तेज रोशनी आंखों में न चुभें। वहीं अगर आप रात में वीडियो स्ट्रीमिंग आदि के आदि हैं, तो इसकी जगह आप पॉडकास्ट या ऑडियोबुक सुनने का प्रयास करें।

डेस्क सेटअप भी बदलें

कुछ लोगों का मानना होता है कि बड़े आकार के कंप्यूटर मॉनिटर का इस्तेमाल करने से आंखों की थकान कम होती है। वहीं मॉनिटर, लैपटॉप या फिर पर भी आपको फॉन्ट का आकार बड़ा करके इस्तेमाल कर सकते हैं। वहीं अगर आपके पास यह ऑप्शन नहीं है, तो आप रीडिंग मोड चालू करें और फिर फॉन्ट का साइज बढ़ाएं।

वीर सावरकर: विचारों का महायोद्धा, स्वतंत्रता की लौ, हिंदुत्व का स्वर

भारत की पवित्र धरती ने जब-जब किसी सपूत को जन्म दिया, उसने न केवल अपने कर्मों से इतिहास के पन्नों को स्वर्णिम रंग से रंगा, बल्कि भावी पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का अमर सूर्य बनकर उदित हुआ। वीर विनायक दामोदर सावरकर ऐसी ही एक अखंड ज्योति हैं, जिन्होंने गुलामी की जंजीरों को तोड़ने का प्रण लिया और अपने साहस, बलिदान व ओजस्वी विचारों से भारत के स्वतंत्रता संग्राम को देदीप्यमान किया। उनकी जयंती, 28 मई, महज एक तारीख नहीं, बल्कि एक प्रचंड विचार का महोत्सव है—जो प्रत्येक भारतीय के हृदय में देशभक्ति की लौ प्रज्वलित करता है और हमें सांस्कृतिक गौरव के शिखर पर आरूढ़ होने का सशक्त आह्वान देता है। इस पावन अवसर पर सावरकर की उस अनुपम गाथा को स्मरण करें, जो हमें सिखाती है कि सच्चा देशप्रेम केवल शब्दों का जाल नहीं, बल्कि कर्म, साहस और समर्पण का जीवंत स्वरूप है।

28 मई, 1883 को महाराष्ट्र के नासिक जिले के भगूर गांव में एक साधारण मराठी परिवार में जन्मे विनायक दामोदर सावरकर का जीवन शुरू से ही असाधारण था। उनके माता-पिता, दामोदर पंत और राधाबाई, ने उन्हें ऐसे संस्कारों का अमृत पिलाया, जिसने उनके क्रांतिकारी व्यक्तित्व को निखारा। किशोरावस्था में ही सावरकर ने 'मित्र मेला' की नींव रखी, जो आगे चलकर 'अभिनव भारत सोसाइटी' के रूप में उभरी। इस संगठन ने युवाओं के हृदय में अंग्रेजी शासन के विरुद्ध सशस्त्र क्रांति की चिंगारी सुलगाई। सावरकर का अटल विश्वास था कि स्वतंत्रता कोई दान नहीं, बल्कि त्याग, संघर्ष और बलिदान की मांग करती है। उनकी यह प्रखर विचारधारा जंगल की आग की तरह फैली और अंग्रेजी हुकूमत की नींव को हिलाकर रख दिया।

लंदन की माटी पर कदम रखते ही सावरकर ने ग्रेज इन लॉ में कानून की पढ़ाई तो शुरू की, पर उनका असली संकल्प था—भारत माता की गुलामी की बेड़ियों को चूर-चूर करने की रणनीति गढ़ना। वहां उन्होंने 'फ्री इंडिया सोसाइटी' की नींव रखी, भारतीय युवाओं के हृदयों को एकजुट कर स्वतंत्रता संग्राम की ज्वाला को प्रचंड किया। उनकी कालजयी रचना 1857 का स्वतंत्रता संग्राम ने प्रथम स्वतंत्रता संग्राम को एक सुनियोजित क्रांति का स्वर्णिम स्वरूप दिया, जिसे अंग्रेजों ने 'विद्रोह' कहकर दबाने का असफल प्रयास किया। इस पुस्तक ने विश्व भर में तूफान खड़ा कर दिया, ब्रिटिश हुकूमत ने इसे प्रतिबंधित किया, मगर सावरकर के विचारों को कैद करना उनके बस की बात नहीं थी। उनकी ओजस्वी लेखनी ने युवाओं के मन में स्वतंत्रता की ऐसी चिंगारी सुलगाई, जो जंगल की आग बनकर ब्रिटिश साम्राज्य की नींव हिला गई।

1910 में नासिक षड्यंत्र मामले में सावरकर को गिरफ्तार कर अंडमान की कुख्यात सेलुलर जेल में दोहरी आजीवन कारावास—50 वर्ष की अमानवीय सजा—सुनाई गई। कोल्हू में बैल की तरह जुतना, भूख की तपिश, और क्रूर यातनाएं—ऐसी सजा जो किसी भी मनुष्य का हौसला तोड़ दे। लेकिन सावरकर कोई साधारण आत्मा नहीं थे। जेल की काली दीवारों पर नाखूनों से खुरची उनकी कविताएं, जैसे जयोस्तुते, आज भी उनकी अडिग इच्छाशक्ति और प्रगाढ़ देशप्रेम की अमर गाथा गाती हैं। उन्होंने न केवल अपनी आत्मा को अटल रखा, बल्कि साथी कैदियों के हृदयों में स्वतंत्रता की लौ प्रज्वलित रखी। उनकी लेखनी और विचारों ने सेलुलर जेल की दीवारों को भी स्वतंत्रता का मंच बना दिया, जहां हर पत्थर देशभक्ति की गूंज बन गया।

सावरकर केवल क्रांतिकारी ही नहीं, बल्कि हिंदुत्व के दर्शन के प्रणेता भी थे। उनकी पुस्तक हिंदुत्वः हू इज ए हिंदू? ने हिंदुत्व को एक सांस्कृतिक और राष्ट्रीय पहचान के रूप में परिभाषित किया। सावरकर का हिंदुत्व केवल धार्मिक सीमाओं तक सीमित नहीं था; यह भारत की सांस्कृतिक एकता और गौरव का प्रतीक था। उन्होंने स्पष्ट किया कि हिंदुत्व एक समावेशी विचार है, जो भारत की प्राचीन संस्कृति को संरक्षित करने और उसे विश्व मंच पर गौरवान्वित करने का आह्वान करता है। इस दर्शन ने भारत की राष्ट्रीय चेतना को नई दिशा दी और आज भी हमें अपनी जड़ों से जोड़े रखता है।

जेल से रिहाई के बाद सावरकर ने हिंदू महासभा के साथ मिलकर सामाजिक और राजनीतिक सुधारों की नींव रखी। उन्होंने छुआछूत, जातिगत भेदभाव और सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ न केवल आवाज उठाई, बल्कि इन्हें जड़ से उखाड़ने का संकल्प लिया। विज्ञान और आधुनिकता के प्रबल पक्षधर सावरकर का सपना था एक ऐसा भारत, जो स्वतंत्र होने के साथ-साथ वैज्ञानिक दृष्टिकोण और सांस्कृतिक समृद्धि में विश्व का नेतृत्व करे। उनकी यह दूरदर्शिता आज आत्मनिर्भर भारत के संकल्प में जीवंत रूप से प्रतिबिंबित होती है, जो हमें प्रेरित करती है कि हम अपनी विरासत को गर्व के साथ अपनाएं और भविष्य की ओर साहसपूर्वक कदम बढ़ाएं।

वीर सावरकर का जीवन न केवल प्रेरणा का स्रोत है, बल्कि विवादों के बीच उनकी दृढ़ता और बुद्धिमत्ता का भी परिचायक है। उनकी दया याचिकाओं को लेकर कुछ लोग भ्रम पालते हैं, परंतु यह समझना आवश्यक है कि ये याचिकाएं उनकी रणनीतिक सूझबूझ का प्रतीक थीं। इनका उद्देश्य जेल की दीवारों से निकलकर स्वतंत्रता संग्राम को और प्रचंड करना था। ये याचिकाएं उनके अटूट देशप्रेम को कमतर नहीं करतीं, बल्कि उनकी दूरदर्शिता और बौद्धिक चातुर्य को और अधिक उजागर करती हैं। सावरकर ने कभी अपने सिद्धांतों से समझौता नहीं किया, और उनका जीवन साहस व बलिदान की जीवंत गाथा है।

सावरकर केवल क्रांतिकारी ही नहीं, बल्कि एक उत्कृष्ट लेखक, कवि और साहित्यकार भी थे। उनकी रचनाएं, जैसे मझी जनमठेप और काला पानी, सेलुलर जेल की अमानवीय यातनाओं और उनके अदम्य साहस की मार्मिक कहानी बयान करती हैं। उनकी कविताएं और नाटक, जैसे उत्तमराव और संगीत संन्यास, मराठी साहित्य को समृद्ध करने के साथ-साथ देशभक्ति की प्रचंड ज्वाला प्रज्वलित करती हैं। सावरकर की लेखनी में वह जादुई शक्ति थी, जो युवाओं के हृदय में क्रांति का आलम जगाती थी और आज भी हमें उनके बलिदान व दृढ़ संकल्प की प्रेरणा देती है। उनकी हर पंक्ति एक आह्वान है—भारत की गौरवशाली विरासत को अक्षुण्ण रखने और स्वतंत्रता के स्वप्न को साकार करने का।

हर 28 मई को वीर सावरकर की जयंती मनाते हुए हमें उनके जीवन से यह अमर संदेश ग्रहण करना चाहिए कि स्वतंत्रता केवल एक अधिकार नहीं, अपितु एक पवित्र जिम्मेदारी है। सावरकर का जीवन हमें सिखाता है कि सच्चा देशभक्त वह नहीं, जो केवल देश के लिए जीता है, बल्कि वह जो हर सांस, हर क्षण अपने राष्ट्र के गौरव और उत्थान के लिए समर्पित करता है। उनकी जयंती हमें उन अनगिनत बलिदानों की स्मृति दिलाती है, जिनके बूते भारत ने आजादी की सांस ली। सावरकर का स्वप्न था एक ऐसा भारत, जो सांस्कृतिक वैभव, बौद्धिक प्रखरता और वैज्ञानिक उत्कृष्टता में विश्व का सिरमौर बने।

आज, जब हम वीर सावरकर को स्मरण करते हैं, उनकी वह प्रचंड ललकार हमारे हृदय में गूंज उठती है - हिंदुस्तान हमारा है, और इसे विश्व के शिखर पर ले जाना हमारा धर्म है। उनकी जयंती हमें न केवल प्रेरित करती है, बल्कि एक आह्वान देती है—सामाजिक सुधार, शिक्षा का प्रकाश, या राष्ट्र निर्माण के हर कार्य में योगदान देकर भारत को सशक्त बनाने का। इस 28 मई को हम संकल्प लें कि सावरकर के स्वप्नों का भारत साकार करेंगे—एक ऐसा भारत, जो सांस्कृतिक गौरव, बौद्धिक बल और अजेय शक्ति का प्रतीक हो। जय हिंद! जय वीर सावरकर!

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी

दीपक गाबा को शाहदरा जिला भाजपा अध्यक्ष बनाए जाने पर क्षेत्र में उत्साह की लहर

मुख्य संवाददाता/सुषमा रानी

नई दिल्ली : भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ एवं कर्मठ कार्यकर्ता दीपक गाबा को शाहदरा जिला भाजपा अध्यक्ष नियुक्त किए जाने पर समूचे जिले में उत्साह का माहौल है। संगठन में वर्षों से सक्रिय भूमिका निभा रहे गाबा की नियुक्ति को कार्यकर्ताओं और समर्थकों ने एक सकारात्मक और दूरदर्शी निर्णय बताया है। उनके नेतृत्व में संगठन को नई दिशा और ऊर्जा मिलने की पूरी उम्मीद जताई जा रही है।

उन्होंने अपने राजनीतिक जीवन में सदैव संगठनहित को सर्वोपरि रखा है और जनसंपर्क, जनसेवा तथा कार्यकर्ता हितों के लिए लगातार सक्रिय रहे हैं। उनकी नियुक्ति से विशेष रूप से युवाओं और उद्यमियों में नई प्रेरणा का संचार हुआ है।

शाहदरा जिले के अनेक सामाजिक, धार्मिक, औद्योगिक और व्यापारी संगठनों ने उन्हें शुभकामनाएं दी हैं। भारतीय जनता पार्टी का स्थानीय नेतृत्व भी उनके साथ कंधे से कंधा मिलाकर कार्य करने के लिए तत्पर है।

दो दिवसीय 8वीं एमराल्ड ताइक्वांडो चैम्पियनशिप 2025 का भव्य समापन

मुख्य संवाददाता

नईदिल्ली। : कार्मेल कॉन्वेंट स्कूल, सेक्टर 9 में आयोजित दो दिवसीय "8वीं एमराल्ड ताइक्वांडो चैम्पियनशिप 2025" का समापन पुरस्कार वितरण समारोह के साथ सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। एमराल्ड मार्शल आर्ट्स एकेडमी की विभिन्न शाखाओं के 3 से 17 वर्ष आयु वर्ग के 500 खिलाड़ियों ने अपनी उत्कृष्ट खेल प्रतिभा और खेल भावना का प्रदर्शन किया।

समारोह के अंतिम दिन मुख्य अतिथि के रूप में सिटिज़न अवेयरनेस ग्रुप के चेयरमैन सुरेन्द्र वर्मा; केबीडी के प्रबंध निदेशक रमेश गोयल; भाजपा चंडीगढ़ उत्तराखंड प्रकोष्ठ के चेयरमैन भूपिंदर शर्मा उपस्थित रहे। उनके साथ समाजसेविका मधुलिका स्याल उपस्थित थीं। आयोजक मास्टर शिवराज घर्ती (6वीं डैन ब्लैक बेल्ट, कोरिया) और मास्टर कविता राय घर्ती ने अतिथियों का पुष्पगुच्छ भेंट कर स्वागत किया।

सभी अतिथियों ने खिलाड़ियों की ऊर्जा, अनुशासन और खेल भावना की सराहना की और बच्चों के सर्वांगीण विकास हेतु एकेडमी द्वारा किए जा रहे प्रयासों की प्रशंसा की।

इस अवसर पर बोलते हुए सिटिज़न अवेयरनेस ग्रुप के चेयरमैन सुरेन्द्र वर्मा ने कहा, रजब मुझे इस कार्यक्रम में गेस्ट ऑफ ऑनर के रूप में आमंत्रण मिला, तो मैं बहुत उत्साहित हुआ और तुरंत स्वीकार कर लिया, क्योंकि मेरी बेटी और बहू दोनों ने इसी स्कूल से पढ़ाई की है। बच्चों में अनुशासन और आत्मविश्वास देखकर मुझे गर्व हुआ। मैं सभी विद्यार्थियों को उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए बधाई देता हूं और आयोजकों मास्टर कविता राय और मास्टर शिवराज घर्ती को इतनी सुव्यवस्थित पुरस्कार वितरण समारोह व खिलाड़ियों की तैयारी के लिए धन्यवाद देता हूं। एकेडमी बच्चों के सर्वांगीण विकास की दिशा में प्रशंसनीय कार्य कर रही है।"

प्रतियोगिता में खिलाड़ियों ने ताइक्वांडो फाइट, ब्रेकिंग, स्पीड किकिंग और पूमसे जैसी विभिन्न स्पर्धाओं में भाग लिया। विजेताओं को स्वर्ण, रजत और कांस्य पदक प्रदान किए गए। वार्षिक पुरस्कार समारोह के दौरान राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ियों को विशेष पुरस्कार प्रदान किए गए। साथ ही, विभिन्न शाखाओं से चुने गए श्रेष्ठ खिलाड़ियों को 'स्टूडेंट ऑफ द ईयर अवार्ड' से सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर आयोजक मास्टर शिवराज घर्ती ने कहा, "हमारा उद्देश्य केवल खेल कौशल विकसित करना नहीं, बल्कि बच्चों में अनुशासन, आत्मविश्वास और नेतृत्व क्षमता को भी बढ़ावा देना है। हम चाहते हैं कि हमारे खिलाड़ी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर देश का नाम रोशन करें।"

De-Dollarization की संभावना और इसका वैश्विक प्रभाव

संजय सोंधी, उपसचिव, भूमि एवं भवन विभाग, दिल्ली सरकार*

वर्तमान में अमेरिकी डॉलर न केवल अमेरिका की मुद्रा है, बल्कि वैश्विक रिजर्व मुद्रा भी है। विश्व व्यापार का लगभग 80% हिस्सा डॉलर में निपटाया जाता है, और सभी केंद्रीय बैंकों के विदेशी मुद्रा भंडार का 59% हिस्सा डॉलर में है, जबकि यूरो का हिस्सा मात्र 20% है। विश्व में जारी 64% ऋण पत्र डॉलर में हैं, और 88% विदेशी मुद्रा व्यापार भी डॉलर में होता है। अमेरिका की अर्थव्यवस्था, जो वैश्विक जीडीपी का 30% हिस्सा है, इसके वित्तीय बाजारों की पारदर्शिता, गहरे ऋण बाजार, और मजबूत राजनीतिक व कानूनी व्यवस्था ने डॉलर को विश्वसनीय बनाया है। अमेरिका द्वारा अपने सहयोगी देशों को सैन्य संरक्षण भी निवेशकों को अमेरिकी ट्रेजरी में निवेश के लिए प्रेरित करता है।

डॉलर की यह प्रभुता विश्वास पर टिकी है, जो आधुनिक फिएट मुद्रा प्रणाली का आधार है। 1945 से 1971 तक डॉलर सोने से समर्थित था, लेकिन 1971 में राष्ट्रपति रिचर्ड निक्सन ने इस संबंध को समाप्त कर दिया और आयात शुल्क पर 10% अधिभार लगाया, जिससे अराजकता फैली। फिर भी, मुक्त बाजार अर्थव्यवस्था और तकनीकी प्रगति ने अमेरिकी अर्थव्यवस्था और डॉलर को और मजबूत किया।

हालांकि, वर्तमान राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प की अप्रत्याशित शुल्क नीतियों और अनिश्चित व्यवहार ने अमेरिका की विश्वसनीयता को नुकसान पहुंचाया है। विश्व स्वास्थ्य संगठन और यूनेस्को जैसे वैश्विक मंचों से अमेरिका की धीरे-धीरे वापसी और अपने यूरोपीय व एशियाई सहयोगियों को सैन्य संरक्षण न देने की नीति ने डॉलर के प्रति विश्वास को कम किया है। केंद्रीय बैंकरों, नीति निर्माताओं और निवेशकों का भरोसा डगमगा रहा है।

इस बीच, चीन, जो दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है, ने वैकल्पिक भुगतान प्रणाली CIPS विकसित की है, जो लोकप्रियता हासिल कर रही है। रूस और चीन मिलकर अमेरिकी वित्तीय प्रभुत्व को तोड़ने के लिए वैकल्पिक प्रणाली बना रहे हैं। कई देश क्रिप्टोकरेंसी को कानूनी मुद्रा के रूप में मान्यता दे रहे हैं, जो डॉलर के प्रभुत्व के लिए खतरा बन सकता है।

De-Dollarization अब कोरी कल्पना नहीं है; यह जल्द हकीकत बन सकती है। लेकिन चिंता की बात यह है कि कोई अन्य मुद्रा या भुगतान प्रणाली, जैसे SWIFT का विकल्प, अभी डॉलर की जगह लेने को तैयार नहीं है। यह वैश्विक व्यापार और जीडीपी वृद्धि को नुकसान पहुंचा सकता है। यदि विश्वास और स्थिरता बनी रही, तो ही वैश्विक अर्थव्यवस्था इस बदलाव को सहन कर पाएगी।

विकासपुरी विधानसभा क्षेत्र में चल रहे विकास कार्यों की मंत्री पंकज सिंह ने की समीक्षा, एक सप्ताह में मांगी रिपोर्ट

दिल्ली के स्वास्थ्य मंत्री पंकज सिंह ने विकासपुरी विधानसभा क्षेत्र में विकास और सफाई कार्यों की समीक्षा की। उन्होंने अधिकारियों को सड़कों को गड्ढा मुक्त करने नालों की सफाई करने और नांगलोई-नजफगढ़ रोड की मरम्मत करने के निर्देश दिया। इसके साथ ही मंत्री ने एक सप्ताह में विस्तृत रिपोर्ट मांगी।

दिल्ली: प्रदेश के स्वास्थ्य और परिवहन मंत्री व विकासपुरी विधानसभा क्षेत्र से विधायक डॉ. पंकज कुमार सिंह ने लोक निर्माण विभाग के अधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक की।

मंत्री ने शहरी बुनियादी ढांचे और नागरिक सुविधाओं को और बेहतर बनाने के साथ ही विकासपुरी विधानसभा और आसपास के इलाके में चल रहे सभी तरह के विकास कार्यों और सफाई अभियान की बारीकी से समीक्षा की। उन्होंने कहा कि दिल्ली सरकार स्वच्छ, सुरक्षित और नागरिकों के अनुकूल दिल्ली बनाने के लिए प्रतिबद्ध है। विकासपुरी और आसपास के इलाके में बेहतर बुनियादी सुविधाएं देने के लिए प्रयास किए जा रहे हैं।

अभियान समेत विकास कार्यों की प्रगति रिपोर्ट मांगी

मंत्री ने वरिष्ठ अधिकारियों को निर्देश दिया है कि विकासपुरी और आसपास के पूरे इलाके में चल रहे सफाई अभियान समेत सभी विकास कार्यों के बारे में एक हफ्ते के भीतर विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत करें।

साथ ही उन्होंने अधिकारियों को नांगलोई-नजफगढ़ रोड की मरम्मत करने के साथ गंदगी और मलबा तुरंत हटाने के सख्त निर्देश भी दिए।

भारी वर्षा होने पर जलभराव की समस्या से निपटने के लिए डॉ. सिंह ने मानसून शुरू होने से पहले नांगलोई-नजफगढ़ रोड के साथ विकासपुरी विधानसभा क्षेत्र की सीवर और नालों की सफाई कर जल निकासी की सुचारू व्यवस्था लागू करने के निर्देश दिए।

सुपर सकर मशीनों के जरिये सभी सीवर और नालों की साफ-सफाई कराने के भी निर्देश दिए हैं। फुटपाथों की हालात सुधारने का भी निर्देश दिया।

क्षेत्र की सभी सड़कों को तत्काल गड्ढा मुक्त करने के लिए मरम्मत का काम तेज गति से चलाने पर भी बल दिया।

डॉ. सिंह ने अधिकारियों को पूरे क्षेत्र में सड़कों पर लगे पुराने और क्षतिग्रस्त साइन बोर्डों की पहचान कर तुरंत ठीक कराने के भी निर्देश दिए, ताकि ट्रैफिक प्रबंधन के साथ ही नागरिकों की सुरक्षा और बेहतर की जा सके।

थाना जाफराबाद की टीम ने तत्परता दिखाते हुए हथियार के बल पर लूट से जुड़ी घटना को सुलझाया

स्वतंत्र सिंह भुल्लर नई दिल्ली

जिला उत्तर पूर्वी दिल्लीः वारदात में शामिल तीन आदतन अपराधियों को गिरफ्तार कर उनके कब्जे से अपराध में प्रयुक्त पिस्तौल मय एक जिन्दा कारतूस व लूटी गई रकम के 680/- रूपये भी बरामद किये।

दिनांक 22 मई, 2025 की रात लगभग 11:00 बजे,

शिकायतकर्ता

कलाम आज़म, निवासी गली संख्या 15, गुरुद्वारा मोहल्ला, मौजपुर, दिल्ली, उम्र- 45 वर्ष अपने घर के बाहर मोबाइल पर वीडियो देख रहा था। तभी तीन अज्ञात युवक (उम्र 20–22 वर्ष), जिनके चेहरे नकाब से ढके थे, उनके पास पहुंचे और उनका मोबाइल फ़ोन छीनने की कोशिश की मगर जब वह मोबाइल छीनने में असफल रहे तो उनमें से एक युवक, ने पिस्तौल निकाल कर शिकायतकर्ता के पैर के पास फायर किया। इसी दौरान दूसरे आरोपी ने शिकायतकर्ता की जेब से ₹1,700 नकद छीन लिए और शिकायतकर्ता के शोर मचाने पर तीनों आरोपी भाग गए।

इस सन्दर्भ में धारा 309(4)/311/3(5) बीएनएस एवं 27 शस्त्र अधिनियम के तहत थाना जाफराबाद में एक मामला दर्ज कर जांच शुरू की गई।

मामले की विवेचना के दौरान निरीक्षक- सुरेंद्र कुमार, थाना प्रभारी - जाफराबाद के नेतृत्व और एसीपी/भजनपुरा, श्री विवेक त्यागी की निगरानी में प्रधान सिपाही जोगेन्द्र, अशोक व सिपाही उद्धम और आशीष की एक टीम गठित की गई। टीम ने विभिन्न स्रोतों के द्वारा लगातार प्रयासों से जुटाई जानकारी व साक्ष्यों के फलस्वरूप मामले में शामिल तीनों आरोपियों को गिरफ्तार कर उनके कब्जे से वारदात में प्रयुक्त पिस्तौल मय एक जिन्दा कारतूस व लूटी गई रकम के 680/- रूपये भी बरामद किये। आरोपियों की पहचान निम्न के तौर पर की गईः

1. आरिफ उर्फ पाल पुत्रः जिलेदीन निवासीः 12/202, विजय मोहल्ला, मौजपुर, दिल्ली, उम्रः- 21 वर्ष। पूर्व आपराधिक इतिहास- चोरी व शस्त्र अधिनियम के 02 मामलों में

संलिप्त

2. फैज़ान उर्फ साहिल पुत्रः मोहम्मद चांद निवासीः विजय मोहल्ला, दिल्ली, उम्रः 20 वर्ष। पूर्व आपराधिक इतिहास- विभिन्न थानों में लूट, छिनैती व चोरी के 19 आपराधिक मामलों में संलिप्त

3. अनस उर्फ़ अयान पुत्र मुजिबर रहमान, निवासी- विजय मोहल्ला, मौजपुर, दिल्ली, उम्रः- 22 वर्ष। पूर्व आपराधिक इतिहास- छिनैती, चोरी व शस्त्र अधिनियम के 07 मामलों में संलिप्त.

आरोपियों द्वारा अपराध में इस्तेमाल पिस्तौल के स्रोत व आरोपियों की अन्य मामलों में संलिप्तता का पता लगाने के साथ मामले में आगे की जांच जारी है।

विजेंद्र धामा को मयूर विहार जिला भाजपा पुनः अध्यक्ष बनाए जाने पर क्षेत्र में उत्साह की लहर

मुख्य संवाददाता,/ सुषमा रानी

नई दिल्ली: विजेंद्र धामा ने अपने राजनीतिक जीवन में सदैव संगठनहित को सर्वोपरि रखा है और जनसंपर्क, जनसेवा तथा कार्यकर्ता हितों के लिए लगातार सक्रिय रहे हैं। उनकी नियुक्ति से विशेष रूप से युवाओं और उद्यमियों में नई प्रेरणा का संचार हुआ है। मयूर विहार जिले के अनेक सामाजिक, धार्मिक, औद्योगिक और व्यापारी संगठनों ने उन्हें शुभकामनाएं दी हैं। भारतीय जनता पार्टी का स्थानीय नेतृत्व भी उनके साथ कंधे से कंधा मिलाकर कार्य करने के लिए तत्पर है।

विश्व हिंदू राष्ट्र परिषद का संगठन विस्तार एवं भव्य तिरंगा यात्रा का आयोजन, व्यापार मंडल की टीम की हुई घोषणा

परिवहन विशेष न्यूज

आगरा, पंकज जैन।— विश्व हिंदू राष्ट्र परिषद द्वारा संगठन विस्तार एवं भव्य तिरंगा यात्रा का आयोजन महाजन भवन, बालूगंज, थाना रकाबगंज के समीप बड़े धूमधाम से किया गया। इस विशेष अवसर पर व्यापार मंडल की नई कार्यकारिणी की भी घोषणा की गई।

कार्यक्रम का शुभारंभ राष्ट्रीय संरक्षक अविनाश राणा, प्रदेश अध्यक्ष पंडित राजकुमार त्रिवेदी व अन्य सम्मानित अतिथियों द्वारा भगवान श्रीराम, भारत माता, छत्रपति शिवाजी महाराज एवं नेता सुभाष चंद्र बोस के चित्रों पर माल्यार्पण व दीप प्रज्वलन के साथ हुआ।

व्यापार मंडल की नई कार्यकारिणी घोषित

संगठन विस्तार के तहत विश्व हिंदू राष्ट्र परिषद व्यापार मंडल, आगरा महानगर की नई टीम घोषित की गई:

महानगर संरक्षकः बलबंत जैन, महानगर अध्यक्षः राजीव जैन, महामंत्रीः दीपक जैन, उपाध्यक्षः ठाकुर सुरेंद्र सिंह चौहान, मोहित जैन, नितिन जैन,महानगर मंत्रीः प्रशांत कुमार, आकाश जैन, अमित जैन, कार्यालय प्रमुखः रोबिन जैन, प्रचार प्रमुखः चंद्रपाल सिंह, युवा मोर्चा महामंत्रीः रिशु जैन, मंत्रीः सचिन राजपूत, कोषाध्यक्षः नितिन ठाकुर

भव्य तिरंगा यात्रा निकाली गई

कार्यक्रम के उपरांत प्रदेश अध्यक्ष पंडित राजकुमार त्रिवेदी के नेतृत्व में रकाबगंज से छीपीटोला, चीलघर, वैकुंठी देवी महाविद्यालय, बालूगंज चौराहा होते हुए तिरंगा यात्रा का आयोजन किया गया। यात्रा मार्ग पर "भारत माता की जय", "जय श्रीराम", "वंदे मातरम" जैसे जोशीले नारों से वातावरण गूंज उठा। व्यापारियों द्वारा जगह-जगह भव्य स्वागत किया गया।

देशभक्ति से ओतप्रोत उद्बोधन

राष्ट्रीय संरक्षक अविनाश राणा ने कहा, "देश की सीमाओं से अधिक खतरा देश के अंदर मौजूद देशविरोधी तत्वों से है। जो लोग भारत में रहते हुए भी पाकिस्तान की वकालत करते हैं, उनका सामाजिक और व्यापारिक बहिष्कार आवश्यक है।" उन्होंने संगठन की प्रतिबद्धता को दोहराते हुए कहा कि परिषद देश की आंतरिक सुरक्षा के लिए निरंतर प्रयासरत है।

प्रदेश अध्यक्ष पं. राजकुमार त्रिवेदी ने संबोधित करते हुए कहा, "हर सदस्य हमारे परिवार का हिस्सा है। संगठन हर संकट में साथ है। हमें राजनीति में भी हिंदूवादी विचारधारा के नेताओं को समर्थन देना होगा, जैसा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ कर रहे हैं।"

कार्यक्रम का संचालन एवं सम्मान समारोह

कार्यक्रम का संचालन प्रदेश महामंत्री राजेश वर्मा ने किया। सभी नव नियुक्त पदाधिकारियों का राष्ट्रीय संरक्षक अविनाश राणा द्वारा माल्यार्पण व पटका पहनाकर स्वागत किया गया।

विशिष्ट उपस्थिति

इस अवसर पर प्रमुख रूप से उपस्थित रहेः

अविनाश राणा, पं. राजकुमार त्रिवेदी, राजेश वर्मा, दीपक वीर सिंह चौहान, राजवीर सिंह सोनकर, सुरेंद्र सिंह चौहान, सतीश शिवाजी, ज्ञानेंद्र फौजदार, रवि अरोड़ा, रोहित चौधरी, पंकज जैन, शैलेन्द्र यादव, किशन बघेल, सचिन सोनी, प्रशतजीत भोष, भारत वर्मा, कमल किशोर, सौरभ ठाकुर, हिमांशु जैन, आयुष जैन, राजकुमार सर, हेमंत सिसौदिया, धर्मा, ललित कुशवाह, लोकेश कुशवाह, संजय ठाकुर, महेश ठाकुर सहित अन्य गणमान्य लोग।

हिसार के सुशील कुमार 'नवीन' नागरिक पत्रकारिता सम्मान से हुए सम्मानित

फरीदाबाद की मानव रचना विश्वविद्यालय में आयोजित 10वें राज्य स्तरीय पत्रकार सम्मान समारोह में मिनिस्टर विपुल गोयल के हाथों मिला सम्मान

परिवहन विशेष न्यूज

हिसार। वरिष्ठ पत्रकार और स्तंभकार सुशील कुमार 'नवीन' को वर्ष 2024 के लिए नागरिक पत्रकारिता नारद सम्मान से सम्मानित किया गया है। फरीदाबाद की मानव रचना विश्वविद्यालय में आयोजित 10वें राज्य स्तरीय पत्रकार सम्मान और देवर्षि नारद जयंती समारोह में हरियाणा सरकार में कैबिनेट मिनिस्टर विपुल गोयल ने उन्हें यह सम्मान प्रदान किया। समारोह का आयोजन विश्व संवाद केंद्र हरियाणा द्वारा किया गया था। समारोह में विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट पत्रकारिता में अग्रणी रहने वाले हिसार निवासी सुशील कुमार ' नवीन' सहित प्रदेश के 8 पत्रकारों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के उत्तर क्षेत्र प्रचारक जतिन कुमार , वरिष्ठ पत्रकार अमीश देवगन, मानव रचना एजुकेशनल इंस्टीट्यूशन के निदेशक डॉ प्रशांत भल्ला, पीपी स्टील कारपोरेशन महिन्द्रा प्रोडेकटस, आई एम टी, फरीदाबाद के चेयरमैन प्रेम पसरीजा ,स्काईमैप फार्मास्यूटिकल्स प्राइवेट लिमिटेड के मैनेजिंग डायरेक्टर संजय गुप्ता के अतिरिक्त विधायक सतीश फागना आदि उपस्थित रहे।

दो बार मिल चुका है अकादमी सम्मान

पत्रकारिता और साहित्य लेखन क्षेत्र में सुशील कुमार 'नवीन' (सुशील कुमार शास्त्री) राष्ट्रीय स्तर पर प्रमुख स्थान रखते हैं। विभिन्न सामाजिक और सांस्कृतिक संस्थाओं के साथ-साथ 'हरियाणा

संस्कृत अकादमी' (हरियाणा सरकार) से राज्यस्तरीय 'महाकवि बाणभट्ट सम्मान' और 'पुस्तक पुरस्कार से भी सम्मानित किए जा चुके हैं। मूल रूप से जिला भिवानी के निवासी हैं। वर्तमान में हिसार के न्यू मॉडल टाउन एक्सटेंशन में निवास कर रहे हैं। लेखन और पत्रकारिता में अध्ययन काल से ही आपकी रुचि रही है। पत्रकारिता और लेखन में 26 वर्ष का अनुभव है। तीन राष्ट्रीय समाचार पत्रों में संवाददाता, उप संपादक, वरिष्ठ उप संपादक, मुख्य उपसम्पादक पद पर कार्य कर चुके हैं। हिसार दूरदर्शन में सहायक समाचार सम्पादक और संपादकीय सहयोगी के रूप में भी कार्य किया हुआ है। वर्तमान में राष्ट्रीय स्तर के नियमित स्तंभकार हैं। विभिन्न सामयिक विषयों राजनीतिक, सामाजिक सरोकार, समरसता आदि पर 200 से अधिक सम्पादकीय लेख देशभर के विभिन्न राष्ट्रीय समाचार पत्रों में इनके प्रकाशित हो चुके हैं।

गद्य और पद्य दोनों विद्याओं में लेखन करते है। व्यंग्य लेखन में विशेष रुचि है। हिंदी में दो तथा संस्कृत में तीन पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। हिंदी-संस्कृत में 15 से अधिक पुस्तकों का सम्पादन भी किया हुआ है।

राजकीय सेवा के रूप में हरियाणा संस्कृत अकादमी (हरियाणा सरकार) के साथ लंबे समय तक विशेष कवरेज, विशेष लेख (पत्रकारिता-संपादन) इवेन्ट मैनेजमेंट, क्रियेटिव टीम वर्क, पब्लिक रिलेशन, कॉर्डिनेशन आदि विभिन्न क्षेत्र में कार्य करने का इनका विशेष अनुभव है। ये विभिन्न सामाजिक और सांस्कृतिक संस्थाओं द्वारा कई बार सम्मानित किये जा चुके हैं।

वट सावित्री : अखंड सौभाग्य के लिए कानपुर में वट वृक्ष को पूजा

सुनील बाजपेई

कानपुर। अखंड शोभा की कामना के साथ जिले की महिलाओं ने आज यहां वट सावित्री व्रत की पूजा बड़े धूमधाम से की। इसके लिए उन्होंने आज पूरे दिन निर्जला व्रत भी रखा और इसके बाद पूजा की। सामग्री के साथ बरगद के पेड़ के पास पहुंचकर परिक्रमा कर उसकी पूजा आराधना की और अखंड सौभाग्यवती होने का वर भी मांगा पौराणिक वट सावित्री व्रत को मनाने की इस परंपरा में ग्रामीण अंचलों की महिलाओं ने भी बढ़ चढ़कर भाग लिया। इसी क्रम में रतन लाल नगर गुजैनी की विजय लक्ष्मी, नेहा, शिवांगी शालू बाजपेई और मकरंदापुर की शालिनी मिश्रा सिम्पी और मोना मिश्रा आदि ने भी वृत रखने के साथ वट सावित्री की पूजा कर पतियों की लम्बी उम्र की कामना की। इस दौरान घाटमपुर ,सचेंडी, बिठूर ,चौबेपुर, शिवराजपुर , गोविंद नगर ,किदवई नगर, नौबस्ता, बरा और कल्याणपुर आदि थाना क्षेत्रों के बट वृक्षों पर बुजुर्ग महिलाओं की भी संख्या सर्वाधिक रही। इसी के साथ बड़ी संख्या में नवविवाहिताओं ने भी अपने अखंड सौभाग्य की कामना के साथ वटवृक्ष की पूजा अर्चना की।

याद रहे कि ऐसी पौराणिक मान्यता है कि सावित्री ने अपनी साधना से यमराज के हाथों अपने पति सत्यवान के प्राणों का हरण होने से बचा लिया था जिसके बाद से ही वट सावित्री की पूजा अर्चना अखंड सौभाग्य की कामना से पूरे भारत में की जाती है।

भारत की बड़ी आर्थिक छलांग- जापान को पछाड़कर विश्व की चौथी अर्थव्यवस्था बना भारत, अभी 4 ट्रिलियन बना अगला लक्ष्य 5 ट्रिलियन फिर 10 ट्रिलियन डॉलर इकोनामी दूर नहीं

वैश्विक मंचपर भारत की प्रतिष्ठा , निवेशकों की नजरें व विश्वास दोनों बढ़ा है,क्योंकि यह ग्रोथ तात्कालिक नहीं बल्कि टिकाऊ है-एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर कोरोना कहर के बाद हम दुनियाँ के करीब-करीब हर देश की अर्थव्यवस्था में स्थिरता नहीं देख पा रहे हैं, अमेरिका में बैंक ऋण वाले मामले से लेकर इंग्लैंड व श्रीलंका से लेकर पाकिस्तान तक में किसी न किसी रूप में हम अर्थव्यवस्था लेवल पर क्राइसेस देखे हैं ऊपर से वैश्विक आर्थिक मंदी की बात भी मीडिया के अनेक प्लेटफॉर्म्स पर चली थी, परंतु एक बात पूरी दुनियाँ ने रेखांकित की है कि, भारतीय अर्थव्यवस्था स्थिर ही नहीं बल्कि आगे बढ़ती गई और ब्रिटेन को पछाड़कर विश्व की पांचवी अर्थव्यवस्था बना था। आज हम इस विषय पर इसलिए चर्चा कर रहे हैं क्योंकि फिर एक बार भारत ने आर्थिक स्तरपर बड़ी लम्बी छलांग लगाई है, जापान को पछाड़ते हुए दुनियाँ की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गई है। यानें 4 ट्रिलियन डॉलर से बड़ी अर्थव्यवस्था बन चुकी है, यह बात अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) 2025 में कही गई है,जो अभी हाल ही में जारी की गई है यानें भारत अपने पीएम के स्वप्न 5 ट्रिलियन डॉलर अर्थव्यवस्था अभी बस एक कदम पीछे है, मुझे पूरी उम्मीद है करीब एक-दो वर्षों में ही हम यह लक्ष्य हासिल कर लेंगे, फिर हम 10 ट्रिलियन डॉलर का लक्ष्य और विज़न 2047 के लिए तेजी से कार्य करेंगे, जिसका लक्ष्य 25 मई 2025 को एनडीए शासित राज्यों के मुख्यमंत्रीयों व उप मुख्यमंत्रीयों की बैठक में माननीय पीएम महोदय ने मार्गदर्शन दिए हैं।इसके पूर्व 24 मई 2025 को नीति आयोग की 10वीं गवेर्निंग काउंसिल की बैठक में भी यह मंत्र दे चुके हैं। क्योंकि दुनियाँ की अर्थव्यवस्था जब धीमी गति से चल रही है, तो भारत सेवा, मैन्युफैक्चरिंग इंफ्रास्ट्रक्चर व मेडिकल क्षेत्रों में विशेष भूमिका निभा रहा है तथा वैश्विक मंच पर भारत की प्रतिष्ठा, निवेशकों की नजरें व विश्वास दोनों बढ़ाते हैं।चूँकि यह ग्रोथ तात्कालिक नहीं बल्कि टिकाऊ है,इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, भारत की बढ़ी आर्थिक छलांग, ब्रटेन को पछाड़कर विश्व की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनना, भारत अभी 4 ट्रिलियन बना अगला लक्ष्य 5 ट्रिलियन फिर 10 ट्रिलियन डॉलर की इकोनॉमी दूर नहीं !

साथियों बात अगर हम भारत को विश्व की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की करें तो, भारत ने वैश्विक अर्थव्यवस्था में एक और बड़ी छलांग लगाते हुए जापान को पीछे छोड़ दिया है। भारत अब दुनियाँ की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन चुका है।यह जानकारी आईएमफ की वर्ल्ड इकोनॉमिक आउटलुक रिपोर्ट (अप्रैल 2025) में दी गई है। नीति आयोग के सीईओ ने इसकी पुष्टि करते हुए बताया कि भारत की जीडीपी अब 4 ट्रिलियन डॉलर से अधिक हो चुकी है,और ये कोई हमारा अनुमान नहीं, बल्कि आईएमफ के आंकड़े हैं।उन्होंने यह भी कहा कि अगर देश की नीतियां इसी तरह बनी रहीं तो आने वाले 2 से 3 सालों में भारत जर्मनी को भी पीछे छोड़कर तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन सकता है।2023 के आंकड़ों के अनुसार टॉप 10 अर्थव्यवस्थाओं की लिस्ट (जीडीपी के आधार पर): (1)अमेरिका--$27.72 ट्रिलियन (2) चीन--$17.79 ट्रिलियन (3) जर्मनी--$4.52 ट्रिलियन (4) जापान--$4.20 ट्रिलियन (5) भारत--$3.56 ट्रिलियन (6) ब्रिटेन--$3.38 ट्रिलियन (7) फ्रांस--$3.05 ट्रिलियन (8) इटली--$2.30 ट्रिलियन (9) ब्राज़ील-- $2.17 ट्रिलियन (10) कनाडा--$2.14 ट्रिलियन,2025 -26 में भारत की जीडीपी $4.287 ट्रिलियन तक पहुंचने का अनुमान अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष की नई रिपोर्ट के अनुसार 2025-26 में भारत की जीडीपी $4.287 ट्रिलियन तक पहुंचने का अनुमान है, जबकि जापान की जीडीपी $4.186 ट्रिलियन रहने का अनुमान है ।याने भारत अब जापान से आगे निकल चुका है ।अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष ने यह भी कहा कि भारत की विकास दर 2025 में 6.2 पेर्सेंट और 2026 में 6.3 पेर्सेंट रहने का अनुमान है, जो कि बाकी बड़ी अर्थव्यवस्थाओं की तुलना में ज्यादा है। भारत अगले 2-3 वर्षों में जर्मनी को भी छोड़ देगा पीछे अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष ने अनुमान लगाया है कि अगर यही रफ्तार रही तो भारत अगले 2-3 वर्षों में जर्मनी को भी पीछे छोड़कर तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा। इससे स्पष्ट है कि भारत अब सिर्फ जनसंख्या में ही नहीं, अर्थव्यवस्था के मामले में भी दुनियाँ में सबसे आगे निकलने की रेस में है।

साथियों बात अगर हम भारत के चौथी अर्थव्यवस्था पर छलांग लगाने के को अहम् उपलब्धि माननेकी करें तो,यह आर्थिक छलांग भारत के लिए इतनी अहम क्यों है? इसका पहला कारण है वैश्विक मंच पर भारत की स्थिति, जैसे ही भारत ने जापान को पीछे छोड़ा और चौथे नंबर पर आया, निवेशकों की नजरें और विश्वास दोनों बढ़े हैं, दूसरी बात, भारत की युवा आबादी, बढ़ता मध्यम वर्ग और टेक्नोलॉजी हब बनता इको- सिस्टम यह दिखाता है कि यह ग्रोथ सिर्फ तात्कालिक नहीं, बल्कि टिकाऊ है। इसका असर हर नागरिक पर भी पड़ता है,चाहे वह नौकरी के नए अवसर हों, निवेश के रास्ते हों या जीवन स्तर में सुधार, हालांकि चुनौतियां भी हैं, जैसे कि प्रति व्यक्ति आय अब भी कम है, और आयात पर निर्भरता बनी हुई है, लेकिन फिर भी, यह उपलब्धि बताती है कि भारत अब उस मोड़ पर पहुंच चुका है जहां से उसका अगला लक्ष्य,5 ट्रिलियन,फिर 10 ट्रिलियन डॉलर की इकोनॉमी, दूर नहीं रह गया, एक 4 ट्रिलियन डॉलर की इकोनॉमी होना दर्शाता है कि देश में उपभोग बढ़ा है, निवेशकों का भरोसा मजबूत हुआ है,चाहे वह तकनीक हो, सेवा क्षेत्र, मैन्युफैक्चरिंग या इंफ्रास्ट्रक्चर हो हर सेक्टर अपनी भूमिका निभा रहा है, खास बात यह भी है कि यह ग्रोथ ऐसे समय पर हुई है जब दुनियाँ भर की बड़ी अर्थव्यवस्थाएं धीमी गति से चल रही हैं, इसके विपरीत भारत तेज गति से विकास कर रहा है, इसका सीधा मतलब यह है कि देश में एक साल में जितना उत्पादन, सेवाएं और कारोबार होता है, उन सभी की कुल कीमत अब 4 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुंच चुकी है, यह आंकड़ा 'नॉमिनल जीडीपी' कहलाता है और यह किसी भी देश की आर्थिक ताकत का सबसे सीधा माप होता है. इसे डॉलर में मापा जाता है ताकि सभी देशों की तुलना की जा सकेज़, लेकिन सिर्फ एक बड़ी संख्या होना इस खबर को खास नहीं बनाता, असल बात यह है कि यह आंकड़ा भारत की वैश्विक भूमिका, उसकी आर्थिक नीतियों और नागरिकों की सामूहिक मेहनत का नतीजा दिखाता है, इसका मतलब है कि भारत अब सिर्फ 'उभरती हुई अर्थव्यवस्था' नहीं, बल्कि एक 'स्थापित वैश्विक आर्थिक शक्ति' बन चुका है, इतिहास पर नजर डालें तो आजादी के बाद भारत को 1 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने में 60 साल लगे. फिर 2014 तक यह आंकड़ा 2 ट्रिलियन हुआ, 2021 में 3 ट्रिलियन और अब सिर्फ 4 साल में यह 4.3 ट्रिलियन तक पहुंच गया है।यानी भारत अब लगभग हर डेढ़ साल में एक ट्रिलियन डॉलर की बढ़त हासिल कर रहा है।

साथियों बात अगर हम महाराष्ट्र राज्य ने 2047 तक 5 हज़ार अरब डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने का लक्ष्य रखने की करें तो, हर भारतवासी के लिए यह गर्व का पल है हमारा देश जापान को पछाड़कर अब दुनियाँ की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है, सरकारी थिंक टैंक नीति आयोग के सीईओ ने गवर्निंग काउंसिल की 10वीं बैठक के बाद इस बात का ऐलान किया है, खास बात है कि इसी मीटिंग में देश के एक अहम राज्य ने महाराष्ट्र ने 2047 तक 5, हज़ार अरब डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने का लक्ष्य रखा है,दरअसल, यह संकल्प महाराष्ट्र सरकार ने लिया है, और इसके लिए कई कदम उठाए जा रहे हैं, राज्य के मुख्यमंत्री ने शनिवार को नीति आयोग की शासी परिषद की बैठकमें यह बात कही,खास बात है कि अकेले महाराष्ट्र की इकोनॉमी, पाकिस्तान की अर्थव्यवस्था से ज्यादा बड़ी है,पाक की जीडीपी करीब $350-380 अरब डॉलर है, जबकि महाराष्ट्र की जीडीप $550-600 अरब डॉलर है।महाराष्ट्र के सीएम नें कहा कि उनकी सरकार विकास और विरासत संरक्षण के लिए अपनी योजना को लागू करने के लिए पूरी तरह तैयार है, जो 2047 तक विकसित भारत के लिए केंद्र सरकार की योजना के अनुरूप है,आगे कहा कि उनकी सरकार 2030 तक 1,000 अरब डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने पर काम कर रही है। बता दें कि मुंबई, भारत की आर्थिक राजधानी होने के साथ-साथ एशिया का एक बड़ा फाइनेंशियल हब है, पाक में इसकी तुलना में कोई शहर है ही नहीं, पाक का कमर्शियल कैपिटल, कराची भी मुंबई के आगे बहुत फीका है।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि भारत की बड़ी आर्थिक छलांग- जापान को पछाड़कर विश्व की चौथी अर्थव्यवस्था बना भारत, अभी 4 ट्रिलियन बना अगला लक्ष्य 5 ट्रिलियन फिर 10 ट्रिलियन डॉलर इकोनामी दूर नहीं।दुनियाँ की अर्थव्यवस्था जब धीमी गति से चल रही है तो भारत सेवा, मैन्युफैक्चरिंग, इंफ्रास्ट्रक्चर व मेडिसिन क्षेत्र में विशेष भूमिका निभा रहा है।वैश्विक मंच पर भारत की प्रतिष्ठा, निवेशकों की नजरें व विश्वास दोनों बढ़ा है, क्योंकि यह ग्रोथ तात्कालिक नहीं बल्कि टिकाऊ है।

अगले कुछ महीनों में लॉन्च होने की तैयारी कर रहीं ये चार इलेक्ट्रिक एसयूवी, मिलेगी 500 किलोमीटर की रेंज

परिवहन विशेष न्यूज

ICE सेगमेंट के वाहनों के साथ ही Electric Vehicles की मांग भी बढ़ रही है। जिसे देखते हुए कई निर्माताओं की ओर से इस सेगमेंट में वाहनों को पेश और लॉन्च किया जा रहा है। अगर आप भी अपने लिए Electric SUV खरीदने का मन बना रहे हैं तो अगले कुछ महीनों में किस कंपनी की ओर से किस वाहन को लॉन्च किया जा सकता है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारत में प्रदूषण को कम करने के लिए इलेक्ट्रिक वाहनों की मांग लगातार बढ़ रही है। जिसे देखते हुए निर्माताओं की ओर से अलग अलग सेगमेंट में वाहनों को पेश और लॉन्च किया जा रहा है। अगले कुछ महीनों में Electric SUVs सेगमेंट में किस निर्माता की ओर से किस वाहन को पेश और लॉन्च (Upcoming Electric Cars) किया जा सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Tata Harrier EV

टाटा मोटर्स की ओर से इलेक्ट्रिक एसयूवी सेगमेंट में जल्द ही हैरियर ईवी को लॉन्च करने की तैयारी की जा रही है। निर्माता की ओर से इस एसयूवी को तीन जून 2025 को औपचारिक तौर पर भारतीय बाजार में लॉन्च कर दिया जाएगा। इस एसयूवी को सिंगल चार्ज में 500 किलोमीटर तक की रेंज दी जा सकती है। इसके साथ ही इसमें ऑफ रोडिंग क्षमता को भी दिया जाएगा।

Maruti E Vitara

मारुति की ओर से जल्द ही नई एसयूवी के तौर पर E Vitara को लॉन्च करने की तैयारी की जा रही है। निर्माता की ओर से अभी इस बारे में जानकारी नहीं दी गई है कि वह कब तक एसयूवी को लॉन्च करेगी। लेकिन माना जा रहा है कि अगले कुछ महीनों के दौरान इसको औपचारिक तौर पर लॉन्च कर दिया जाएगा। यह मारुति की पहली इलेक्ट्रिक गाड़ी होगी जिसे एसयूवी सेगमेंट में ऑफर किया जाएगा। इस एसयूवी को जनवरी 2025 में हुए ऑटो एक्सपो में पेश किया जा चुका है।

Tata Sierra EV

टाटा की ओर से जनवरी 2025 में हुए ऑटो एक्सपो के दौरान सिएरा को शोकेस किया गया था। जिसके बाद से ही यह उम्मीद की जा रही है कि निर्माता की ओर से जल्द ही इस एसयूवी के इलेक्ट्रिक वर्जन को भी बाजार में पेश किया जाएगा। अभी निर्माता ने औपचारिक तौर पर इसकी घोषणा नहीं की है लेकिन माना जा रहा है कि अगले कुछ महीनों के दौरान Tata Sierra EV को भी पेश किया जाएगा।

Mahindra XEV 7e

महिंद्रा की ओर से भी इस साल अपनी एक और इलेक्ट्रिक एसयूवी को लॉन्च करने की तैयारी की जा रही है। निर्माता की ओर से Mahindra XEV 9e और BE6 के बीच XEV 7e को भी लॉन्च किया जाएगा। उम्मीद की जा रही है कि इसे भी 15 अगस्त के आस-पास भारतीय बाजार में लॉन्च किया जाएगा। सिंगल चार्ज में इस एसयूवी को भी 500 किलोमीटर के आस पास की रेंज दी जा सकती है। साथ ही कई बेहतरीन फीचर्स के साथ इसे भी ऑफर किया जा सकता है।

लॉन्च हुई वोक्सवैगन गोल्फ जीटीआई, जानें कितनी है कीमत, कैसे हैं फीचर्स और कितना दमदार मिलेगा इंजन

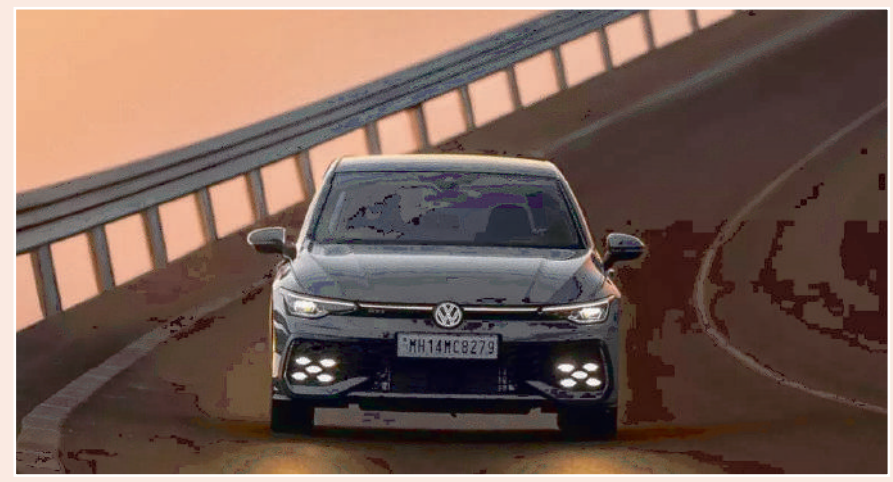

परिवहन विशेष न्यूज

वोक्सवैगन गोल्फ GTI लॉन्च जर्मनी की वाहन निर्माता फॉक्सवैगन की ओर से कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। निर्माता की ओर से प्रीमियम सेगमेंट में Volkswagen Golf GTI को भारतीय बाजार में लॉन्च कर दिया गया है। इसमें कितना दमदार इंजन दिया जा रहा है। किस तरह के फीचर्स दिए गए हैं। किस कीमत पर इसे लॉन्च किया गया है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। जर्मनी की प्रमुख वाहन निर्माताओं में शामिल Volkswagen की ओर से भारतीय बाजार में औपचारिक तौर पर Volkswagen Golf GTI को लॉन्च कर दिया गया है। निर्माता की ओर से इसे किस कीमत पर लॉन्च किया है। किस तरह के फीचर्स और इंजन के साथ इसे ऑफर किया जा रहा है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

लॉन्च हुई Volkswagen Golf GTI

फॉक्सवैगन की ओर से प्रीमियम कार के तौर पर गोल्फ जीटीआई को औपचारिक तौर पर भारतीय बाजार में लॉन्च कर दिया गया है। निर्माता की ओर से इस कार के लिए पहले ही बुकिंग शुरू की गई थी और बुकिंग शुरू होने के कुछ दिनों में ही इसके पहले लॉट के बुकिंग हो गई थी।

कैसे हैं फीचर्स

Volkswagen Golf GTI में कई बेहतरीन फीचर्स (Volkswagen Golf GTI feature) को ऑफर किया गया है। इसमें 12.9 इंच इंफोटेनमेंट सिस्टम, 10.25 इंच डिजिटल इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर, सात स्पीकर के साथ ऑडियो सिस्टम, वायरलेस चार्जर, एपल कार प्ले, एंड्राइड ऑटो, एंबिएंट लाइट्स, पैनोरमिक सनरूफ, थ्री जोन क्लाइमेट कंट्रोल, रियर एसी वेंट्स, की-लैस एंट्री, पुश बटन स्टार्ट, जीटीआई बैजिंग, चारों पहियों में डिस्क ब्रेक, 18 इंच अलॉय व्हील्स, 45 लीटर की क्षमता के पेट्रोल टैंक को दिया जा रहा है।

कितनी होगी सुरक्षित

इसमें सात एयरबैग, एबीएस, ईबीडी, हिल होल्ड असिस्ट, ब्रेक असिस्ट, इलेक्ट्रॉनिक फ्रंट डिफरेंशियल लॉक, एडेप्टिव क्रूज कंट्रोल, लेन असिस्ट, फ्रंट असिस्ट, रियर व्यू कैमरा जैसे सेफ्टी फीचर्स दिए गए हैं।

कितने रंगों का मिलेगा विकल्प

फॉक्सवैगन की ओर से गोल्फ जीटीआई को चार रंगों के विकल्प में ऑफर किया है। इसमें Kings Red Metallic, Oryx White Pearl, Moonstone Grey और Grenadilla Black Metallic शामिल हैं।

कितना दमदार इंजन

Volkswagen Golf GTI में दो लीटर की क्षमता के टीएसआई इंजन मिल रहा है। इस इंजन से कार को 0-100 किलोमीटर की स्पीड हासिल करने में सिर्फ 5.9 सेकेंड का समय लगता है। दो लीटर के इंजन से कार को 265 हॉर्स पावर और 370 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलता है। इसके साथ ही इसमें 7स्पीड डीएसजी ट्रांसमिशन मिलता है।

कितनी है कीमत

Volkswagen Golf GTI की एक्स शोरूम कीमत 53 लाख रुपये (Volkswagen Golf GTI price India) रखी गई है। यह कीमत इंट्रोडक्ट्री कीमत है, जिसमें बाद में बदलाव किया जा सकता है।

किनसे है मुकाबला

फॉक्सवैगन की ओर से इस कार को प्रीमियम कार के तौर पर लॉन्च किया गया है। ऐसे में इसका सीधा मुकाबला मिनी कूपर जैसी कारों के साथ होगा।

खरीदनी है Tata Altroz Facelift कार, किस तारीख से शुरू हो सकती है बुकिंग, जानें पूरी डिटेल

देश की प्रमुख वाहन निर्माताओं में शामिल Tata Motors की ओर से कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। निर्माता की ओर से 23 मई 2025 को औपचारिक तौर पर नई प्रीमियम हैचबैक कार Tata Altroz Facelift को लॉन्च किया गया है। इस कार को खरीदने का मन बना रहे हैं तो किस तारीख से बुकिंग शुरू की जा सकती है। आइए जानते हैं।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में भले ही एसयूवी सेगमेंट के वाहनों को काफी ज्यादा पसंद किया जाता है। लेकिन हैचबैक और प्रीमियम हैचबैक कारों की भी काफी मांग रहती है। टाटा की ओर से प्रीमियम हैचबैक सेगमेंट में ऑफर की जाने वाली Tata Altroz Facelift को खरीदकर घर लाने का मन बना रहे हैं तो किस तारीख से इसके लिए बुकिंग (Tata Altroz Facelift booking) को शुरू किया जा सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

कब से शुरू होगी बुकिंग

टाटा मोटर्स की ओर से प्रीमियम हैचबैक सेगमेंट में Tata Altroz Facelift को 23 मई 2025 को लॉन्च (Altroz launch date) किया गया है। इस कार के लिए बुकिंग को अभी शुरू नहीं किया गया है, लेकिन जल्द ही इसके लिए बुकिंग शुरू की जा सकती है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक टाटा मोटर्स की ओर से अल्ट्रोज फेसलिफ्ट के लिए बुकिंग को दो जून 2025 से शुरू किया जा सकता है।

डीलरशिप पहुंची कार

रिपोर्ट्स के मुताबिक टाटा अल्ट्रोज फेसलिफ्ट के लॉन्च के बाद से ही इस कार को डीलरशिप पर पहुंचाया जा रहा है। जिसके बाद यह डीलरशिप पर देखी जा सकती है। पुराने वर्जन के मुकाबले इसमें कई बड़े बदलाव किए गए हैं।

कैसे हैं फीचर्स

Tata Altroz Facelift में कई नए फीचर्स (Tata Altroz new features) को ऑफर किया जा रहा है। इसमें नए डिजाइन वाली एलईडी डीआरएल, हेडलाइट और कनेक्टिड टेल लाइट्स को दिया गया है। इसके अलावा इसमें नए डिजाइन वाले 16 इंच अलॉय व्हील्स, 360 डिग्री कैमरा, फ्लश डोर हैंडल, 90 डिग्री तक खुलने वाले दरवाजे, तीन टोन इंटीरियर, डी कट स्टेयरिंग व्हील, क्रूज कंट्रोल, एंबिएंट लाइट, रियर डिफॉगर, रियर वाइपर, रेन सेंसिंग वाइपर, 26.03 सेमी इंफोटेनमेंट सिस्टम, वायरलेस एंड्राइड ऑटो, एपल कार प्ले, एयर प्यूरीफायर, 26.03 सेमी डिजिटल इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर, रियल टाइम नेविगेशन, वायरलेस फोन चार्जर, एक्सप्रेस कूल एसी, इलेक्ट्रिक सनरूफ, रियर एसी वेंट जैसे फीचर्स को दिया गया है।

कैसे हैं सेफ्टी फीचर्स

निर्माता की ओर से नई गाड़ी में ब्लाइंड स्पॉट मॉनिटर, ऑटो फोल्ड ओआरवीएम, आइसोफिक्स चाइल्ड एंकरेज, टीपीएमएस, छह एयरबैग, ईएसपी, एबीएस, ईबीडी, ई-कॉल जैसे सेफ्टी फीचर्स दिए गए हैं।

कितने रंगों का विकल प

टाटा अल्ट्रोज फेसलिफ्ट में Dune Glow, Ember Glow, Royal Blue, Pure Grey और Pristine White रंगों के विकल्प के साथ लॉन्च की गई है।

कितनी है कीमत

टाटा मोटर्स की ओर से अल्ट्रोज फेसलिफ्ट की एक्स शोरूम कीमत की शुरुआत 6.89 लाख रुपये से की गई है। यह इसकी इंट्रोडक्ट्री कीमत है। इसके टॉप वेरिएंट की एक्स शोरूम कीमत 11.29 लाख रुपये रखी गई है।

किनसे है मुकाबला

टाटा की अल्ट्रोज फेसलिफ्ट को प्रीमियम हैचबैक सेगमेंट में ऑफर किया जा रहा है। इस सेगमेंट में इसका मुकाबला Maruti Suzuki Baleno, Toyota Glanza, Hyundai i20 जैसी कारों के साथ होगा। वहीं कीमत के मामले में इसे Maruti Suzuki Brezza, Fronx, Hyundai Venue, Kia Sonet, Syros, Mahindra XUV 3XO, Skoda Kylaq जैसी कई कॉम्पैक्ट एसयूवी से भी चुनौती मिलेगी।

भारत के जेवलिन थ्रोअर चैंपियन नीरज चोपड़ा और ऑडी के बीच हुई साझेदारी, कही यह बात

परिवहन विशेष न्यूज

नीरज चोपड़ा ऑडी डील भारत में कई बेहतरीन कारों और एसयूवी की बिक्री करने वाली जर्मनी की वाहन निर्माता Audi ने एक बड़ा कदम उठाया है। निर्माता की ओर से जेवलिन थ्रोअर चैंपियन Neeraj Chopra के साथ साझेदारी की गई है। इस साझेदारी के बाद नीरज चोपड़ा ने क या कहा है। ऑडी के लिए यह कितना महत वपूर्ण कदम हो सकता है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में कई देशों की वाहन निर्माताओं की ओर से अपनी कारों और एसयूवी की बिक्री की जाती है। अपनी बिक्री को बढ़ाने के लिए कई निर्माता बॉलीवुड के सितारों के साथ साझेदारी करती हैं तो कुछ निर्माताओं की ओर से खिलाड़ियों को अपना साझेदार बनाया जाता है। इसी क्रम में ऑडी इंडिया की ओर से किस तरह की साझेदारी किसके साथ की गई है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Audi और Neeraj Chopra के बीच हुई साझेदारी

भारत में जर्मनी की वाहन निर्माता ऑडी की ईकाई ऑडी इंडिया ने जेवलिन थ्रोअर नीरज चोपड़ा के साथ साझेदारी (Neeraj Chopra Audi partnership) कर ली है। दोनों के बीच साझेदारी की औपचारिक घोषणा 26 मई 2025 को की गई है। हालांकि इसके पहले भी नीरज चोपड़ा ऑडी की कार के साथ दिखाई दे चुके हैं।

ऑडी इंडिया प्रमुख ने कही यह बात

ऑडी इंडिया और नीरज चोपड़ा के बीच साझेदारी (Audi brand ambassador India) की घोषणा होने के बाद ऑडी के प्रमुख बलबीर सिंह ढिल्लों ने कहा कि ऑडी में हम उन लोगों के लिए खड़े हैं जो सीमाओं से आगे जाते हैं वो जो सिर्फ़ प्रदर्शन से नहीं, बल्कि उत्कृष्टता की निरंतर खोज से परिभाषित होते हैं। नीरज चोपड़ा उस भावना के प्रतीक हैं। दृढ़ निश्चयी और प्रतिष्ठित, महत्वाकांक्षा से उपलब्धि तक का उनका सफ़र ऑडी के प्रगतिशील डीएनए को दर्शाता है। उनका फ़ोकस, गति और बेजोड़ प्रदर्शन उन्हें हमारे ब्रांड का स्वाभाविक विस्तार बनाता है - एक प्रतीक जो इस बात का प्रतीक है कि नेतृत्व करना क्या होता है, अनुसरण नहीं करना।

नीरज चोपड़ा ने क या कहा

ऑडी इंडिया के साथ साझेदारी करने के बाद ओलंपियन नीरज चोपड़ा (Olympic gold medalist Neeraj Chopra) ने कहा कि मैंने हमेशा ऑडी की प्रशंसा की है - सिर्फ़ कारों के लिए नहीं, बल्कि ब्रांड की पहचान के लिए भी। एक एथलीट के तौर पर, ये मूल्य मेरे साथ गहराई से जुड़ते हैं। चाहे मैदान पर हो या जीवन में, उत्कृष्टता की खोज कभी नहीं रुकती। मैं ऑडी परिवार में शामिल होने और एक ऐसे ब्रांड का प्रतिनिधित्व करने के लिए उत्साहित हूं जो अपने हर काम में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता है।

नया टीवीएस जुपिटर 125 जल्द हो सकता है पेश, डिजाइन में बदलाव के साथ मिल सकते हैं नए फीचर्स, जानें पूरी डिटेल

परिवहन विशेष न्यूज

भारत में कई सेगमेंट में दो पहिया वाहनों की बिक्री करने वाली प्र मुख निर्माता TVS की ओर से जल द ही 125 सीसी सेगमेंट में ऑफर किए जाने वाले TVS Jupiter 125 को अपडेट किया जा सकता है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक नए स कूटर की क या जानकारी सामने आई है। कब तक इसे पेश किया जा सकता है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में टीवीएस मोटर्स की ओर से कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक निर्माता की ओर से 125 सीसी स्कूटर सेगमेंट में ऑफर किए जाने वाले TVS Jupiter 125 के नए वर्जन को जल्द पेश किया जा सकता है। रिपोर्ट्स में इस स्कूटर की और क्या जानकारी सामने आई है। कब तक इसे पेश किया जा सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

TVS Jupiter 125 के नए वर्जन की हो रही तैयारी

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक टीवीएस की ओर से जुपिटर 125 के नए वर्जन को पेश करने की तैयारी की जा रही है। हालांकि अभी टीवीएस की ओर से इस बारे में औपचारिक जानकारी नहीं दी गई है। लेकिन मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक इस स्कूटर को जल्द पेश किया जा सकता है।

क या होंगे बदलाव

रिपोर्ट्स के मुताबिक स्कूटर के डिजाइन में कई बदलाव (TVS scooter design update) किए जा सकते हैं। इसमें भी जुपिटर 110 की तरह ही डिजाइन दिया जा सकता है। जिसमें फ्रंट और रियर में लाइट्स को भी नए डिजाइन के साथ लाया जा सकता है।

मिलेंगे नए फीचर्स

नए TVS Jupiter 125 में कई नए फीचर्स (TVS Jupiter 125 features) को भी ऑफर किया जा सकता है। इसमें डिजिटल इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर, SmartXonnect, एलईडी लाइट्स, फॉलो मी हेडलैंप, हैजार्ड लाइट्स, फ्यूल फिलर कैप जैसे फीचर्स शामिल किए जा सकते हैं।

इंजन में होगा बदलाव ?

रिपोर्ट्स के मुताबिक स्कूटर के इंजन में किसी भी तरह के बदलाव की उम्मीद कम है। इसमें मौजूदा 125 सीसी इंजन को ही दिया जा सकता है। जिससे इसे आठ बीएचपी की पावर और 10.5 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलेगा। इसके साथ ही इसमें iGo तकनीक को भी जोड़ा जा सकता है। इस तकनीक के साथ स्कूटर की पावर थोड़ी बढ़ सकती है। इस इंजन के साथ इसमें सीवीटी गियरबॉक्स भी दिया जा सकता है।

कब तक हो सकता है लॉन्च

निर्माता की ओर से अभी इसकी औपचारिक जानकारी नहीं दी गई है। लेकिन मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक स्कूटर को अगले कुछ महीनों के दौरान भारतीय बाजार में पेश किया जा सकता है।

कितनी होगी कीमत

TVS Jupiter 125 के मौजूदा वर्जन की एक्स शोरूम कीमत 80 हजार रुपये से शुरू होती है। ऐसे में इसके नए वर्जन की कीमत में मामूली बढ़ोतरी की जा सकती है।

किनसे होगा मुकाबला

TVS की ओर से Jupiter 125 को 125 सीसी सेगमेंट में ऑफर किया जाता है। इस सेगमेंट में स्कूटर का सीधा मुकाबला Honda Activa 125, Hero Destini 125, Hero Xoom, Suzuki Access 125 जैसे स्कूटर्स के साथ होता है।

12 के बाद क्या करें? यहां आपका 2025 कैरियर मार्गदर्शन है

विजय गर्ग

सही कैरियर पथ चुनने के लिए 12 वीं के बाद अपने हितों की खोज करें तकनीक, स्वास्थ्य सेवा, रचनात्मक कला या व्यवसाय जैसे क्षेत्रों के साथ अपनी ताकत संरेखित करें कॉलेज, डिप्लोमा या ऑनलाइन पाठ्यक्रमों को विभिन्न शिक्षा विकल्पों के रूप में मानें आपने अभी-अभी अपनी कक्षा 12 की परीक्षाएं पूरी की हैं, आपके जीवन का एक प्रमुख अध्याय बंद हो गया है, और अब एक नया शुरू होने वाला है। यह रोमांचक है, लेकिन चलो ईमानदार रहें: यह भारी भी महसूस कर सकता है। 2025 में उपलब्ध इतने सारे कैरियर विकल्पों, कॉलेज पाठ्यक्रमों और वैकल्पिक रास्तों के साथ, यह चुनना कि आगे क्या करना है जो आपको खो या दबाव महसूस कर सकता है।

लेकिन यहाँ सच्चाई है: आपको अभी सब कुछ पता लगाने की आवश्यकता नहीं है। यह आपके हितों का पता लगाने, अपनी ताकत की खोज करने और पारंपरिक और उभरते दोनों अवसरों पर विचार करने का सही समय है। चाहे आप विज्ञान, रचनात्मक क्षेत्रों, व्यवसाय, या कुछ अद्वितीय के बारे में भावुक हों, आपके लिए एक रास्ता है।

इस गाइड में, हम 2025 में 12 वीं के बाद सबसे चतुर और भविष्य के लिए तैयार कैरियर विकल्पों को तोड़ते हैं, जिसमें आपके जुनून की पहचान करने, अपनी ताकत को समझने और एक सफल और पूर्ण भविष्य के निर्माण की दिशा में व्यावहारिक कदम उठाने की सलाह शामिल है, विजय गर्ग काउंसलर से इनपुट, करियर विशेषज्ञ

यहाँ 2025 के लिए आपका अंतिम कैरियर गाइड है!

1.। अपने हितों की खोज करें

12 वीं के बाद प्रारंभिक चरण यह निर्धारित कर रहा है कि आप किस चीज में रुचि रखते हैं। क्या आप पंप हो जाता है? चाहे वह विज्ञान, कला, खेल, प्रौद्योगिकी, या यहां तक कि व्यवसाय हो, एक ऐसे विषय का चयन करना जिसके बारे में आप भावुक हैं, आपको दीर्घकालिक बनाए रखेगा। अपनी रुचियों को खोजने के कुछ तरीके यहां दिए गए हैं:

विभिन्न व्यवसायों के बारे में पता लगाने के लिए एक कैरियर प्रश्नोत्तरी प्राप्त करें। विभिन्न क्षेत्रों में पेशेवरों के साथ संवाद करें। अन्य करियर का अनुभव करने के लिए कार्यशालाएं या लघु पाठ्यक्रम लें। 2.। एक रास्ता चुनें जो आपकी ताकत के साथ संरेखित हो

अपने हितों को निर्धारित करने के बाद, अपनी ताकत पर विचार करें।

इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी: जैसा कि एआई, रोबोटिक्स और नवीकरणीय ऊर्जा तेजी से प्रमुख हो जाते हैं, तकनीकी करियर बढ़ रहे हैं। यदि कोडिंग, गेम डेवलपमेंट, या ऐप डिज़ाइन आपकी चीज़ है, तो आप सफलता के लिए तैयार हैं।

हेल्थकेयर: चिकित्सा और स्वास्थ्य सेवा कभी भी काम से बाहर नहीं होती है। यदि आप एक डॉक्टर, नर्स, फिजियोथेरेपिस्ट या मानसिक स्वास्थ्य कार्यकर्ता बनना चाहते हैं, तो दुनिया को आपकी अधिक आवश्यकता है।

क्रिएटिव फील्ड्स: कंटेंट क्रिएशन, डिजिटल मार्केटिंग, फैशन और मीडिया बहुत सारे अवसर प्रदान करते हैं। सोशल मीडिया प्रभावित करने वाले, ग्राफिक डिजाइनर और सामग्री लेखक 2025 में संपन्न करियर बना रहे हैं।

व्यवसाय और उद्यमिता: यदि आपको एक उद्यमशीलता की चिंगारी मिली है, तो अपना खुद का व्यवसाय क्यों नहीं शुरू करें? ऑनलाइन स्टोर से ऐप डेवलपमेंट तक, दुनिया आपकी सीप है।

डिजाइन और कला: आंतरिक डिजाइन से दृश्य कला तक, डिजाइन की दुनिया ताजा प्रतिभा की तलाश में है। चाहे आप फैशन डिजाइन, वास्तुकला या यूआई / यूएक्स डिजाइन में रुचि रखते हों, रचनात्मक उद्योग बहुत सारे विकल्प प्रदान करता है।

3.। कॉलेज या वैकल्पिक मार्गों पर विचार करें

पारंपरिक कॉलेज ही एकमात्र विकल्प नहीं है। 2025 में, सफलता के लिए कई रास्ते हैं:

डिग्री पाठ्यक्रम: यदि आप अभी भी एक पारंपरिक डिग्री की ओर झुक रहे हैं, तो अनुसंधान विश्वविद्यालय जो आपके हितों के साथ संरेखित पाठ्यक्रम प्रदान करते हैं।

डिप्लोमा और प्रमाणपत्र: डिजिटल मार्केटिंग, ग्राफिक डिज़ाइन और कोडिंग जैसे क्षेत्रों में अल्पकालिक डिप्लोमा और प्रमाणपत्र बड़ी नौकरी के अवसरों के लिए तेजी से दरवाजे खोल सकते हैं।

ऑनलाइन पाठ्यक्रम: कोर्टेरा, उदमी और लिंक्डइन लर्निंग जैसी वेबसाइटों में लगभग हर विषय में पाठ्यक्रम हैं। यदि आप एक विश्लेषक या एक ग्राफिक डिजाइनर बनना चाहते हैं, तो आप इसे अपनी गति से घर से सीख सकते हैं।

4.। इंटर्नशिप और स्वयंसेवा

दीर्घकालिक पाठ्यक्रम या कैरियर का पीछा करने से पहले, कुछ इंटर्नशिप क्यों नहीं लेते? इंटर्नशिप विभिन्न करियर की वास्तविक जीवन झलक प्रदान करती है और आपको क्षेत्र के भीतर नेटवर्क करने में सक्षम बनाती है। और कुछ इंटर्नशिप भी आपको पूर्णकालिक कर्मचारी बनने के योग्य बनाती हैं।

5.। फ्रीलांस या अपना उद्यम शुरू करें

बहुत सारे सफल उद्यमियों ने अपनी किशोरावस्था में अपने उद्यम शुरू किए या कुछ ही समय बाद उन्होंने हाई स्कूल से स्नातक किया, तो आप क्यों नहीं कर सकते?

6.। निर्णय को जल्दी मत करो

यदि आप सुनिश्चित नहीं हैं कि आप इस बिंदु पर क्या करना चाहते हैं, तो यह पूरी तरह से ठीक है! अपना समय लें, अपने विकल्पों पर शोध करें, और तुरंत करियर बनाने के लिए मजबूर न हों। लोगों के लिए अपने जीवनकाल के दौरान कई बार करियर बदलना काफी आम बात है और यह भी ठीक है।

7.। कैरियर काउंसलर से बात करें

कैरियर काउंसलर आपकी संभावनाओं के माध्यम से आपका मार्गदर्शन करेंगे, व्यक्तित्व परीक्षण प्रदान करेंगे, और आपको उन व्यवसायों की ओर निर्देशित करेंगे जो आपकी क्षमताओं और रुचियों के अनुरूप हैं।

8.। एक खुले दिमाग को बनाए रखें।

नई चीजों की कोशिश करने के लिए ग्रहणशील रहें, चाहे वह नए विषयों जैसे कृत्रिम बुद्धिमत्ता, आभासी वास्तविकता या अंतरिक्ष यात्रा में हो।

12 वीं कक्षा से लेकर करियर तक की छलांग कठिन लग सकती है, लेकिन यह अनंत संभावनाओं से भरा समय भी है। 2025 में, दुनिया इतिहास के किसी भी अन्य बिंदु की तुलना में अधिक वैश्विक, अधिक ऑनलाइन और अधिक अभिनव है। आप जो भी करने का निर्णय लेते हैं" कॉलेज में भाग लें, कार्यबल में प्रवेश करें, या जो आप प्यार करते हैं उसे आगे बढ़ाने के लिए, लगन से काम करने के लिए, और विकास के प्रति ग्रहणशील बने रहने के लिए अपना रास्ता बनाएं।

इसलिए गहराई से सांस लें, इस बात पर विचार करें कि आपको क्या ड्राइव करता है, और इस नए और रोमांचकारी अध्याय को शुरू करने के लिए तैयार करें। आपका भविष्य इंतजार कर रहा है!

अब व्यापार घाटे पर नियंत्रण जरूरी

भारतीय जीडीपी में भारत के जीसीसी का योगदान एक प्रतिशत है और 2030 तक यह 3.5 प्रतिशत हो जाएगा। ऐसे में भारत को सेवा निर्यात और तेजी से बढ़ाने की नई रणनीति के साथ आगे बढना होगा। यह बात ध्यान में रखी जानी होगी कि अब सेवा निर्यात के क्षेत्र में भी लगातार प्रतिस्पर्धा बढ़ रही है। ऐसी स्थिति में भारत से डिजिटल सेवा निर्यात में तेजी से वृद्धि के लिए सेवाओं की गुणवत्ता, दक्षता, उत्कृष्टता तथा सुरक्षा को लेकर और अधिक प्रयास करने होंगे

इन दिनों विदेश व्यापार पर प्रकाशित हो रही राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय रिपोर्टों में कहा जा रहा है कि वैश्विक व्यापार तनाव, टैरिफ में हुई बढ़ोतरी और वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं में व्यवधान जैसी चुनौतियों से भारत के सामने व्यापार घाटा बढने का खतरा है। इस परिप्रेक्ष्य में उल्लेखनीय है कि हाल ही में वाणिज्य मंत्रालय द्वारा जारी आंकड़ों के मुताबिक अप्रैल 2025 में जहां भारत से वस्तु निर्यात बढ़कर 38.49 अरब डॉलर के स्तर पर पहुंच गए, वहीं भारत के वस्तु आयात अधिक तेजी से बढ़कर 64.91 अरब डॉलर के स्तर पर पहुंच गए हैं। ऐसे में वस्तुओं के व्यापार घाटे का आकार 26.42 अरब डॉलर पर रेखांकित हो रहा है। अतएव भारत के द्वारा व्यापार घाटे पर नियंत्रण के लिए रणनीतिपूर्वक आगे बढना जरूरी है। निश्चित रूप से इस समय सूक्ष्म, लघु और मझौले उद्यम (एमएसएमई) जहां देश से निर्यात बढ़ाने में नई भूमिका निभा सकते हैं, वहीं आयात नियंत्रण में भी मददगार हो सकते हैं। इस समय नए व्यापार युग के बदलाव के दौर में भारत के एमएसएमई के लिए चुनौतियों के बीच दुनिया में आगे बढने के ऐतिहासिक अवसर भी हैं और ये उद्योग वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला में प्रतिस्पर्धी बन सकते हैं।

इसमें कोई दो मत नहीं है कि टैरिफ वार से एमएसएमई क्षेत्र को जो झटका लग रहा है, उस झटके से एमएसएमई के उबारने के लिए जहां एक ओर सरकार के द्वारा एमएसएमई के समक्ष दिखाई दे रही चुनौतियों के समाधान के लिए रणनीति बनाकर निर्यातकों को सहारा देना होगा, वहीं एमएसएमई क्षेत्र के उद्यमियों और निर्यातकों को भी नई चुनौतियों के मद्देनजर तैयार होना होगा। इस परिप्रेक्ष्य में यह बात महत्वपूर्ण है कि सरकार निर्यातकों को सहारा देने के लिए 2250 करोड़ रुपए के निर्यात संवर्धन मिशन को तेजी से लागू करने और बिना रेहन के कर्ज दिए जाने की योजना बना रही है। साथ ही चालू वित्त वर्ष 2025-26 में एमएसएमई को दिए जाने वाले कर्ज का लक्ष्य पिछले वर्ष की तुलना में करीब 20 फीसदी बढ़ाकर 17.5 लाख करोड़ रुपए किया गया है। इसी तरह एमएसएमई क्षेत्र भी नए व्यापार युग की सच्चाइयों को समझते हुए नवाचार, प्रतिस्पर्धा, क्षमता में सुधार तथा शोध की डगर पर आगे बढने की तैयारी कर रहा है। चूंकि पहलगाम में हुए आतंकी हमले के बाद पाकिस्तान के खिलाफ भारत की कार्रवाई पर चीन पाकिस्तान के साथ खड़ा दिखाई दिया है और चीन ने न केवल पाकिस्तान को पूर्ण समर्थन दिया, वरन चीन ने पाकिस्तान को मिसाइलों सहित विभिन्न हथियारों की सीधी आपूर्ति भी की। चीन अप्रत्यक्ष रूप से भारत को तेजी से आर्थिक शक्ति बनने से रोकना चाहता है। ऐसे में अब भारत के साथ शत्रुपूर्ण आचरण कर रहे चीन से वर्ष-प्रतिवर्ष तेजी से बढ़ते हुए आयातों को नियंत्रित करके चीन को भी आर्थिक सबक दिया जाना जरूरी है। हाल ही में प्रकाशित नवीनतम आंकड़ों के मुताबिक चीन के साथ द्विपक्षीय कारोबार में भारत लगातार घाटे की स्थिति में बना हुआ है। पिछले वित्त वर्ष 2024-25 में चीन को भारत का निर्यात 14.5 प्रतिशत घटकर 14.25 अरब डॉलर रह गया, जबकि 2023-24 में यह 16.66 अरब डॉलर था। इतना ही नहीं, चिंताजनक यह भी है कि चीन से 2024-25 में आयात 11.52 प्रतिशत बढ़कर 113.45 अरब डॉलर हो गया, जबकि 2023-24 में यह 101.73 अरब डॉलर था।

चीन के साथ व्यापार घाटा पिछले वित्त वर्ष में करीब 17 प्रतिशत बढ़कर 99.2 अरब डॉलर हो गया, जो 2023-24 में 85.07 अरब डॉलर था। चीन 2024-25 में 127.7 अरब डॉलर के द्विपक्षीय व्यापार के साथ भारत का दूसरा सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार बना रहा। दोनों देशों के बीच 2023-24 में 118.4 अरब डॉलर का द्विपक्षीय व्यापार हुआ था। चीन पर निर्भरता कम करने के जो रणनीतिक कदम उठाए गए हैं, उनका अभी जमीनी तौर पर कोई विशेष असर नहीं दिखा है। अब आतंकी देश पाकिस्तान को विश्व मंच पर खुला समर्थन दे रहे, चीन के साथ कोई छह माह पूर्व भारत ने मित्रता की जिस राह को आगे बढ़ाया था, अब उस राह को रोकते हुए चीन के साथ कारोबार असंतुलन को कम करने के लिए हरसंभव कदम उठाने जाने जरूरी हैं। निःसंदेह भारत की नई वैश्विक व्यापार रणनीति के तहत नए मुक्त व्यापार समझौतों और द्विपक्षीय व्यापार समझौतों से व्यापार घाटे में कमी लाई जानी होगी। भारत के द्वारा ब्रिटेन के साथ किए गए मुक्त व्यापार समझौते के बाद अब अमेरिका और यूरोपीय यूनियन के साथ-साथ मुक्त व्यापार समझौतों को 31 दिसंबर 2025 तक पूर्ण किए जाने के लक्ष्य की ओर तेजी से आगे बढना होगा। इस समय भारत और अमेरिका के बीच द्विपक्षीय कारोबार समझौते (बीटीए) के शुरुआती चरण के लिए वार्ता तेजी से आगे बढ़ रही है। हाल ही में अमेरिका के वित्त मंत्री स्कॉट बेसेंट ने व्हाइट हाऊस में एक प्रेस कांफ्रेंस में कहा कि पूरी दुनिया में भारत एक ऐसे पहले देश के रूप में सामने आया है, जो अमेरिका के साथ सबसे पहले टैरिफ पर प्रभावी वार्ता करते हुए द्विपक्षीय कारोबार समझौते को तेजी से अंतिम रूप देने की डगर पर आगे बढ़ रहा है। भारत के द्वारा ओमान, कनाडा, दक्षिण अफ्रीका, इजराइल, भारत गल्फ कंट्रीज काउंसिल सहित अन्य प्रमुख देशों के साथ भी एफटीए को शीघ्रतापूर्वक अंतिम रूप दिया जाना होगा। इसमें कोई दो मत नहीं है कि देश से सेवा निर्यात (सर्विस एक्सपोर्ट) बढ़ाकर व्यापार घाटे में कमी लाई जा सकती है। इस समय पूरी दुनिया में भारत सेवा निर्यात की डगर पर छलांगे लगाकर आगे बढ़ रहा है। भारत को सेवा निर्यात की नई वैश्विक राजधानी के रूप में रेखांकित किया जा रहा है। हाल ही में वाणिज्य मंत्रालय के द्वारा प्रकाशित आंकड़ों के मुताबिक पिछले वित्तीय वर्ष 2024-25 में भारत का सेवा निर्यात करीब 387.5 अरब डॉलर का रहा है। भारत में बड़ी बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा ग्लोबल कैपेबिलिटी सेंटर्स (जीसीसी) की तेजी से नई स्थापनाओं के कारण भी सेवा निर्यात तेजी से बढ़ रहा है। हाल ही में नैसकॉम और जिनोव की ओर से जारी इंडिया जीसीसी, लैंडस्केप रिपोर्ट के मुताबिक जीसीसी के लिए भारत दुनिया का सबसे बड़ा हब बनते हुए दिखाई दे रहा है। फिलहाल देश में 1700 जीसीसी हैं जिनसे 20 लाख से अधिक लोगों को रोजगार मिल रहा है।

देश में जीसीसी का बाजार आकार 5.4 लाख करोड़ रुपए का है और यह 2030 तक 8.4 लाख करोड़ रुपए का होगा। दुनिया के 50 प्रतिशत जीसीसी सिर्फ भारत में हैं। भारतीय जीडीपी में भारत के जीसीसी का योगदान एक प्रतिशत है और 2030 तक यह 3.5 प्रतिशत हो जाएगा। ऐसे में भारत को सेवा निर्यात और तेजी से बढ़ाने की नई रणनीति के साथ आगे बढना होगा। यह बात ध्यान में रखी जानी होगी कि अब सेवा निर्यात के क्षेत्र में भी लगातार प्रतिस्पर्धा बढ़ रही है। ऐसी स्थिति में भारत से डिजिटल सेवा निर्यात में तेजी से वृद्धि के लिए सेवाओं की गुणवत्ता, दक्षता, उत्कृष्टता तथा सुरक्षा को लेकर और अधिक प्रयास करने होंगे। हम उम्मीद करें कि भारत सरकार बढ़ते हुए व्यापार घाटे को नियंत्रित करने के लिए एमएसएमई की मजबूती, चीन से आयात नियंत्रण, मुक्त और द्विपक्षीय व्यापार समझौतों, सेवा निर्यात बढ़ाने तथा निर्यात के लिए संभावित नए देशों में कारगर प्रयासों की रणनीति को मुट्ठी में लेकर आगे बढने का प्रयास करेगी।

-डा. जयंती लाल भंडारी

पुलिस जांच के काले सफे

फिर एक जांच के दरवाजे सीबीआई के शो केस में खुलेंगे और हिमाचल पुलिस के संदर्भ मुखौटे बन जाएंगे। फिर मुखौटे खुल रहे हैं और जिन परिस्थितियों में विमल नेगी मौत का मामला सीबीआई तक पहुंच रहा है, वहां माननीय हाई कोर्ट की टिप्पणियां पूरे पुलिस महकमे की चादर में अनेक छेद ढूंढ लेती हैं। पुलिस मुख्यालय की अकड़ में और शिमला के एसपी जांच की पकड़ के बीच कई पलटबाजियां और जांच के विरोधाभास सामने आ रहे हैं। विमल नेगी मौत जांच से पहले भी गुडिया कांड और उस दौरान हिरासत में मौत के चिथड़ों ने एक पूरी एसआईटी को जेल में ठूंस दिया था, तो अब ऐसा ही भयावह परिदृश्य पुनः उभरा है। माननीय अदालत ने पुलिस बनाम पुलिस की मलिनता, अफसरों के बीच एक दूसरे को पटकनी देने की साजिशें और जांच में होते विषयांतर को गहनता से पकड़ कर आइंदा के लिए सीबीआई के हवाले पूरे प्रकरण को कालिमा समेत सौंप दिया है। इस कसूर की गवाही में पुलिस कितनी कसूरवार होगी, यह अब एक अलग कहानी के रूप में सामने आएगी। एक मौत के पीछे हजारों दुश्मन हिमाचल की ही व्यवस्था को कुतर रहे थे या एक निजी मामले की गर्त में पुलिस के सितारे डूब रहे हैं। संदेहों की मोटी परत पावर कारपोरेशन की उन फाइलों से निकल चुकी है, जिनसे होकर ओंकार शर्मा की रिपोर्ट निकली है। यहां कई सफे काले हैं, हाथ साफ करने वालों के सबूत काले हैं। एक मौका था, जांच का एहसास था और एक होनहार अधिकारी की मौत का सदमा अगर व्यवस्था को पुकार रहा था, तो अदालत में पुलिस की फजीहत न होती। मृतक नेगी के घरवालों की अपील और दलील ने अगर पुलिस जांच के कान न पकड़े होते, तो केस में रूपांतरित आशंकाएं कई धड़ों में न बंटती। अदालत के सख्त लहजे का सारांश केवल सीबीआई जांच नहीं, बल्कि पुलिस बनाम पुलिस भी है।

आश्चर्य यह कि एसपी शिमला अदालत से बाहर निकल कर विभागीय वीरता पर निशाने साध रहा है। पुलिस अधिकारी की प्रेस वार्ता को बहादुरी का सबूत या ईमानदारी का सर्टिफिकेट मानें या बिलासपुर की झील में डूबी कहानी को खोज के लाएं। जांच के कर्ई जिन्न मंडरा रहे हैं, तेरे कातिल पर्दे में किसे डरा रहे हैं। पावर कारपोरेशन की असली 'पावर' की गुत्थियों में ओंकार शर्मा की रिपोर्ट जहां पहुंची थी, वहां असली और नकली चेहरों के बीच सीबीआई शायद किसी रहस्य को पकड़ लाए या विरोधाभास की पुलिस जांच के बीच पुलिस के 'रंग' का भेद हटा पाए। जो भी हो हिमाचल में पुलिस की वर्दी बार-बार सीबीआई के घाट पर धोई जा रही है। ऐसे में पुलिस को ही पुलिस की पड़ताल करनी पड़ेगी। बड़े रैंक के अधिकारियों के बीच महकमा बार-बार इंगित कर रहा है कि बेड़े में सवार ही खुद नैया को डुबो रहे हैं। पुलिस की प्रतिबद्धता, तौर-तरीकों, अनुशासन व कत्र्तव्य परायणता पर फिर एक बार चोट लगी है। ऐसे में सरकार के लिए भी जांच के आने वाले लम्हे सियासत से भरे होंगे। कुछ तो हाथ जलेंगे, इस धुएं को जब-जब कुरेदा जाएगा। अदालत ने मामले के मर्म से निकाल कर नेगी परिवार को राहत का पैगाम, न्याय का नया आयाम और निष्पक्ष जांच के आधार सौंपे हैं। कानून व्यवस्था का एक 'पहलगांव' हिमाचल में भी दिखाई दे रहा है, जहां विमल नेगी की लाश के सामने पुलिस अधिकारी महकमे की मर्यादा, सिद्धांत और ईमानदारी को भूल कर एक दूसरे पर तोहमतों का अखाड़ा बना रहे हैं। इस मौत के कई सबूत पुलिस तलाश सकती थी, लेकिन हैरानी यह कि लाश के हाथ से पेन ड्राइव चुराने वाले किरदार में पुलिस को शर्म नहीं आ रही।

कुल्फ़ी

महीना खत्म होने पर था, पर खत्म होने में नहीं आता था। सोच रहा था कि महीने के प्रथम पन्द्रह दिन कैसे झटपट खत्म हो जाते हैं और तनख़्वाह भी उन्हीं पन्द्रह दिनों के साथ ही कैसे गायब हो जाती है। मुझे चटाई चुभ रही थी। करवट बदलकर पीठ पर हाथ फेरा तो चटाई के निशान पीठ पर उभर आए थे।

'मलाई वाली कुल्फ़ी!' ठंडी-सर्द आवाज़ में कुल्फ़ी वाले ने हांक लगाई। उसकी आवाज़ कितनी ही देर मेरे कानों में गूंजती रही। दूध जैसी सफेद कुल्फ़ी साकार मेरी आंखों के सामने नाचने लगी। मेरे मुंह में पानी आ गया। लेकिन मैं बेबस था। पैसे की तंगी हवालात की तंगी से भी बड़ी होती है। मैंने अपने दिल की चाह से बचने के लिए 'कुल्फ़ी' शब्द की उत्पत्ति पर विचार करने की आड़ ले ली। 'कुल्फ़' का अर्थ होता है- ताला, सुनारों ने गहनों में इसको लगाकर 'कुल्फ़' से 'कुल्फ़ी' बना दिया। कुल्फ़ी को भी टीन के सांचों में बन्द करके जमाया जाता है, इसलिए कुल्फ़ी। इस प्रकार धीरे-धीरे पता नहीं कब, नींद ने कुल्फ़ी से मुझे मुक्त कर दिया।

मेरी दोपहर की नींद अभी पूरी भी नहीं हुई थी कि मेरे छोटे बेटे ने मुझे झंझोड़कर जगा दिया। मैं खीझा हुआ था, पर बेटे की तोतली आवाज़ ने मुझे शान्त कर दिया।

'दा जी, कितनी आवाज़ें लगाईं, तुम जागते ही नहीं।'

'हां-हां, तू क्या कहता है, बता भी।' मैंने कुछ उतावला होकर पूछा।

'तका... एक तका दे दो, दा जी!'

पर टका मेरे पास था ही नहीं। मेरे पास आज कुछ भी नहीं था। जून माह की छब्बीस तारीख़ थी। घर का खर्च, बाज़ार की उधारी की साख पर बमुश्किल चल रहा था।

'तका दो भी न दा जी।'

बाहर मुरमुरे वाला ऊंची आवाज़ में हमारे दरवाजे के आगे हांक लगा रहा था। कोई उत्तर सोचने की खातिर समय निकालने के लिए मैंने कहा, 'काका, तू टके का क्या करेगा?'

'खर्च करूंगा, और मैंने क्या करना है तके का?'

मुझे पता है, पहली जंग के बाद बहुत महंगाई हो गई थी, हमे धेला खर्च करने के लिए मिलता था और धेले के मसद्दी राम से लाए हुए छोले खत्म होने में ही नहीं आते थे। अब तो एक आना में भी उतने छोले नहीं मिल सकते थे और मेरी आमदनी, मेरे पिता की आमदनी के पासंग भी नहीं थी, हालांकि मेरी पढ़ाई मेरे पिता से कई गुणा अधिक थी। मैं दुनिया की आर्थिक स्थिति और इस स्थिति को बनाये रखने वाले धन-कुबेरों पर विचार करने लग पड़ा।

बाहर से पुनः 'मुरमुरा छोले' की हांक गूंजी और साथ ही बेटे ने कहा, 'तका दो भी न, दा जी।'

'टका खराब होता है।' मैंने हालात से पैदा हुई बदहवासी में कहा।

'हूं, तका भी कहीं खराब होता है, दा जी? तके का मुरमुरा आता है।'

'मुरमुरा खराब होता है।' मैंने कहा और बाकी की बात अभी मेरे मुंह में ही थी कि बेटे ने कहा, 'मुरमुरा तो मीठा होता है।'

इस दलील का मेरे पास कोई जवाब नहीं था। मैं भी मीठे का लोभी हूं, पर फिर भी मैंने अपनी कोरी होशियारी जताते हुए कहा, 'मुरमुरे से खांसी लग जाती है, बच्चू।'

'तुम तका दे दो। मुझे नहीं लगती खांसी।'

लड़का मचलता प्रतीत होता था। टका मेरे पास था ही नहीं। मैंने बेटे को टालने के लिए पता नहीं क्यों उसको कह दिया, शायद बड़ा लालच देकर भुलाने के लिए...

'मुरमुरा गन्दा होता है! हम शाम को बाज़ार से कुल्फ़ी खाएंगे।'

मुरमुरे-छोले वाला अब टल चुका था। बेटा मेरी आशा के विपरीत कुल्फ़ी खाने के लिए मान गया था। समझा, बला टली। मैंने सोचा, कहीं कोई और छाबड़ीवाला न आ जाए। सो, मैं कपड़े पहनकर कड़कती धूप में बाहर निकल गया और सड़कों पर समय क़त्ल करता रहा। कीमती समय मैं एक टके की मांग से बचने के लिए नष्ट करता रहा था।

मैं अपने मालिक से क्यों नहीं कहता कि मेरा इतने में गुजारा नहीं होता, पर सुनेगा कौन? अकेले व्यक्ति की आवाज़ चाहे कितनी ही ऊंची क्यों न हो, सुनी नहीं जाती। ज़रूरतमंद इकट्ठे हो नहीं सकते। अगर हो जाएं तो उन्हें इकट्ठा रहने नहीं दिया जाता ताकि सब मिलकर मांग न करें। मांग करने पर कई बार नौकरी से जवाब मिल जाता है। मैं डर गया। बेरोजगारी के भयानक भविष्य ने मुझे कंपा दिया। कायरों की भांति मैं सदैव चुप रहा था और अब भी चुप रहने का ही मैंने फैसला किया।

शाम को यह समझकर कि बेटा जल्दी सो जाता है, मैं दबे पांव घर पहुंचा। आवाज़ नहीं लगाई, केवल कुण्डा ही खटखटाया। ऊपर से आवाज़ आई, 'दा जी, आ रहा हूं।' और कुछ ही देर में बेटे ने आकर दरवाज़ा खोला।

'दा जी, कुल्फी खाने जाओगे?' उसने आशा भरी आवाज़ में पूछा।

'ऊपर चल, ऊपर।' मैंने कहा।

बेटा निराश होकर आगे-आगे चल पड़ा। चारपाई पर बैठकर बेटे को गोद में लेकर मैंने प्यार से कहा, 'अब तो रात हो गई है, कुल्फ़ी कल खाएंगे।'

आशा के विपरीत बेटा चुप रहा। कितनी ही देर आसमान की ओर देखता कुछ सोचता रहा। फिर बोला, 'दा जी... ताले (तारे) लुपये (रुपये) होते हैं न, बला (बड़ा) भाई कहता था, ताले लुपये होते हैं, तो दा जी सारे लुपये हमाले कोठे पे क्यों नहीं गिल पड़ते?'

मैंने यह कहकर कि 'तारे रुपये नहीं होते' मानो उसके स्वर्ग को ढाह दिया। वह चारपाई पर लेट गया

और आसमान की ओर देखते-देखते आख़िर सो ही गया।

दूसरे दिन काम पर मैं अपने साथियों से कुछ मांगने की कोशिश करता रहा, पर हिम्मत नहीं हो रही थी। मांगना बहुत ही कठिन काम है। मौत जितना दुःख होता है मांगने में।

आख़िर एक साथी से मैंने तीन रुपये ले ही लिए। जब घर आया तो बेटा दोपहर की नींद ले रहा था। रोटी खिलाते समय पत्नी ने तीन रुपये झटक लिए। आधा मन लकड़ियां, शाम की सब्ज़ी, नमक, तेल आदि में बेटे के जागने से पहले तीन रुपये खत्म हो गए। मैंने कहा कि बेटे को कुल्फ़ी खिलानी है, पर उसने कह दिया, 'इसे बड़ा याद रहता है। मैं टका दे दूंगी मुरमुरे के लिए।'

बेटे ने जागते ही कुल्फ़ी मांगी। चीख़-पुकार मच गई। कल वाला मुरमुरा और टका मंजूर नहीं था। आख़िर शाम को कुल्फ़ी खिलाने का वायदा करके छुटकारा पाया और बेटे ने टका मेरे से जमा करवा दिया। शाम से पहले ही मैं किसी से मिलने का बहाना बनाकर बाहर निकल गया और फिर देर रात घर में घुसा। बेटे को सोया देख मैंने राहत की सांस ली। रोटी खिलाते हुए पत्नी ने बताया कि बेटा बहुत देर तक मेरा इंतज़ार करता रहा था। मैं बेटे के संग लेटकर बहुत बेचैन रहा। नींद आ ही नहीं रही थी, पर आख़िर पता नहीं कब आ गई। नींद तो कहते हैं कि कांटों पर भी आ जाती है।

आधी रात के बाद का समय था। बेटा सोया हुआ कुछ बेचैन प्रतीत होता था। उसने दो-तीन बार पेट पर टांगें मारी थीं। अब उसने बांह उलटाकर मेरे मुंह पर मारी। जाग तो मैं पहले ही रहा था, अब चेतन हो गया। बेटा कुछ बुदबुदाया। मेरी समझ में कुछ न आया। फिर वह ज़ोर-ज़ोर से बुदबुदाया 'कुल्फ़ी... कुल्फ़ी दा... जी, कुल्फ़ी।' मैं विह्वल हो उठा। 'जाग रहे हो,' पत्नी ने कहा और यह जानकर कि मैं जाग रहा हूं, उसने कहना जारी रखा, 'कमबख़्त, सोया-सोया भी कुल्फ़ी मांगता है।' मेरे ऊपर मानो बिजली गिर पड़ी थी। मैं चुप रहा और बेटा भी चुप हो गया।

सुबह उठकर बेटे ने कुल्फ़ी की कोई मांग नहीं की। मेरे काम से लौटकर आने पर भी उसने मुझसे कुछ नहीं मांगा। रोटी खाकर मैं दोपहर की नींद लेने के लिए लेट गया, उसी चुभने वाली चटाई पर और उधार न ले सकने की असफलता पर झुंझलाता रहा।

फिर मुझे नींद आ गई। मैं अभी अर्द्धनिद्रा में ही था कि गली में किसी कुल्फ़ी वाले ने हांक लगाई, 'ठंडी कुल्फ़ी! मज़ेदार कुल्फ़ी!' मैं जाग गया। बेटा मेरे करीब रबड़ की फटी हुई बत्तख से खेल रहा था। दूसरी आवाज़ पर उसके कान ख़ड़े हो गए। बत्तख को फेंककर वह दौड़ पड़ा। दरवाज़े के पास जाकर वह खड़े होकर बाहर देखने लगा। मैंने सोचा, अब वह मुझे जगाने आएगा, पर वह वहीं खड़ा रहा। फिर वह बाहर की ओर चल दिया। मैं चुपचाप उठकर दरवाज़े की ओट में जा खड़ा हुआ। कुल्फ़ी वाला सामने वाले शाह जी के लड़के को कुल्फ़ी निकालकर देने के काम में लगा था। यह लड़का गली का बलवान लड़का था और अपने से छोटे लड़कों को हमेशा पीटा करता था। यह कोई आठ बरस का था और हमारे बेटे से करीब तीन साल बड़ा था। मेरा बेटा सिपाहियों की तरह टांगे फैलाये कमर के पीछे हाथ बांधे खड़ा था। कुल्फ़ी की तरफ वह गौर से देख रहा था। लेकिन उसने कुल्फ़ीवाले से कुल्फ़ी नहीं मांगी थी। जैसे ही कुल्फ़ीवाले ने शाह के लड़के के हाथ में कुल्फ़ी की प्लेट रखी, मेरा बेटा उस पर झपटकर पड़ा। वो गिरी प्लेट, वो गई कुल्फ़ी, फलूदा और चम्मच और नाली में गिरा शाह का लड़का। किसी विजेता की तरह मेरा बेटा उसकी ओर देखता रहा। शाह का लड़का गुस्से में उठा, कुल्फ़ी का हुआ नुकसान और अपनी हेठी जैसे उसमें नया जोश भर रही थी। जैसे ही वह उठा, मेरे बेटे ने फिर उसको ऐसी ठोकर मारी कि वह फिर मोरी में जा गिरा और चीखने-चिल्लाने लगा। कुल्फ़ी वाला बेटे की ओर चांटा मारने के लिए बढ़ा। मैंने दौड़कर बेटे को उठा लिया। कुल्फ़ी वाले ने शाह के लड़के को उठाया। शाहनी जो किसी का उलाहना नहीं सुनती थी, आज हमारे घर उलाहना देने आई। मेरे बेटे का शरीर तप रहा था। पत्नी ने कहा, 'आ गया कमबख़्त! तू अब उलाहने भी लाने लगा?' और मारने के लिए उसने अपना हाथ हवा में उठाया।

मैंने उसे रोकते हुए कहा, 'कुछ बांट पगली! कायर बाप के घर एक बहादुर बेटा पैदा हुआ है!'

-विजय गर्ग

डिजिटल 'फॉलोअर्स' के पीछे भागते युवा — असली पहचान कहाँ है?

[सोशल मीडिया की जंजीरों में जकड़ी पीढ़ी: आत्म-सम्मान की मृत्यु]

डिजिटल युग की चकाचौंध में खोया हुआ युवा आज एक अनजानी दौड़ का हिस्सा बन चुका है। यह दौड़ न तो मैराथन है, न ही कोई रचनात्मक यात्रा। यह फॉलोअर्स, लाइक्स और रीपोस्ट्स की भूख है, जो स्क्रीन की चमक में उसे अपनी असल पहचान से दूर ले जा रही है। एक समय था जब पहचान का आधार व्यक्ति के विचार, उसकी मेहनत और उसकी नैतिकता होती थी। आज वह आधार डिजिटल आंकड़ों की रेत पर टिका है — एक ऐसी नींव जो हर नए ट्रेंड के साथ हिल जाती है। यह सिर्फ सोशल मीडिया की कहानी नहीं, बल्कि एक पीढ़ी की आत्मा की खोज की कहानी है, जो अपनी सच्चाई को स्क्रॉल करने में भूल चुकी है।

सोशल मीडिया ने दुनिया को जोड़ा, लेकिन इसने व्यक्तिगत पहचान को एक बाजार में तब्दील कर दिया। इंस्टाग्राम की रील्स, टिकटॉक के वीडियो और ट्विटर के 280 अक्षरों में युवा अपनी कहानी को समेटने की कोशिश करते हैं। लेकिन यह कहानी उनकी नहीं, बल्कि उस छवि की होती है, जो दूसरों को प्रभावित करने के लिए गढ़ी जाती है। एक 18 साल का लड़का अपनी कविता की गहराई से नहीं, बल्कि अपनी प्रोफाइल की 'एस्थेटिक' से आंका जाता है। एक युवती की प्रतिभा उसके डांस मूव्स की वायरलिटी से मापी जाती है। यह दौड़ फॉलोअर्स की संख्या बढ़ाने की नहीं, बल्कि आत्म-सम्मान को खोने की है। विश्वसनीय अध्ययनों, जैसे कि जर्नल ऑफ सोशल एंड क्लिनिकल साइकोलॉजी (2023) में प्रकाशित एक शोध के अनुसार, सोशल मीडिया के अत्यधिक उपयोग से युवाओं में आत्म-संदेह और चिंता के मामले 30% तक बढ़े हैं। यह आंकड़ा सिर्फ एक संख्या नहीं, बल्कि उस खोखलेपन की गवाही है, जो डिजिटल स्वीकार्यता की चाह में उपजता है।

इस दौड़ का सबसे बड़ा नुकसान यह है कि यह वास्तविक उपलब्धियों को हाशिए पर धकेल देता है। एक युवा वैज्ञानिक, जिसने अपनी मेहनत से कोई नया आविष्कार किया, अगर वह सोशल मीडिया पर 'वायरल' नहीं हुआ, तो उसकी उपलब्धि को नजरअंदाज कर दिया जाता है। वहीं, एक मेडियोकर कंटेंट क्रिएटर, जिसने सही समय पर सही हैशटैग का इस्तेमाल किया, रातोंरात स्टार बन जाता है। यह प्रक्रिया न केवल प्रतिभा को कमतर करती है, बल्कि युवाओं को यह संदेश देती है कि सतही चमक ही असली कामयाबी है। प्यू रिसर्च सेंटर (2024) की एक रिपोर्ट बताती है कि 65% युवा मानते हैं कि सोशल मीडिया पर उनकी मौजूदगी उनकी सामाजिक स्थिति का सबसे बड़ा पैमाना है। यह एक खतरनाक सोच है, जो उन्हें अपनी आंतरिक शक्ति और मौलिकता से दूर कर रही है।

इस सबके बीच मानसिक स्वास्थ्य की कीमत सबसे भारी पड़ रही है। डिजिटल दुनिया में हर कोई एक परफेक्ट जिंदगी का दिखावा करता है। इंस्टाग्राम की चमचमाती तस्वीरें, लक्जरी लाइफस्टाइल और परफेक्ट बॉडी वाली प्रोफाइल्स युवाओं को एक असंभव मानक की ओर धकेलती हैं। तुलना की यह आग फोमो (FOMO - Fear of Missing Out) को जन्म देती है, जो धीरे-धीरे डिप्रेशन और चिंता में बदल जाता है। लैंसेट साइकियाट्री (2022) के एक अध्ययन के अनुसार, 16-25 आयु वर्ग के 40% युवा सोशल मीडिया के कारण आत्म-मूल्य की कमी से जूझ रहे हैं। यह आंकड़े सिर्फ एक चेतावनी नहीं, बल्कि एक समाज के रूप में हमारी असफलता का सबूत हैं, जो युवाओं को उनकी असल पहचान से जोड़ने में नाकाम रहा है।

सोशल मीडिया ने संवाद को भी बदल दिया है। पहले लोग अपनी भावनाओं को पत्रों, कविताओं या लंबी बातचीत में व्यक्त करते थे। आज एक इमोजी, एक स्टिकर या एक 'सीन (seen)' ही भावनाओं का जवाब बन गया है। गहराई खो गई है, और उसकी जगह ले ली है सतही ट्रेंड्स ने। वाइरल, ट्रेंडिंग जैसे हेशटैग्स अब विचारों से ज्यादा महत्वपूर्ण हो गए हैं। यह बदलाव सिर्फ तकनीकी नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और नैतिक भी है। हम एक ऐसी पीढ़ी तैयार कर रहे हैं, जो अपनी कीमत लाइक्स में तलाशती है, न कि अपने विचारों की गहराई में।

लेकिन क्या यह सब अपरिवर्तनीय है? क्या युवा इस डिजिटल भंवर से बाहर निकल सकता है? जवाब हां में है, बशर्ते वह साहस दिखाए। असली पहचान को खोजने के लिए सबसे पहले उस नकली मुखौटे को उतारना होगा, जो सोशल मीडिया ने चढ़ाया है। यह मुखौटा फॉलोअर्स की संख्या, परफेक्ट सेल्फी और वायरल स्टोरीज़ का है। युवाओं को यह समझना होगा कि उनकी असल ताकत उनकी प्रोफाइल की चमक में नहीं, बल्कि उनके विचारों, मूल्यों और कर्म में है। एक साधारण सा कदम, जैसे कि सोशल मीडिया से कुछ समय के लिए दूरी बनाना, उनकी आंतरिक शांति को लौटा सकता है। यूनिवर्सिटी ऑफ पेनसिल्वेनिया (2023) के एक प्रयोग में पाया गया कि सोशल मीडिया का उपयोग सीमित करने वाले युवाओं में तनाव और आत्म-संदेह में 25% की कमी आई। यह छोटा-सा बदलाव उनकी असल पहचान को फिर से जीवंत कर सकता है।

इसके साथ ही, समाज और शिक्षा प्रणाली को भी अपनी जिम्मेदारी निभानी होगी। स्कूलों और कॉलेजों को चाहिए कि वे युवाओं को सिर्फ डिग्री या नौकरी के लिए तैयार न करें, बल्कि उन्हें आत्म-मूल्य और आत्म-विश्वास की शिक्षा दें। परिवारों को चाहिए कि वे बच्चों को स्क्रीन टाइम से ज्यादा उनके सपनों और विचारों को समय दें। हमें यह सिखाना होगा कि असली प्रभाव वह नहीं, जो लाइक्स से मिलता है, बल्कि वह जो किसी के जीवन में सकारात्मक बदलाव लाता है।

यह सवाल हम सबके सामने है — क्या हम उस रोशनी की तलाश में हैं, जो स्क्रीन की चमक से नहीं, बल्कि आत्मा की सच्चाई से आती है? यह यात्रा आसान नहीं, लेकिन जरूरी है। युवा को खुद से यह पूछना होगा कि वह कौन है — एक डिजिटल छवि, जो हर नई पोस्ट के साथ बदल जाती है, या वह आत्मा, जो अपने विचारों और कर्मों से दुनिया को बदल सकती है। जब वह इस सवाल का जवाब ढूंढ लेगा, तब उसे फॉलोअर्स की जरूरत नहीं पड़ेगी। क्योंकि असली पहचान वह है, जो भीतर से चमकती है, बिना किसी फिल्टर के, बिना किसी हैशटैग के। और यही वह चमक है, जो न केवल उसे, बल्कि पूरे समाज को रोशन कर सकती है।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

नेताओं के बिगड़े बोल के लिए राजनीतिक दल ही जिम्मेदार

योगेंद्र योगी

हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू ने सरकार को गिराने की कोशिशों से नाराज होकर कांग्रेस के बागियों को काले नाग और बिकाऊ करार दिया था और अपने चुनावी अभियान के दौरान भी बिकाऊ बनाम टिकाऊ के नारे का इस्तेमाल किया था।

देश की एकता, अखंडता और सम्प्रभुता के लिए सीमा पार से मिलने वाली चुनौती का भारत ने न सिर्फ वर्तमान में बल्कि पूर्व में बखूबी जवाब दिया है। भारत बाहर से मिलने वाली हर चुनौती से निपटने में सक्षम है। ऑपरेशन सिंदूर से भारत ने यह दृढ़ता विश्व में साबित कर दी है। देश के सामने असली दिक्कत अंदरुनी है। अंदरुनी चुनौतियां से निपटना आसान नहीं हैं, वह भी यदि ऐसी हरकतें नेताओं और जनप्रतिनिधियों द्वारा की जाए। जिन पर हर सूरत में देश की आन-बान-शान को ऊंचा रखने की जिम्मेदारी हो, यदि वो ही निम्नस्तरीय कृत्य पर उतर आएं तो सवाल खड़े होना लाजिमी है। मध्यप्रदेश के मंत्री विजय शाह ने भारत की जांबाज सेना की अफसर और जज्बे से देश की आईकोन बनी कर्नल सोफिया के बारे अनर्गल टिप्पणी करके कई सवालों को जन्म दिया है।

ऐसा नहीं है कि मंत्री विजय शाह ऐसा कृत्य करने वाले अकेले नेता हैं, जिनकी वजह से देश का नीचा देखना पड़ा है। ऐसा करने वाले नेता की लंबी फेहरिस्त है, जिनके बिगड़े बोल से देश और समाज का सौहार्द्र प्रत्यक्ष या परोक्ष तौर पर प्रभावित हुआ है। मध्यप्रदेश के इस मंत्री को बेशक सजा मिल जाए, इसके बाद भी बड़ा सवाल यही है कि आखिर वह कौनसी वजह है कि नेताओं की जुबान काबू में नहीं रहती। सवाल यह भी है कि वैमनस्य का जहर घोलने वाले ऐसे नेताओं के मामले में कानूनी कार्रवाई का इंतजार क्यों किया जाता है। राजनीतिक दल आगे बढ़ कर कार्रवाई की नजीर पेश क्यों नहीं करते। यदि राजनीतिक दलों ने नेताओं के लिए कोई लक्ष्मण रेखा खींची होती और उसका उल्लंघन करने पर कार्रवाई निर्धारित कर रखी होती तो ऐसी नौबत नहीं आती।

दूसरे शब्दों में कहें तो राजनीतिक दलों की शह ही ऐसे नेताओं के बिगड़े बोलों के लिए जिम्मेदार है। इनकी अनदेखी करने से नेताओं में प्रलाप करने की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। विगत चुनावों में यदि नेताओं पर दलों ने लगाम कसी होती तो ऐसी पुनरावृत्ति नहीं होती। लोकसभा चुनाव 2024 में प्रचार के दौरान कई बार भाषायी मर्यादा टूटती दिख रही, किन्तु किसी भी पार्टी ने इस पर चिंता नहीं जताई और नेताओं को म्यान में रहने की हिदायतें नहीं दी। कांग्रेस के नेता रणदीप सुरजेवाला ने भाजपा की मथुरा से सांसद हेमा मालिनी के बारे में अमर्यादित टिप्पणी की थी, जिसके बाद चुनाव आयोग की तरफ से कार्रवाई भी की गयी, किन्तु कांग्रेस ने सुरजेवाला के खिलाफ महिलाओं की मर्यादा को लेकर कोई कार्रवाई नहीं की। कांग्रेस की राष्ट्रीय प्रवक्ता सुप्रिया श्रीनेत के सोशल मीडिया अकाउंट से एक्ट्रेस कंगना रनौत को लेकर एक आपत्तिजनक पोस्ट शेयर की। इसके जवाब में कंगना ने कहा कि हर महिला गरिमा की हकदार है। हालांकि, विवाद बढने पर सुप्रिया श्रीनेत के अकाउंट से पोस्ट डिलीट कर दी। चुनाव आयोग की तरफ से उन्हें नोटिस दिया गया था। कंगना रनौत भी नाम लेकर निजी टिप्पणी करने में पीछे नहीं रहीं। कंगना ने राहुल गांधी और मंडी सीट से उनके प्रतिद्वंद्वी विक्रमादित्य सिंह को क्रमशः 'बड़ा पप्पू और 'छोटा पप्पू कहा। उन्होंने अपने चुनाव प्रचार अभियान के दौरान पूर्व प्रधान मंत्री जवाहरलाल नेहरू और उनके पिता मोतीलाल नेहरू से लेकर इंदिरा गांधी और सोनिया गांधी सहित गांधी-नेहरू परिवार को निशाना बनाया और कांग्रेस को 'एक बीमारी और अंग्रेजों द्वारा छोड़ी गई दीमक करार दिया, जो उनके मुताबिक 2014 तक देश को खा रही थी। हिमाचल की प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष प्रतिभा ने रनौत को परी करार देते हुए कहा है कि लोग केवल उन्हें देखने आते हैं। प्रतिभा के बयान पर तीखी प्रतिक्रिया देते हुए कि कंगना की मां आशा रनौत ने कहा था कि वरिष्ठ कांग्रेस नेता ये हुस्न परी है, और ये क्या चीज है जैसी टिप्पणियां कर रही हैं और यह भूल गई हैं कि उनके घर में भी बेटियां हैं। उन्होंने कहा कि एक मां होने के नाते मुझे दुख होता है और मुझे लगता है कि ऐसी टिप्पणियों से अन्य मांएं भी दुखी हो रही हैं।

हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू ने सरकार को गिराने की कोशिशों से नाराज होकर कांग्रेस के बागियों को काले नाग और बिकाऊ करार दिया था और अपने चुनावी अभियान के दौरान भी बिकाऊ बनाम टिकाऊ के नारे का इस्तेमाल किया था। बिहार भाजपा के प्रमुख सम्राट चौधरी के बयान पर काफी विवाद देखने को मिला था। सम्राट चौधरी ने कहा था कि टिकट बेचने में लालू यादव ने अपनी बेटी को भी नहीं छोड़ा। पहले अपनी बेटी की किडनी ली और उसके बाद लोकसभा चुनाव का टिकट दे दिया। सम्राट चौधरी ने कहा था कि आगामी चुनाव में मैदान में उतरने से पहले लालू ने अपनी बेटी की किडनी ले ली। राजद की तरफ से इसे लेकर जमकर आपत्ति जतायी गयी थी। गिरिराज सिंह के बयान पर भी विवाद हुआ था। केंद्रीय मंत्री सिंह ने कहा था कि मुस्लिम महिलाओं द्वारा बुर्के की आड़ में मतदान को प्रभावित करने व रोकटोक पर विवाद करने की घटनाएं सामान्य हैं। चुनाव आयोग के निर्देशानुसार पोलिंग एजेंटों द्वारा आपत्ति करने पर उनकी पहचान सुनिश्चित करने से किसी की धार्मिक भावनाएं आहत नहीं होती है।

उनके इस बयान को लेकर भी हंगामा देखने को मिला था। सैम पित्रोदा अपने बयानों को लेकर विवादों में रहे हैं। पित्रोदा ने रंगभेद को लेकर बयान दिया था। उन्होंने कहा था कि भारत में पूर्व के लोग चाइनीज और दक्षिण के लोग साउथ अफ्रीकन जैसे दिखते हैं। कांग्रेस ने पित्रोदा के इस बयान से किनारा कर लिया। सैम पित्रोदा के बयान को लेकर कांग्रेस ने कहा कि भारत की विविधता की ये परिभाषा मंजूर नहीं है। यह गलत है। लेकिन पीएम नरेंद्र मोदी और बीजेपी ने इस मुद्दा बना लिया था। ये उदाहरण बताते हैं कि जहरीले बोलों पर नेताओं को कड़ा सबक मिला होता आज यह हालात पैदा नहीं होते कि कोई मंत्री जैसे संवैधानिक ओहदे पर बैठ कर सेना की जांबाज, देशभक्त और देश की महिलाओं के लिए अग्रणी महिला सैन्य अधिकारी के खिलाफ अमर्यादित बोल बोलने का साहस जुटा पाता। राजनीतिक दल ही सख्त कार्रवाई नहीं करके ऐसे नेताओं को हवा देते हैं। दलों ने गरिमा की यदि कोई सीमा-रेखा तय नहीं की तो आगे भी ऐसी बदजुबानी से देश और समाज शर्मसार होता रहेगा।

राष्ट्र बड़ा या धर्म? सांसद मियां अल्ताफ अहमद ने देश सेवा पर उर्स की तैयारियों को तवज्जो क्यों दी?

नीरज कुमार दुबे

आप यह जानकर चौंक जाएंगे कि एक सांसद महोदय ऐसे भी हैं जिन्होंने अंतिम समय में सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल में शामिल होने से इंकार कर दिया था। उनके इंकार की बात तब सामने आई जब वह विदेश मंत्रालय की ओर से प्रतिनिधिमंडल को दी जाने वाली ब्रीफिंग में नहीं पहुँचे थे।

भारत ने दुनिया के 33 देशों में अपने सात सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडलों को भेजा है ताकि पाकिस्तानी आतंक की वीभत्सता से सभी को परिचित कराया जा सके। इस समय सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल विभिन्न देशों में वहां की सरकारों और प्रमुख लोगों को पाकिस्तानी आतंकवाद और भारत के आत्मरक्षा के अधिकार के बारे में जानकारी दे रहे हैं और उन देशों का समर्थन हासिल कर रहे हैं। देखा जाये तो इस समय सभी राजनीतिक दलों के बीच जो एकता नजर आ रही है उसी के चलते हम दुनिया के सामने मजबूती से अपना पक्ष रख पा रहे हैं। सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडलों में शामिल सांसद देश की सेवा के लिए यह अवसर प्रदान करने के लिए मोदी सरकार का शुक्रिया अदा कर रहे हैं।

लेकिन आप यह जानकर चौंक जाएंगे कि एक सांसद महोदय ऐसे भी हैं जिन्होंने अंतिम समय में सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल में शामिल होने से इंकार कर दिया था। उनके इंकार की बात तब सामने आई जब वह विदेश मंत्रालय की ओर से प्रतिनिधिमंडल को दी जाने वाली ब्रीफिंग में नहीं पहुँचे थे। उनका यह कहना था कि मेरा पहले से एक कार्यक्रम तय है इसलिए मैं सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल का हिस्सा नहीं बन पाउंगा। यहां सवाल उठता है कि देश हित से बड़ा और राष्ट्र की सुरक्षा से बड़ा और क्या काम या कार्यक्रम हो सकता है जिसमें उन सांसद महोदय का भाग लेना जरूरी हो गया था?

हम आपको बता दें कि जिन सांसद महोदय ने प्रतिनिधिमंडल का हिस्सा बनने से इंकार किया वह हैं जम्मू और कश्मीर नेशनल कॉन्फ्रेंस (एनसी) के अनंतनाग-राजौरी से सांसद मियां अल्ताफ अहमद। उन्होंने सर्वदलीय संसदीय प्रतिनिधिमंडल से खुद को अलग कर लिया है, जो वर्तमान में पांच देशों के दौरे पर है। सांसद अल्ताफ अहमद को डीएमके सांसद कनिमोझी करुणानिधि के नेतृत्व वाले प्रतिनिधिमंड में शामिल होना था। वर्तमान में यह प्रतिनिधिमंडल रूस में है और वहां से यह स्लोवेनिया, ग्रीस, लातविया और स्पेन जायेगा।

हम आपको बता दें कि जम्मू-कश्मीर के वरिष्ठ एनसी नेता और प्रभावशाली धार्मिक व्यक्तित्व मियां अल्ताफ ने इस प्रतिनिधिमंडल में शामिल नहीं होने का कारण पूर्व निर्धारित प्रतिबद्धताओं को बताया है। उन्होंने कहा है कि हर वर्ष जून के पहले सप्ताह में गांदरबल जिले के कंगन स्थित वांगथ में मनाए जाने वाले उर्स के मद्देनज़र मैं प्रतिनिधिमंडल में शामिल नहीं हो पाऊंगा। हम आपको बता दें कि मियां अल्ताफ अहमद बाबा जी साहिब लारवी वांगथ की दरगाह के सज्जादा नशीन (धार्मिक संरक्षक) भी हैं, जहां हर साल उर्स के दौरान हज़ारों श्रद्धालु आते हैं। उन्होंने कहा है कि हां, मेरी पार्टी ने मेरा नाम प्रतिनिधिमंडल के लिए भेजा था, लेकिन आगामी उर्स से जुड़ी कुछ जिम्मेदारियों के कारण मैं इस दौरे में शामिल नहीं हो पा रहा हूं। उन्होंने कहा है कि विदेश मंत्रालय और उनकी पार्टी को इस बारे में सूचित कर दिया गया है और उन्हें इस पर कोई आपत्ति नहीं है।

बहरहाल, यहां सवाल उठता है कि मियां अल्ताफ अहमद ने राष्ट्र हित से ज्यादा उर्स को महत्व क्यों दिया? उर्स तो हर वर्ष लगता है लेकिन देश ने सेवा के लिए अल्ताफ अहमद को इस समय पुकारा था। सवाल उठता है कि क्या राष्ट्र से ज्यादा धर्म को तवज्जो देने वाले लोगों को राजनीति में होना चाहिए? सवाल उठता है कि क्या राष्ट्र सुरक्षा से ज्यादा धार्मिक मेले की तैयारियों को तवज्जो देने वाले व्यक्ति को जनप्रतिनिधि के रूप में चुना जाना चाहिए? सवाल यह भी उठता है कि जिस कश्मीर के पहलगाम में आतंकवादी हमला हुआ क्या वहां के सांसद को विदेशों में जाकर इस निर्मम हत्याकांड के मुद्दे पर पाकिस्तान को आड़े हाथ नहीं लेना चाहिए था?

(इस लेख में लेखक के अपने विचार हैं।)

बदलते युग का नया तमाशा: संस्कारों की सिसकियाँ

(समाज में बदलती नैतिकता, रिश्तों की उलझन और तकनीक के नए असर पर)

समाज में अब बेटी की निगरानी नहीं, दादी और सास की होती है। तकनीक और आज़ादी के इस युग में रिश्तों की परिभाषा बदल गई है। जहाँ पहले लड़कियों की सुरक्षा सबसे बड़ी चिंता थी, अब वही महिलाएं अपनी आज़ादी के साथ नई दुनिया की खोज में हैं। पुरुषों की निगरानी पर स्त्रियाँ भी चौकस हो गई हैं। रिश्ते अब उम्र और संस्कार से नहीं, टेक्स्टिंग फ्रिक्वेंसी से तय होते हैं। यह व्यंग्य समाज के बदलते चेहरे को हँसते-हँसते सोचने पर मजबूर करता है — आखिर अब कौन भागेगा?

– प्रियंका सौरभ

कभी सामाजिक डर और परिवार की इज्जत की चिंता बेटियों की निगरानी का आधार हुआ करती थी। ये वो दौर था जब बेटी की सादगी, उसके रहन-सहन पर कड़ी नजर रखी जाती थी। मोहल्ले के चौपाल में सबसे बड़ा मुद्दा यही होता था कि ₹लड़की भाग गई,₹ जैसे कोई बड़ी दुर्दशा हुई हो। आज का जमाना अलग है। आज तकनीक और आज़ादी के ज़माने में चौकसी की दिशा ही बदल चुकी है। अब निगाहें बेटियों पर नहीं, बल्कि दादी, सास, भाभी, और काकी पर टिक गई हैं। यही नहीं, अब ₹कौन भागा?₹ यह सवाल बेटियों के लिए नहीं, बल्कि घर की "अनुभवी महिलाओं" के लिए बन गया है। यह नया सामाजिक हकीकत है, जिसमें हंसी-ठिठोली के बीच गंभीर सवाल भी छिपे हैं।

कुंवारी नहीं, कुलवधुएँ फरार हैं!

एक समय था जब समाज में कुंवारी लड़कियों का भागना गंभीर मामला माना जाता था। वह भागना कहीं कोई भटकाव नहीं, बल्कि "इज्जत" का संकट होता था। माँ-बाप, रिश्तेदार, मोहल्ला — हर कोई इसी चर्चा में मशगूल रहता। पर आज स्थिति पूरी तरह बदल गई है। आज बेटियाँ करियर बना रही हैं, आत्मनिर्भर बन रही हैं। पढ़ाई, नौकरी, प्रतियोगिता की भागदौड़ में उनकी "भागना" के मायने ही बदल गए हैं। मगर घर की ₹अनुभवी महिलाएँ₹ — यानी माँ, भाभी, काकी, दादी — व्हाट्सएप पर ₹मिसिंग यू माई सनशाइन₹ के स्टेटस लगाकर, 'लोकेशन ऑफ' कर फ़िक्र से दूर कहीं निकल जाती हैं। कहीं बाहर घूमने, दोस्तों से मिलने, तो कहीं नए-नए 'फ्लर्ट' की खोज में।

यह स्थिति देखना है तो बहुत ही हास्यास्पद और एक बार सोचने पर चिंताजनक भी है। जो पीढ़ी संस्कारों की किताबें पढ़ाकर लड़कियों को संभालती थी, वही अब खुद संस्कारों को नया अर्थ दे रही है।

चारित्रिक उलटफेर का युग

वह दौर याद करें जब "संस्कार" का मतलब था संयम, पाबंदी, और परम्परागत नैतिकता। आज की दादी इंस्टाग्राम और फेसबुक पर अपनी फोटो शेयर करती है, योगा के बजाय 'यार' के साथ मिलने चली जाती है। भाभी सिर्फ पारिवारिक रीति-रिवाज नहीं निभाती, बल्कि 'लीडर' की तरह अपने दोस्ती और डेटिंग लाइफ को सेलिब्रेट करती है। इन सब बदलावों में परंपराओं का टूटना या फिर उनका नया अवतार — दोनों ही बातें सच हैं। जो पीढ़ी नैतिकता का फण्डामेंटल थी, आज वही 'गुप्त चैटिंग', 'सीक्रेट ट्रिप्स' और 'मोडर्न फ्रेंडशिप' के बीच उलझी हुई दिखती है।

पुरुषों की निगरानी पर स्त्रियों का 'रिवर्स स्ट्राइक'

पुराने समय में परिवार और समाज में पुरुषों का नियंत्रण और निगरानी महिलाओं पर केंद्रित थी। पति, भाई, पिता के लिए महिलाओं की गतिविधियाँ सबसे महत्वपूर्ण होती थीं। मोबाइल नहीं था तो आंखों की चौकसी, गुप्त बातचीत की जांच। आज की पीढ़ी में यह संतुलन पलट गया है। पति अब मोबाइल पासवर्ड छिपाने के बजाय पूछते हैं — "तुमने किसका मैसेज डिलीट किया?" बेटा घबराकर सोचता है, "माँ कहीं प्यार में तो नहीं पड़ गई?" यानी अब पुरुष भी 'निगरानी' की जाल में फंसे हैं। यह 'रिवर्स स्ट्राइक' कई बार घर के माहौल को कंफ्यूज़िंग बना देती है। यह वही घर है जहां रिश्तों की पाबंदी होती थी, आज वही रिश्ते 'टेक्स्टिंग फ्रिक्वेंसी', 'लोकेशन शेयरिंग', और 'वीडियो कॉल' की पकड़ में हैं।

नई पीढ़ी की जिम्मेदारी बनाम पुरानी की आज़ादी

जिस बेटी की जिंदगी कभी पहरेदारी का विषय होती थी, आज वही बेटी घर की हर छोटी-बड़ी जिम्मेदारी निभा रही है। EMI के किस्ते से लेकर बच्चों की पढ़ाई तक, हर घर की 'संचालन' में वह लगी हुई है। और घर की बुजुर्ग महिलाएँ — सास 'वेलनेस रिट्रीट' पर हैं, दादी 'रील' बनाती हैं और सोशल मीडिया पर सक्रिय हैं। जीवन में आज़ादी का मतलब बदल गया है — अब 'फ्रीडम' की परिभाषा पुराने संस्कारों से हटकर सोशल मीडिया और डिजिटल दोस्ती तक सीमित है।

रिश्तों की दिशा बदल रही है

रिश्ते अब उम्र, जाति, या सामाजिक स्तर से नहीं, बल्कि 'इच्छा' और 'संपर्क की आवृत्ति' से जुड़ते हैं। पहले रिश्ते स्थायी होते थे, अब 'टेक्स्टिंग फ्रिक्वेंसी', 'इमोशनल स्टेटस' और 'लास्ट सीन ऑन/ऑफ' ही रिश्तों की डिग्री तय करते हैं। स बदलाव में परिवार के मूल्यों की भी धज्जियां उड़ रही हैं। माता-पिता की भूमिका एक गाइड की बजाय 'फ्रेंड' की हो गई है। घर के अंदर अब बेटियों की नहीं, दादियों की निगरानी ज़रूरी हो गई है। यह एक विचित्र सामाजिक उलझन है, जो हमारी 'आज़ादी' और 'संस्कार' की जुगलबंदी को समझने पर मजबूर करती है।

तकनीक: विकल्प या भ्रम?

तकनीक ने जीवन को आसान बनाने के साथ-साथ रिश्तों को जटिल भी किया है। व्हाट्सएप, फेसबुक, इंस्टाग्राम जैसे प्लेटफ़ॉर्म्स ने संवाद के नए ज़रिया दिए, मगर वे पारिवारिक नज़दीकियों में दूरी भी लाए। जहाँ पहले चाय की प्याली के साथ घंटों बैठकर बातें होती थीं, आज वही बातचीत 'डबल क्लिक' और 'डिलीट' बटन के बीच सीमित हो गई है। इसके चलते रिश्तों की स्थिरता कम, उलझनें ज़्यादा बढ़ीं।

सामाजिक विडंबना और नया यथार्थ

इस सारे बदलाव का सबसे बड़ा असर यह है कि समाज की पुरानी धारणा — जहां बेटियों की इज्जत और व्यवहार को केंद्र माना जाता था — अब धुंधली पड़ गई है। अब एक 'अधिकृत' सवाल यह है कि क्या बेटी भागी है या दादी? क्या परिवार में बेटियों के लिए पहले जैसी पाबंदी रह गई है? या अब 'जिम्मेदार' और 'आजाद' महिलाएं अपनी जगह ले चुकी हैं? यह सवाल हँसी के साथ-साथ सामाजिक चिंतन का विषय भी है। आज के समय में रिश्ते, परिवार और नैतिकता के नए मायने तलाशने होंगे।

यह समाज की व्यंग्यात्मक तस्वीर हमें हँसाती है, पर साथ ही गंभीर सोच पर मजबूर भी करती है। क्या यह बदलाव आज़ादी का जश्न है, या रिश्तों का पतन? क्या तकनीक ने हमारे विकल्प बढ़ाए हैं, या भ्रम फैला दिया है? और सबसे अहम — अब जब कोई भागे, तो नाम पूछने से पहले बस इतना पूछिए — "उसका लास्ट सीन ऑन था या ऑफ?"

अभिव्यक्ति की आजादी के नाम पर उच्छृंखलता मंजूर नहीं !

आज का युग सोशल नेटवर्किंग साइट्स का युग है। या यूं कहें कि आज विज्ञान और तकनीक का युग है ।सच तो यह है कि हम एआइ चैटबाट के युग में सांस ले रहे हैं। हमारे देश में अभिव्यक्ति की आजादी सबको प्रदान की गई है, लेकिन पिछले कुछ समय से देश और समाज के कुछेक लोगों ने तकनीक और अभिव्यक्ति की आजादी का बहुत ही ग़लत उपयोग किया है। विशेषकर यू ट्यूबर्स-नैतिकता और मर्यादा को तांक पर रखकर कुछ भी ऊल-जुलूल इन माध्यमों पर बेरोकटोक परोस रहे हैं। यू-ट्यूबर्स और फेसबुक पर कंटेंट प्रस्तुतीकरण का तरीका बहुत ही अजीबोगरीब व ग़लत हो गया है। फेसबुक, यूट्यूब पर ज्यादा से ज्यादा लाइक्स, शेयर और कमेंट्स पाने के लिए यूट्यूबर्स और फेसबुक संचालक अपनी मर्यादाएं भूल रहें हैं और उन्हें समाज और देश से कोई भी सरोकार नहीं रहा है। यह ठीक है कि आज का जमाना टैक्नोलॉजी(तकनीक) का है, लेकिन सबसे बड़ा सवाल यह है कि इनके प्रस्तुतीकरण में मर्यादाएं, नैतिकता आखिर क्यों तार-तार हो रही हैं? नैतिकता, आदर्श और मूल्य नाम की तो जैसे आज कोई चीज़ बची ही नहीं है। अभिव्यक्ति की आजादी के नाम पर सार्वजनिक रूप से कुछ भी कह देना और बात-बात पर विवाद खड़े कर देना, क्या पत्रकारिता है ? कुछ लोग इसे 'बोल्डनेस'(साहस, स्पष्टतया) करार देते हैं, तो कुछ लोग इसे 'फ्रैंकली' अपनी बात रखना तक कहते हैं, लेकिन सार्वजनिक मंचों पर बात कहने या रखने का भी आखिर कोई तरीका होता है, मर्यादा होती है, नैतिकता होती है, मूल्य और आदर्श होते हैं। बहरहाल, यहां पाठकों को बताता चलूं कि जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में 22 अप्रैल 2025 को हमले के बाद भारत और पाकिस्तान के बीच सीमा पर तनातनी(युद्ध) के बाद इंटरनेट और न्यूज पर इन दिनों ट्रैवल यूट्यूबर ज्योति मल्होत्रा का नाम बहुत वायरल हो रहा है। गौरतलब है कि हरियाणा के हिसार की रहने वाली ज्योति को पुलिस और भारतीय सुरक्षा एजेंसियों द्वारा पाकिस्तानी जासूस होने के इल्जाम में गिरफ्तार किया गया है। यहां पाठकों को यह भी बताता चलूं कि हिसार की रहने वाली ज्योति अपने यूट्यूब चैनल(ट्रेवल विद जो) पर ट्रैवल वीडियोज बनाती हैं और उन्हें कुछ संदिग्ध पाकिस्तानी ऑफिशियल्स के साथ संबंधों को लेकर गिरफ्तार किया गया है। जानकारी के अनुसार ज्योति पर आरोप है कि अपने वीडियोज के अलावा, ज्योति इंडियन आर्मी से जुड़ी संवेदनशील जानकारी अपने पाकिस्तानी कॉन्टैक्ट्स तक पहुंचाती थीं तथा इसमें लोकेशन डिटेल्स भी शामिल होती थीं। यह भी जानकारी मिलती है कि ज्योति के यू-ट्यूब वीडियोज में भी पाकिस्तान को पॉजिटिव तरीके से प्रमोट किया गया है। खबरों के अनुसार ज्योति मल्होत्रा पाकिस्तान से वापस आने के बाद कश्मीर गई थीं और वहां पर रास्तों, रेलवे ट्रैक और अन्य चीजों के वीडियोज शेयर किए थे। यू-ट्यूब पर करियर बनाने वाली ज्योति व्यूज, लाइक्स और शेयर के चक्कर में साजिश का हिस्सा बन गई। दरअसल, वो भारत के खिलाफ आइएसआइ (पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी) की गहरी साजिश का हिस्सा हो गई। वह भारत के खिलाफ 'डिजिटल वॉर' में शामिल बताई जा रही है। शायद यही कारण है कि ज्योति की गिरफ्तारी के बाद अब भारत में उसके खिलाफ जांच जारी है और उसे रिमांड पर लिया गया है। दरअसल , जांच एजेंसियां यह जानना चाहती हैं कि ज्योति मल्होत्रा के पाकिस्तान दौरे पर जो खर्च हुए उसमें उसकी किसने मदद की ? सवाल उठना लाजिमी है, क्योंकि उसके पाकिस्तान दौरे पर बेहिसाब पैसे खर्च हुए जो उसकी आमदनी से ज्यादा थे। हालांकि, ज्योति मल्होत्रा के बारे में क्या सच है और क्या झूठ है, यह सब तो गहन जांच पड़ताल के बाद में ही सबके सामने आ पाएगा।बहरहाल, कहना ग़लत नहीं होगा कि आज यू-ट्यूबर्स देश की सुरक्षा की परवाह किए बगैर जानकारियां दूसरे देशों को साझा कर देते हैं और यह देश के लिए कभी भी एक बड़ा खतरा बन सकता है। बहरहाल, पाठकों को बताता चलूं कि भद्दे कमेंट्स (गाली-गलौज) तथा सैक्स संबंधी सवालों के उल्लेख को लेकर पिछले दिनों कुछ यू ट्यूबर्स के विरुद्ध मामले कोर्ट तक पहुंचे। आज विभिन्न यूट्यूबर्स सस्ती लोकप्रियता के चलते ऐसे ऐसे विडियो बेपरवाह पोस्ट कर देते हैं, जिनका कोई ठौर-ठिकाना तक नहीं होता। कंटेंट इतना अश्लील,भद्दा होता है कि क्या कहें ? व्यूज और लाइक्स के साथ पैसा कमाने के चक्कर में ऐसे यूट्यूबर्स देश की सुरक्षा तक से खिलवाड़ कर बैठते हैं,जो बहुत ही चिंतनीय विषय है। आज सच के नाम पर यू-ट्यूब पर झूठ का पुलिंदा परोसा जाता है,जिस पर कोई रोक-टोक नहीं दिखती। बवाल मचता है तो ऐसे कंटेंट को या तो सार्वजनिक मंचों से हटा लिया जाता है अथवा माफी मांगकर काम चला लिया जाता है, लेकिन क्या कंटेंट को हटा देना और माफी मांग लेना ही इसका सही हल कहा जा सकता है ? इस पर चिंतन-मनन की आवश्यकता है। सच तो यह है कि सच्ची खबर और फेक न्यूज तथा व्यूज में भी तो फर्क होता है। इन यू-ट्यूबरों के चैनलों पर आज न तो कंटेंट काम का मिलता है और न ही ये विश्वसनीयता और प्रामाणिकता पर ही खरे उतरते हैं। जो मन में आया, वही ऊल-जलूल कंटेंट सार्वजनिक मंचों पर जब चाहे डाल दिया जाता है। ख़बरें बतातीं हैं कि पाकिस्तान के लिए जासूसी के आरोप में गिरफ्तार ज्योति मल्होत्रा 3 बार पाकिस्तान जा चुकी है तथा उसने अपनी जम्मू-कश्मीर, उत्तराखंड यात्रा की व्यवस्था तथा बहुत सी जानकारियां दर्शकों के साथ साझा की हैं। ज्योति मल्होत्रा ही नहीं, पिछले दिनों से अन्य कई यूट्यूबर्स के नाम भी सामने आए हैं, जिन पर पाकिस्तान के लिए जासूसी करने के आरोप लगे हैं। बहरहाल, कहना ग़लत नहीं होगा कि आज यू-ट्यूबर्स ने स्वयं को लोकप्रियता के शिखर पर स्थापित करने के लिए नैतिकता, आदर्शों और मर्यादा का गला घोंट कर रख दिया है।रातों-रात स्टार बनने तथा पैसे कमाने की चाहत इन यू-ट्यूबरों को ऐसे गर्त में धकेल रही है, जो किसी भी लिहाज से, मसलन देश की सुरक्षा के लिहाज से, हमारे देश की सनातन संस्कृति और मूल्यों के लिए ठीक नहीं ठहराया जा सकता है। हमें यह बात अपने जेहन में रखनी चाहिए कि राष्ट्रीय सुरक्षा सबसे ऊपर है और राष्ट्र और समाज से बढ़कर कुछ भी नहीं। हमारे देश की संस्कृति की पूरे विश्व में आज भी खास पहचान है और हमारे मूल्यों और आदर्शों को आज पूरे विश्व में अनुशरण किया जाता है, ऐसे में जब हमारे यहां से ऐसे ऐसे कंटेंट सार्वजनिक मंचों पर परोसे जाएंगे तो हम दूसरों से भला क्या उम्मीद कर सकते हैं ? पाठक जानते हैं कि यू-ट्यूब और फेसबुक सार्वजनिक मंच हैं और आज संपूर्ण विश्व इन मंचों से जुड़ा हुआ है। कोई भी पोस्ट इन मंचों पर पोस्ट की जाती है तो उसके दूरगामी प्रभाव होते हैं, इसलिए यह बहुत ही जरूरी है कि इन मंचों पर प्रामाणिक और विश्वसनीय जानकारी ही पोस्ट की जाए और देश की सुरक्षा का हमेशा ध्यान रखा जाए। वास्तव में नैतिकता का दायरा कभी भी नहीं लांघा जाना चाहिए। अभिव्यक्ति की आजादी का यह मतलब तो कतई नहीं है कि कुछ भी ऊल-जुलूल बेरोकटोक परोस दिया जाए। आज ऐसा प्रतीत होता है कि कुछ यू ट्यूबर्स ने नकारात्मकता और अश्लील और भद्दे कंटेंट परोसने का जैसा ठेका ले रखा है। यह ठीक है कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता या वाक स्वतंत्रता किसी व्यक्ति या समुदाय द्वारा अपने मत और विचार को बिना प्रतिशोध, अभिवेचन या दंड के डर के प्रकट कर पाने की स्थिति होती है तथा भारतीय संविधान वाक-स्वतंत्रता और अभिव्यक्ति-स्वातंत्र्य की प्रत्याभूति देता है, लेकिन हमें यह याद रखना चाहिए कि इस स्वतंत्रता पर राज्य द्वारा युक्तियुक्त निर्बन्धन इन बातों के संबंध में लगाए जा सकते हैं (क) मानहानि, (ख) न्यायालय-अवमान, (ग) शिष्टाचार या सदाचार, (घ) राज्य की सुरक्षा, (ङ) विदेशी राज्यों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध, (च) अपराध-उद्दीपन, (छ) लोक व्यवस्था, (ज) भारत की प्रभुता और अखंडता(16वां संविधान संशोधन 1963 से जोड़ा गया) । बहरहाल, पाठक जानते होंगे कि

ध्रुव राठी हो, रणवीर इलाहबादिया हो या पूर्वा मखीजा हो, इन सबके मामले कहीं न कहीं अदालतों तक पहुंचें, क्यों कि नकारात्मक व ऊल-जलूल कंटेंट को परोसा गया। यह ठीक है कि आज तकनीक का युग है, लेकिन तकनीक का कभी भी ग़लत व नकारात्मक इस्तेमाल नहीं किया जाना चाहिए और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का भी। कहना ग़लत नहीं होगा कि अभिव्यक्ति की आजादी के नाम पर उच्छृंखलता हर हाल में नामंजूर है। हमें यह चाहिए कि हम हमारे देश के संवैधानिक और लोकतांत्रिक मूल्यों का पूरी तरह से ध्यान रखें। यहां पाठकों को बताता चलूं कि रणवीर इलाहाबादिया से जुड़े मामले में अश्लीलता के आरोपों पर भी सुप्रीम कोर्ट ने बेहद संतुलित लेकिन धारदार-सख्त टिप्पणी करते हुए यह स्पष्ट किया था कि न तो अश्लीलता के लिए कोई गुंजाइश छोड़ी जानी चाहिए और न ही इसे अभिव्यक्ति की आजादी की राह में आने देना चाहिए। गौरतलब है कि कुछ समय पहले रणवीर इलाहाबादिया को पॉडकास्ट जारी रखने की इजाजत देते हुए माननीय सुप्रीम कोर्ट ने यह भी कहा था कि वह नैतिकता और अश्लीलता की सीमा को लांघने की गलती न करें। बहरहाल, कहना ग़लत नहीं होगा कि किसी को भी अभिव्यक्ति की आजादी के नाम पर किसी की भावनाओं को आहत करने, देश और समाज से सौहार्द-सद्भावना को खण्डित करने, बेवजह नफरत, द्वेष एवं घृणा का माहौल बनाने का कोई भी अधिकार नहीं है। अभिव्यक्ति की आजादी की भी अपनी हद और सीमाएं हैं।एआइ चैटबाट और तकनीक के इस युग में नियमों, आदर्शों, हमारे सामाजिक प्रतिमानों और नैतिकता तथा मर्यादाओं का पालन बहुत ही जरूरी व आवश्यक है।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार, उत्तराखंड।

स्वार्थ की सिलवटें

चेहरों पर मुस्कानें हैं,
पर दिलों में दूरी है।
रिश्ते हैं बस नामों के,
हर सूरत जरूरी है।

हर एक 'कैसे हो' के पीछे,
छुपा होता है सवाल,
"तुमसे क्या हासिल होगा?",
नहीं दिखता कोई हाल।

ईमान यहाँ बोली में है,
नीलाम हर मज़बूरी है।
जो बिक न सका आज तलक,
कल उसकी मजबूरी है।

धर्म, जात, सियासत सब,
अब सौदों की भाषा हैं,
बिकते हैं आदर्श यहाँ,
जैसे रोज़ की आशा हैं।

माँ-बेटा, भाई-बहन,
अब संबंध नहीं भाव हैं,
वसीयत के दस्तख़त बनकर,
टूट गए जो चाव हैं।

जब तक मतलब चलता है,
तब तक 'तू मेरा अपना',
जैसे ही बोझ बने,
कहते हैं – "अब तू सपना।"

पर कहीं किसी कोने में,
अब भी कोई रोता है।
बिना मतलब, बिना चाहत,
किसी को बस खोता है।

शायद वहीं से जन्म होगा,
फिर से रिश्तों का मौसम,
जहाँ दिल से दिल मिलेंगे,
न हो कोई सौदा हरदम।

--- डॉ सत्यवान सौरभ

चकाचौंध में खोया युवा...!

डिजिटल युग की चकाचौंध में खोया युवा,
अनजानी दौड़ का हिस्सा,अब मांगो दुआ।
फॉलोअर्स, लाइक्स और पोस्ट्स की भूख,
अपनी असल पहचान से होता जो विमुख।
एक समय में पहचान होती थी जब आधार,
अदब,मेहनत व नैतिकता व्यक्तित्व विचार।

डिजिटल युग की चकाचौंध में खोया युवा,
अनजानी दौड़ का हिस्सा,अब मांगो दुआ।
एक ऐसी नींव जिसमें शामिल हर नए ट्रेंड,
सोशल मीडिया पर अनजान बनते हैं फ्रेंड।
यहाँ पीढ़ी खोजती रहें आत्मीयता का भाव,
डिजिटल युग में चलते हैं अपने-अपने दाँव।

संजय एम तराणेकर
(कवि, लेखक व समीक्षक)
इन्दौर-452011 (मध्यप्रदेश)

राज्य को मिलने वाले आवास अनुदान में 3485 करोड़ रुपये की कटौती

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : चुनाव के दौरान भाजपा नेताओं द्वारा किया गया वादा कि राज्य में कोई भी व्यक्ति कच्चे मकान में नहीं रहेगा तथा एक साल के भीतर सभी कच्चे मकानों को पक्का कर दिया जाएगा, अब धोखा बन गया है। राज्य में लाखों गरीब लोगों के सिर पर छत नहीं है; फानी से प्रभावित तटीय ओडिशा के हजारों परिवार अभी भी स्थायी घर की उम्मीद कर रहे हैं।इस समय, डबल इंजन सरकार द्वारा ओडिशा की जनता को धोखा देने का एक और उदाहरण सामने आया है। डबल इंजन सरकार पर राज्य को डबल अनुदान दिलाने के बजाय डबल छलावा करने का आरोप लगाया गया है। ओडिशा के लोगों को पूरी तरह से धोखा दिया गया है, खासकर ग्रामीण और शहरी आवास निर्माण के क्षेत्र में। भाजपा सरकार अब तक ओडिशा को तत्कालीन नवीन पटनायक सरकार के दौरान केंद्र से प्राप्त अनुदान का एक चौथाई से भी कम अनुदान दे पाई है। एक वर्ष में राज्य सरकार को अकेले 'आवास' योजना में 3,485 करोड़ रुपये की कमी प्राप्त हुई।

सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार प्रधानमंत्री आवास योजना राज्य के गरीब लोगों को मकान मुहैया कराती है। इसके लिए केंद्र सरकार अनुदान देती है और राज्य सरकार अपना हिस्सा देकर लोगों को घर मुहैया कराती है। तत्कालीन नवीन पटनायक सरकार के दौरान ओडिशा को वित्तीय वर्ष 2023-24 में केंद्र से 4,310 करोड़ रुपये का अनुदान मिला था। लेकिन भाजपा सरकार बनने के बाद वित्तीय वर्ष 2024-25 में यह अनुदान घटकर 825 करोड़ रुपये रह गया है। जो पिछले वर्ष के अनुदान से 25 प्रतिशत से भी कम बताया जा रहा है। एक ओर जहां पिछली सरकार द्वारा लागू की गई बीजू पक्का घर योजना बंद कर दी गई है, वहीं केंद्रीय वित्त पोषण में कटौती के कारण प्रधानमंत्री आवास भी उपलब्ध नहीं कराए जा रहे हैं। परिणामस्वरूप, ग्रामीण क्षेत्रों में कई गरीब लोग अभी भी कंक्रीट के मकानों के लिए सरकार की दया की उम्मीद करते हैं। आदिवासी बहुल क्षेत्रों के गरीब लोग और फानी से प्रभावित लोग भी 'आवास' की तलाश में निराश हो गए हैं। प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) से न केवल शहरी गरीब प्रभावित हुए हैं, बल्कि इस योजना से शहरी गरीब भी प्रभावित हुए हैं। पिछले वित्तीय वर्ष में ओडिशा को प्रधानमंत्री आवास (शहरी) योजना के अंतर्गत केवल 73 लाख रुपये प्राप्त हुए। बीजद सरकार के अंतिम वर्ष में ओडिशा को इस योजना के तहत 296 करोड़ रुपये का अनुदान मिला था, लेकिन भाजपा सरकार के प्रथम वर्ष में मात्र 73 लाख रुपये का केंद्रीय अनुदान मिलने से डबल इंजन सरकार की विकासपरक मानसिकता स्पष्ट हो गई है।

हाल ही में राज्य सरकार ने अंत्योदय गृह योजना लागू करने का निर्णय लिया है और अगले तीन वर्षों में इस योजना के तहत एक लाख घरों का निर्माण किया जाएगा, यह जानकारी राज्य के पंचायती राज एवं पेयजल मंत्री रवि नारायण नायक ने दी। इसके लिए इस वर्ष के बजट में 2600 करोड़ रुपये आवंटित किये गये हैं। लेकिन विडंबना यह है कि इस मकान को लेकर गांव में राजनीति शुरू हो गई है। सरकारी अधिकारी साफ मना कर देते हैं और कहते हैं कि सत्ताधारी पार्टी के विधायकों की संस्तुति के बिना यह मकान नहीं मिलेगा। एक ओर केंद्रीय अनुदान में कमी और दूसरी ओर सत्तारूढ़ पार्टी की छद्म राजनीति, राज्य के बेघर गरीबों के लिए समस्या बन गई है।

एमएससी रसायन विज्ञान के छात्र का शोध पत्र अंतरराष्ट्रीय जर्नल में प्रकाशित

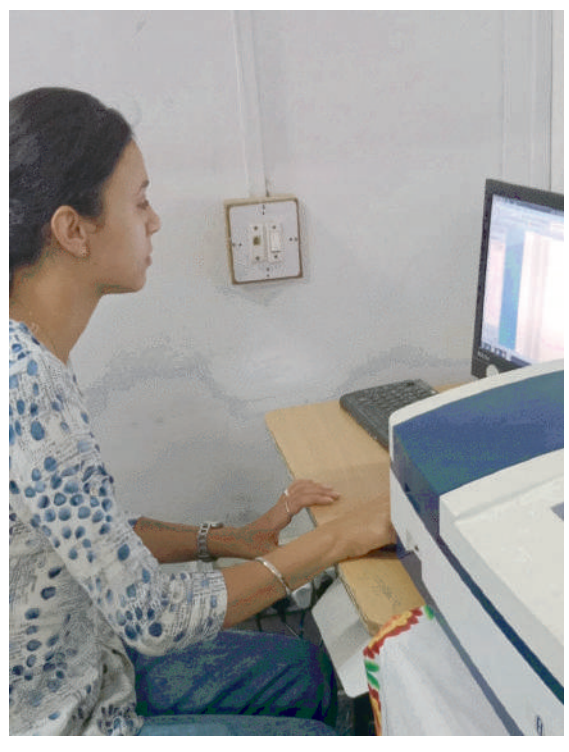

परिवहन विशेष अनूप कुमार शर्मा

भीलवाड़ा। संगम विश्वविद्यालय, भीलवाड़ा के रसायन विज्ञान विभाग में एम.एससी. अंतिम वर्ष के छात्रो आशना श्रृंगी, विवेक पारीक और तनिष्का द्वारा किए गए शोध कार्य को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिली है। उनका शोध पत्र "Green Synthesis of Zno Nanoparticles Using Leaves Extract of Quisqualis Indica (Madhumalti): Textile Effluent Treatment and their WQI Study" शीर्षक से एक प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय शोध पत्रिका में प्रकाशित हुआ है। इस शोध में ज़िंक ऑक्साइड नैनोपार्टिकल्स को ग्रीन संश्लेषण विधि (Green synthesis method) द्वारा तैयार किया गया, जिसमें पर्यावरण के अनुकूल तरीके से उच्च गुणवत्ता वाले नैनोकणों का निर्माण किया गया। ज़िंक ऑक्साइड नैनोपार्टिकल्स का उपयोग वस्त्र उद्योग के अपशिष्ट जल (टेक्सटाइल एफ्लुएंट) के शोधन में किया, जिसमें उन्हें अत्यंत सराहनीय सफलता प्राप्त हुई। शोध के अनुसार ज़िंक ऑक्साइड नैनोपार्टिकल्स में फोटोकैटलिटिक गुण होते हैं, जो सूर्य के प्रकाश अथवा यूवी लाइट की उपस्थिति में टेक्सटाइल अपशिष्ट जल में उपस्थित रंजक , कार्बनिक यौगिक तथा हानिकारक रसायनों को प्रभावी ढंग से नष्ट कर देते हैं।

शोध कार्य का निर्देशन विश्वविद्यालय के रसायन विज्ञान विभाग के सह - प्राध्यापक डॉ. पंकज सेन के मार्गदर्शन में हुआ। विश्वविद्यालय प्रशासन, विभागाध्यक्ष और संकाय सदस्यों ने इस उपलब्धि के लिए छात्रो को बधाई दी और इसे विश्वविद्यालय के लिए गौरव की बात बताया। यह उपलब्धि विद्यार्थियों को अनुसंधान के क्षेत्र में प्रेरणा देने वाली है और यह प्रमाणित करती है कि संगम विश्वविद्यालय के छात्र उच्च स्तर के वैज्ञानिक शोध में भी अपनी पहचान बना रहे हैं।

भ्रष्टाचार की रिपोर्टिंग करने वाले पत्रकार पर हमला करने के आरोप में पुलिस ने 4 लोगों को किया गिरफ्तार

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : पत्रकार विजय प्रधान को अमानवीय तरीके से बांधकर पीटने की घटना में पुलिस ने दो आरोपियों अविनाश दलाई और आदित्य जेना को गिरफ्तार कर लिया है। यह ज्ञात है कि इस परियोजना का मास्टरमाइंड गजेन्द्र दलाई अभी भी फरार है। चार दिन पहले पुइंतला थाना क्षेत्र के कुलथीपाली गांव में पत्रकार विजय प्रधान पर बदमाशों ने उस समय हमला कर दिया था, जब वे समाचार संकलन करने गए थे।पत्रकार विजय ने थाने में शिकायत की थी कि उन पर गजेंद्र दलाई और गजेंद्र के भतीजे अविनाश समेत गुंडों ने हमला किया और विजय के हाथ-पैर बांधकर उनकी पिटाई की। पुलिस ने दो लोगों को गिरफ्तार किया है। फेरारा निवासी ठेकेदार गजेन्द्र की शीघ्र गिरफ्तारी के लिए विभिन्न क्षेत्रों से मांग उठ रही है।

ऐसी खबरें थीं कि बलांगीर जिले के पुइंतला पुलिस स्टेशन के अंतर्गत कुलथीपाली गांव में एक सड़क निर्माण परियोजना में व्यापक भ्रष्टाचार की खबर फैलाने पर एक ठेकेदार की एक गुंडे ने कथित तौर पर पिटाई कर दी। बलांगीर के पत्रकारों ने शनिवार को एसपी कार्यालय जाकर मांग पत्र सौंपा और संबंधित ठेकेदार के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग की। रविवार दोपहर को पत्रकार गांव में गए और सड़कों का वीडियो बनाया, जिसमें लोगों की हरकतें कैद की गईं।

जब वह फीडबैक ले रहे थे, तो प्रोजेक्ट पर काम कर रहे कुछ लोग आए और उन्हें रोक दिया। इसके बाद ठेकेदार द्वारा भेजे गए गुंडों ने उन पर हमला कर दिया। यहां तक कि उन्होंने एक मीडिया प्रतिनिधि के हाथ बांध दिए और उसे घोड़े पर बैठाकर पूरे गांव में घसीटा। वहां, गांव की सड़कों पर सार्वजनिक रूप से उनकी बेरहमी से पिटाई की गई। उन्होंने गांव में कंगारू अदालत लगाई और उसे शारीरिक और मानसिक रूप से प्रताड़ित किया।

उन्होंने एसपी के खिलाफ मानसिक रूप से प्रताड़ित करने की लिखित शिकायत दर्ज कराई है। बताया जाता है कि गुंडों ने पत्रकार को स्थानीय मंदिर के बारे में रिपोर्टिंग न करने की कसम खाने पर मजबूर किया। पुइंतला पुलिस स्टेशन पर आरोप लगाया गया है कि गुंडों ने पत्रकार और उसके परिवार के सदस्यों को जान से मारने की धमकी दी। अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक आलोक जेना ने मांग पत्र प्राप्त किया और बताया कि पुलिस कार्रवाई शुरू कर दी गई है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095 . newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी .आर .बी . एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। **RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023**